कोयलांचल संवाद

हिंदी दैनिक

रांची व धनबाद से एक साथ प्रकाशित

रांची, शुक्रवार, 20 सितंबर, 2024 वर्ष : 12 अंक : 128 www.koylanchalsamvad.com

YouTube Subscribe Koylanchal sambad news

सत्यमेव जयते

झारखण्ड सरकार GOVERNMENT OF JHARKHAND

धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की पावन धरती पर

श्रीमती द्रौपदी मुर्मु

भारत की माननीय राष्ट्रपति

का हार्दिक अभिनंदन और जोहार

20 सितम्बर, 2024

श्रीमती द्रौपदी मुर्मु
माननीय राष्ट्रपति

श्री हेमन्त सोरेन
माननीय मुख्यमंत्री, झारखण्ड

श्री संतोष कुमार गंगवार
माननीय राज्यपाल, झारखण्ड

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, झारखण्ड सरकार

PR No. **336217** (IPRD) **2024-25**

फंदे से लटकता मिला युवक का शव

गोपालगंज. गोपालगंज के हथुआ थाना क्षेत्र के हमथुआ गोपाल मंदिर के पीछे स्थित बगीचे में पेड़ से लटकता हुआ एक युवक का शव पुलिस ने बरामद किया है। बरामद शव के बाद पुलिस एफएसएल के टीम को सूचना देकर मामले की जांच में जुट गई है। मृतक की पहचान हथुआ थाना क्षेत्र के मनिछापर गांव निवासी व्यास मुनि प्रसाद के बेटे दीपू कुमार(22) के रूप में की गई है। बताया जा रहा है, कि मृतक गुरुवार की अहले सुबह वह घर से बाहर निकल कर गोपाल मंदिर के पीछे बगीचे में गया और आम के पेड़ में रस्सी के फंदा बनाकर फांसी लगा कर आत्महत्या कर लिया। वहीं काफी देर तक जब वह घर पर दिखाई नहीं दिया तब परिजनों ने उसकी खोजबीन शुरू कर दी। इसी बीच कुछ लोगों ने बताया की वो बगीचे की तरफ गए थे, जहां उसका शव लटकते हुए देख कर शोर मचाने लगे। वहीं घटना की सूचना मिलते ही हथुआ थाना की पुलिस मौके पर पहुंची और शव को फंदे से नीचे उतारा गया। सूचना मिलने के बाद एफ एस एल की टीम भी मौके पर पहुंची और पड़ताल शुरू करते हुए कुछ साक्ष्य को इकट्ठा कर जब्त कर लिया। हथुआ थानाध्यक्ष विकास कुमार ने बताया कि एक युवक का शव फांसी के फंदे से बरामद किया है, मामले की जांच की जा रही है। एफएसएल की टीम को भी बुलाई गई है।

जीविका दीदियों ने किया मुफस्सिल थाना का घेराव

बक्सर. बक्सर जिला स्थित मुफस्सिल थाना का गुरुवार की दोपहर अपनी मांगो को लेकर प्रदर्शन कर रही जीविका दीदियों द्वारा घेराव किया गया। अपनी मांगो को लेकर जीविका सेंटरो पर किए गए तालाबंदी को तोड़ने से नाराजगी थी। जीविका दीदियों का कहना था की मुफस्सिल थाना के सहयोग से डीपीएम ने सीएलएफ का ताला तुड़वाया है। अगर ताला खुलवाना ही था तो पुलिस को हमें सूचना देना चाहिए। मुफस्सिल थानाध्यक्ष द्वारा सभी को समझा बुझाकर शांत करा थाना से वापस भेजा गया। जीविका सीएम रंभा देवी द्वारा बताया गया कि अपनी मांगो को लेकर आदित्य सीएलएफ और आदर्श सीएलएफ में ताला लगाई थी। क्योंकि हमलोग धरना पर हैं। हमलोगो को पेमेंट नहीं मिलता है। जब ताला हमलोग लगवा दिए तो बीपीएम मैडम द्वारा थाना में रिपोर्ट दर्ज करा दिया गया है। इसके साथ ही मुफस्सिल थाना के पुरुष और महिला पुलिस ने अखौरीपुर गोला स्थित सीएलएफ कार्यालय पर लगा ताला तोड़ दिया गया। जो हमलोग बंद किए थे। आखिर बिना हमलोगों को सूचना दिए ताला क्यों तोड़ा गया। हमको बुलाना चाहिए था। इस संबंध में मुफस्सिल थानाध्यक्ष अरविंद कुमार द्वारा बताया गया कि जीविका दीदियों पर कोई एफआइआर नहीं हुआ है। थाना पर सब पहुंची थी। जिन्हें समझा बूझाकर वापस किया गया है। अगर कोई आवेदन देती है तो पुलिस द्वारा आगे की करवाई की जाएगी। बता दें कि जीविका दीदी पूरे बिहार भर में वेतनमान,पहचान पत्र,मेडिकल आदि 10 सूत्री मांगो को लेकर धरना प्रदर्शन कर रही हैं। जिले के चौसा प्रखंड में भी जीविका दीदी द्वारा अपनी मांगो को लेकर धरना प्रदर्शन करते हुए सेंटर पर तालाबंदी किया गया था। जिसे तोड़ दिया गया है। जिसको लेकर नाराजगी है।

बेगूसराय में दिनदहाड़े बेखौफ बदमाशों ने व्यक्ति को मारी गोलीः घटना में चाचा-भतीजा घायल

बेगूसराय. बेगूसराय में बेखौफ बदमाशों ने गुरुवार दिनदहाड़े चाचा और भतीजा को गोली मारकर घायल कर दिया। गोली लगने से चाचा गंभीर रूप से घायल हो गए। जबकि भतीजा गोली के बारूद से घायल हो गया है। घटना नगर थाना क्षेत्र के नौलखा मंदिर के पास की है। घायल युवक की पहचान मुफस्सिल थाना क्षेत्र के कैथमा वार्ड नंबर-19 निवासी रामगुलाम सिंह के बेटे राजू सिंह के रूप में हुई है। जबकि, दूसरा युवक शंकर सिंह का बेटा ओम प्रकाश है। गोली लगने से घायल युवक को गंभीर हालत में शहर के निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सूचना मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया है। घटना की सूचना मिलते ही सदर-वन DSP सुबोध कुमार के नेतृत्व में नगर थाना और मुफस्सिल थाना पुलिस मौके पर पहुंचकर मामले की जांच पड़ताल कर रही है। बताया जाता है कि आर्म्स एक्ट मामले में 15 दिन से जेल में बंद शंकर सिंह और धीरज को खाना देने ओमप्रकाश अपने चाचा राजू सिंह के साथ जा रहा था। उसी दौरान नौलखा मंदिर के पास एक बाइक पर सवार दो बदमाशों ने घटना को अंजाम दिया है। परिजनों ने बताया कि घटना को अंजाम देने वाले और उनके परिवार के बीच जमीन का विवाद चल रहा है। पहले भी जमीन विवाद में हमला करने का प्रयास किया गया था। इस बार गोली मारकर घायल कर दिया गया है।

पटना सिटी में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के खिलाफ प्रदर्शनःसिख समुदाय के लोगों ने फूंका पुतला

पटना. पटना सिटी में सिख समुदाय के लोगों ने कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया। अमेरिका यात्रा के दौरान कांग्रेस नेता ने सिख समुदाय के पगड़ी और कृपाण को लेकर बयान दिया था। जिस पर लोगों ने कड़ी आपत्ति जताई है। बयान के विरोध में मार्च निकाला। नगर परिक्रमा के बाद पटना सिटी चौक के पास राहुल गांधी का पुतला फूंका और जमकर नारेबाजी की। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि पगड़ी हमारे समाज की आन, बान और शान है। जो इसके खिलाफ गलत बयान देंगे, उन्हें बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। राहुल गांधी का बयान काफी दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्हें माफी मांगनी चाहिए। बता दें, राहुल गांधी ने अमेरिका यात्रा के दौरान सिखों पर बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि भारत में लड़ाई इस बात की है। क्या भारत में एक सिख को पगड़ी पहनने की इजाजत दी जाएगी, कड़ा पहनने की इजाजत दी जाएगी। यह सिर्फ सिखों को लेकर नहीं, बल्कि सभी धर्मों को लेकर है।

औरंगाबाद में 2 दिन बाद भी नहीं मिला मासूम

औरंगाबाद. औरंगाबाद में 2 दिन पहले मंगलवार को अंबा देव रोड स्थित बटाने नदी के पास बने ऑप्शनल पुल पार करने के दौरान एक बाइक पर सवार 2 शिशु, 2 महिला समेत 5 लोग नदी की तेज धार में बाइक के साथ बह गए थे। इसमें 3 लोगों को घटना के कुछ देर बाद ग्रामीणों की सहयोग से सुरक्षित निकाल लिया गया था। गुरुवार की शाम में एक महिला का शव बरामद कर लिया गया है। जबकि उसके साथ रहे 1 साल के मासूम का अभी भी पता नहीं चल सका है। शव का शिनाख्त गोह थाना क्षेत्र के दधपी गांव निवासी संतोष पाल की पत्नी प्रियंका देवी(25) के रूप में की गई है। उक्त महिला का शव घटनास्थल से लगभग 2 किलोमीटर दूर चिल्हकी बिगहा गांव के पास बटाने नदी से की गई है। गुरुवार की दोपहर उक्त गांव के कुछ लोग नदी की ओर गए तो नदी में झाड़ी में फंसे शव को देखा। इसकी सूचना पुलिस को दी गई।

भोजपुर में तेलहर नदी में डूबने से युवक की मौत

आरा(भोजपुर). भोजपुर के इमादपुर थाना क्षेत्र के बिहटा गांव स्थित तेलहर नदी में गुरुवार को डूबने से चाची के दाह-संस्कार में गए भतीजे की मौत हो गई। घटना को लेकर लोगों के बीच अफरा-तफरी मची रही। जानकारी के अनुसार मृतक इमादपुर थाना क्षेत्र के बिहटा गांव निवासी छेदी राम का बेटा नन्हक डोम(40) है। वह पेशे से मजदूर था। इधर, मृतक के चचेरे भाई ने बताया कि बुधवार की शाम उसकी मां सोनी देवी की मौत हो गई थी। उसी का दाह-संस्कार करने के लिए सभी लोग बिहटा गांव स्थित तेलहर नदी के किनारे गए थे। जहां दाह-संस्कार करने के बाद जब उसका चचेरा भाई नन्हक डोम तेलहर नदी में स्नान करने गया। तभी पानी अधिक गहरा होने के कारण वह उसमें डूब गया। जिससे उसकी मौत हो गई।

सिमुलतला विद्यालय के डीएम ने किया निरीक्षण

जमुई. जमुई की नव पदस्थापित डीएम अभिलाषा शर्मा सिमुलतला आवासीय विद्यालय का निरीक्षण किया। डीएम अभिलाषा शर्मा सबसे पहले विद्यालय के ऑफिस पहुंचकर विद्यालय के प्रभारी प्रिंसिपल सुनील कुमार से आवासीय विद्यालय के बारे में जानकारी लिए। इस दौरान डीएम ने विद्यालय के एक एक वर्ग कक्ष और लेब को बारी बारी से देखी। डीएम ने सिमुलतला विधायक के छात्र छात्राओं से लगभग एक घंटा तक बातचीत भी किया। डीएम अभिलाषा शर्मा ने बताया कि मैं आठ सालों से बिहार में कार्य कर रही हूं। लेकिन इस आवासीय विद्यालय में छात्राओं द्वारा जो स्वागत गान गया वह बहुत ही सुंदर था। जब से मैं ज्वॉइन की हूं तब से ही सिमुलतला आवासीय विद्यालय आने की इच्छा थी। यहां आकर देखा कि बच्चे किस तरह से पठन-पाठन कर रहे हैं और क्या आवश्यकता है। यहां के बच्चे बहुत हीं काबिल है।

पूर्व एमएलसी के घर मिला 1 करोड़ से ज्यादा कैशः नोट गिनने की मशीन मंगवाई गई; मनोरमा देवी के ठिकानों समेत बिहार में 5 जगह एनआईए रेड

गया. बिहार के 5 लोकेशन पर एनआईए ने रेड की है। इनमें से 3 गया में है। गया में पूर्व एमएलसी मनोरमा देवी के घर और प्लांट पर एनआईए की टीम ने दबिश की है। एपी कॉलोनी स्थित जदयू की पूर्व एमएलसी मनोरमा देवी के आवास पर भी सुबह 4 बजे छापेमारी शुरू हुई। घर से एक करोड़ से ज्यादा कैश मिलने की खबर है। जांच एजेंसी ने नोट गिनने की मशीन मंगवाई है। मशीन के साथ एसबीआई के चीफ मैनेजर शशिकांत भी पहुंचे हैं। उनसे बात करने की कोशिश की गई, लेकिन उन्होंने कुछ भी बताने से इनकार कर दिया। घर से 8 लाइसेंसी हथियार भी मिले हैं। हथियार जिनके नाम पर उन्हें सत्यापन के लिए बुलाया गया है। घर के अंदर किसी को जाने की इजाजत नहीं है। घर में मौजूद लोगों से पूछताछ जारी है। जिला पुलिस के सहयोग से एनआईए ने कार्रवाई की है। घर के साथ ही

उनके बोधगया में जानपुर गांव के पास स्थित प्लांट में भी छापेमारी हुई है। इसके अलावा बांके बाजार में भी एनआईए की टीम छापेमारी कर रही है। मनोरमा देवी के दिवंगत पति बिंदेश्वरी यादव जिला पार्षद अध्यक्ष थे। उनके खिलाफ नक्सल गतिविधि और साठगांठ का केस था। नक्सलियों को कारतूस सप्लाई करने के आरोप में बिंदेश्वरी यादव की गिरफ्तारी भी हुई थी। उनकी गाड़ी से ही सैकड़ों की संख्या में कारतूस बरामद हुए थे। तब इनके खिलाफ देशद्रोह का केस भी दर्ज किया गया था। आज की कार्रवाई भी नक्सल कनेक्शन तलाशने को लेकर होने की खबर है। पूछताछ पूर्व एमएलसी और घर के सदस्यों से की जा रही है। बता दें कि मनोरमा देवी का बड़ा बेटा रॉकी यादव देश के चर्चित रोडरेज गोली कांड का मुख्य आरोपी रहा है। हालांकि, हाईकोर्ट ने साक्ष्य के अभाव में उसे बरी कर दिया था।

लाइसेंस किसी और का इस्तेमाल कर रहे हैं मनोरमा देवी के गार्ड

मनोरमा देवी के घर में बरामद 8 लाइसेंसी हथियार के सत्यापन के लिए बाहरी लोगों को बुलाया गया है। बाहरी लोग वो हैं जिनके नाम से हथियार का लाइसेंस है। लेकिन, वे हथियार मनोरमा देवी के घर से मिले थे और उनके निजी अंगरक्षक उन हथियारों का इस्तेमाल सुरक्षा के लिए करते हैं। इन में से एक संजय सिंह को मनोरमा देवी के घर में एनआईए ने बुलाया है। उनसे पूछताछ की जा रही है।

गया में 3 जगह एनआईए की रेड

पूर्व एमएलसी मनोरमा देवी के घर के अलावा उनके प्लांट पर रेड की कार्रवाई चल रही है। प्लांट बोधगया में जानपुर गांव के पास है। इसके अलावा बांके बाजार में भी एनआईए की टीम छापेमारी कर रही है। बांकेबाजार में द्वारिका यादव के प्लांट पर छापेमारी चल रही है। द्वारिका यादव का कनेक्शन मनोरमा देवी का है। बताया जा रहा है कि द्वारिका का प्लांट मूल रूप से मनोरमा देवी का ही है। द्वारिका उसकी देख रेख करते हैं। इधर पूर्व एमएलसी मनोरमा देवी के घर एनआईए रेड से संबंधित सवाल पूछने पर मंत्री शीला मंडल ने पल्ला झाड़ा। शीला मंडल ने कहा कि हमारी सरकार न किसी को फंसाती है और न ही किसी को बचाती है। जिस मामले को लेकर छापेमारी हो रही उनके बारे में सब जानते हैं। जो गलत करेगा कार्रवाई तो होगी ही।

दो लड़कों से एनआईए ने की थी पूछताछ

सूत्रों का कहना है कि बीते दिनों टेकारी पुलिस अनुमंडल क्षेत्र में एनआईए की रेड पड़ी थी। इसमें दो लड़कों से पूछताछ हुई थी। उन लड़कों ने जदयू नेता मनोरमा देवी के नाम का खुलासा किया था। उन लड़कों का नक्सली कनेक्शन जांच में उजागर हुआ था। एनआईए ने दोनों लड़कों को विशेष रूप से पूछताछ के लिए दिल्ली बुलाया था। न्यूज एजेंसी एएनआई के मुताबिक औरंगाबाद से नक्सल गतिविधि को लेकर इनपुट मिला था। मामले तो लेकर पुलिस ने 7 अगस्त 2023 को केस दर्ज किया था। बाद में मामले को एनआईए ने टेकओवर कर लिया था, तब सितंबर 2023 में फिर से केस दर्ज किया गया था। इसमें सफेदपोशों के नक्सली गतिविधि में शामिल होने की जानकारी मिली थी।

104.4 ग्राम ब्राउन शुगर के साथ 2 तस्कर गिरफ्तार

किशनगंज (बिहार). किशनगंज में एसएसबी के जवानों को गुप्त सूचना मिली कि दिघलबैंक अंतर्गत धनतोला के आस पास अवैध मादक पदार्थों की तस्करी की जानी है। गुप्त सूचना मिलने के बाद 19वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल के कमांडेंट स्वर्ण जीत शर्मा के निर्देश अनुसार एसएसबी के जवानों ने एक टीम गठित किया। गठित टीम के द्वारा नशीले पदार्थों की तस्करी करने वाले लोगों पर कड़ी नजर रखने के क्रम में भारत-नेपाल सीमा स्तंभ संख्या 128 से लगभग 600 मीटर की दूरी (भारत की ओर) धनतोला अंतर्गत स्थित शिव मंदिर के समीप दो व्यक्तियों से पूछताछ की गई। जहां संदेह होने पर दोनों की तलाशी लेने पर उनके पास से मादक पदार्थ बरामद हुआ है। मादक पदार्थ की पहचान ब्राउन शुगर के रूप में हुई है। जिसकी कुल मात्रा 104.04 ग्राम मापी गई है। जिसके बाद एसएसबी के जवानों ने दो बाइक और ब्राउन शुगर के साथ दोनों को गिरफ्तार कर लिया

है। पूछताछ करने पर तस्करों ने अपना नाम कलीमुद्दीन के बेटे शहनवाज़ शाह (24) और अनवर उल हक के बेटे मो. सद्दाम हुसैन अंसारी (28) के रूप में हुई है। दोनों ही तस्कर बहादुरगंज थाना क्षेत्र के लोहागाड़ा निवासी है। इन तस्करों के पास से जब्त ब्राउन शुगर को वो लोग अवैध रूप से भारत से नेपाल लेकर जा रहे थे। वहीं मादक पदार्थ तस्करी का यह एक संदिग्ध मामला होने के कारण तस्करों को आवश्यक कागजी कार्रवाई करने के बाद गुरुवार को दिघलबैंक थाना को सौंप दिया गया है।

रेप-हत्या के आरोप में प्रदर्शन, पुलिस ने किया लाठीचार्जःसमस्तीपुर में एक महिला समेत 6 हिरासत में; तीन दिन पहले नाबालिग की मिली थी लाश

समस्तीपुर. समस्तीपुर में गुरुवार को नाबालिग लड़की (14) से रेप और हत्या के विरोध पर प्रदर्शन कर रहे लोगों पर पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया। इसमें 6 लोग घायल हुए हैं। वहीं, एक महिला समेत 6 लोगों को हिरासत में लिया गया है। दरअसल, तीन दिन पहले शोभन गांव में एक नाबालिग की लाश मिली थी। गांव के लोगों का कहना है कि उसकी रेप के बाद हत्या कर दी गई है। प्रदर्शन कर रहे लोगों का आरोप है कि लड़की की हत्या में पुल निर्माण से जुड़े ठेकेदार और मजदूरों का हाथ है। इसके बावजूद पुलिस इस मामले में अब-तक कोई कार्रवाई नहीं की है। जिसके बाद प्रदर्शनकारियों ने शहर के हॉस्पिटल गोलंबर के पास सड़क जाम कर दिया। लोग दोषियों को फांसी देने की मांग पर अड़े थे। जिसके बाद पुलिस उन्हें समझाने पहुंची थी। पुलिस ने आक्रोशित लोगों

को शांत कराने का प्रयास किया, लेकिन वे लोग नहीं माने। जिसके बाद पुलिस ने बल का प्रयोग किया। पुलिस के मुताबिक, इस मामले में अब तक रेप की पुष्टि नहीं हुई है। प्रदर्शन कर रहे लोगों का आरोप है कि जितवारपुर राजघाट के पास पुल का निर्माण चल रहा है। तीन दिन पहले एक लड़की रात के करीब 2 बजे घर से गायब हो गई। लड़की मंद बुद्धि बताई जा रही है। लोगों का आरोप है कि लड़की को पुल निर्माण कंपनी के रास्ते जाते देखा गया था। उसे रात में दो-तीन कर्मी खदेड़ते हुए भी दिखे गए थे। लोगों को शक है कि नाबालिग से रेप के बाद उसकी हत्या कर दी गई और फिर उसके शव को बूढी गंडक नदी में फेंक दिया गया। बता दें कि लड़की का शव खानपुर थाना क्षेत्र के शोभन गांव के पास मिला था। पुलिस ने शव को जब्त कर सदर अस्पताल में पोस्टमॉर्टम कराया है। आरोप है कि घटना के तीन दिन बीतने के बाद भी अब-तक पुल निर्माण से जुड़े किसी भी कर्मी या ठेकेदार से पूछताछ नहीं की गई है। किसी को गिरफ्तार भी नहीं किया गया है। इस कारण लोगों में आक्रोश बढ़ गया। गांव के लोग बैनर लेकर दोषी को फांसी देने और मुफस्सिल थाना अध्यक्ष पर कार्रवाई करने की मांग कर रहे थे। इसी को लेकर पूरे शहर में विरोध मार्च निकाला गया और हॉस्पिटल गोलंबर को जाम कर दिया। जाम के कारण सड़क के दोनों और वाहनों की लंबी कतार लग गई।

जमुई विधायक श्रेयसी सिंह ने किया रक्तदानःकहा- साल में तीन बार अवश्य करें ब्लड डोनेट, सेवा पखवाड़ा के तहत लगाया गया शिविर

जमुई. जमुई में बीजेपी जनता युवा मोर्चा के द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में 19 सितंबर को सेवा पखवाड़ा के तहत रक्तदान शिविर लगाया गया। मौके पर बीजेपी के जमुई विधायक श्रेयसी सिंह ने गुरुवार को सदर अस्पताल में लगाए गए शिविर में पहुंचकर रक्तदान की। विधायक ने कहा कि रक्तदान महादान है। सभी लोगों को करना चाहिए। इस मौके पर बड़ी संख्या में भारतीय जनता पार्टी के युवा मोर्चा कार्यकर्ता मौजूद थे। रक्तदान शिविर के तहत सदर अस्पताल के ब्लड बैंक में बीजेपी युवा कार्यकर्ताओं ने रक्तदान किया। जमुई विधायक श्रेयसी ने कहा कि

प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर हर साल 17 सितंबर से सेवा पखवाड़ा की शुरुआत की जाती है। सेवा पखवाड़ा के तहत देशभर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया है। यह कार्यक्रम मुख्य रूप से भारतीय जनता पार्टी के युवा मोर्चा द्वारा आयोजित किया गया है। लेकिन तमाम भाजपा कार्यकर्ता आज सदर अस्पताल जमुई पहुंचे हैं। जहां हमलोग रक्तदान कर जिम्मेदार नागरिक होने की भूमिका निभा सके। उन्होंने कहा कि रक्तदान महादान है। जिस तरह पीएम नरेंद्र मोदी सामाजिक कार्यों और अच्छी सोच को बढ़ावा दे रहे हैं। उसमें हमलोग साथ दे सकें। जमुई के लोगों से अपील की है कि तीन-चार महीने के अंतराल में साल में तीन बार ब्लड डोनेट जरूर करें। ब्लड डोनेट को बढ़ावा देने के लिए स्वयं रक्तदान भी किया। ब्लड डोनेट को लेकर कोई लक्ष्य नहीं है। जो लोग स्वेच्छा और श्रद्धा से ब्लड डोनेट करना चाहते हैं। शिविर लगा हुआ है। वे ब्लड डोनेट कर सकते हैं। आने वाले समय में सेवा पखवाड़ा के तहत और भी कई सामाजिक काम किए जाएंगे।

सेवा पखवाड़ा के तहत निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजनः संक्रामक बीमारियों के बढ़ते प्रभाव को लेकर लगा कैंप; लोगों को मिला मुफ्त चिकित्सीय परामर्श

पूर्णिया. पूर्णिया में गुरुवार को सेवा पखवाड़ा के तहत निशुल्क स्वास्थ्य सेवा शिविर लगाया गया। कैंप का आयोजन पूर्णिया पूर्व प्रखंड के महाराजपुर पंचायत स्थित मनरेगा भवन में किया गया। जहां सैकड़ों ग्रामीण स्वास्थ्य जांच कराने पहुंचे। डायरिया जैसे संक्रामक बीमारी के बढ़ते मामले को देखते हुए भाजपा नेता नूतन गुप्ता की ओर से फ्री मेडिकल कैंप का आयोजन किया गया। जहां शिविर में पहुंचने वाले लोगों को चिकित्सकों की ओर से न सिर्फ मुफ्त चिकित्सीय परामर्श दी गई। बल्कि स्वास्थ्य जांच के बाद मुफ्त में दवाइयां भी बांटी गई। कैंप शाम 6 बजे तक चला।

मौसम के बेरुखी और बेतहाशा पड़ती गर्मी के मामले को देखते हुए महाराजपुर पंचायत में लगाए गए फ्री मेडिकल कैंप में सैकड़ों लोग अपनी स्वास्थ्य समस्याएं लिए पहुंचे। शिविर में मौजूद चिकित्सकों ने बारी-बारी से लोगों की स्वास्थ्य समस्याएं सुनी। निशुल्क चिकित्सीय परामर्श और स्वास्थ्य जांच के बाद दवाइयां दी गई। वहीं, इससे पहले फीता काटकर भाजपा नेता नूतन गुप्ता ने स्वास्थ्य सेवा शिविर का उद्घाटन किया। इसमें बड़ी तादाद में महिला, पुरुष, बच्चे , बुजुर्ग और नौजवान स्वास्थ्य जांच कराने पहुंचे। फ्री मेडिकल कैंप को लेकर भाजपा नेता नूतन गुप्ता ने कहा कि देश के चहेते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन को लेकर देशभर में सेवा पखवाड़ा के तहत कई तरह के सामाजिक जनकल्याण से जुड़े आयोजन कराए जा रहे हैं। इसी कड़ी में भीषण गर्मी के कारण संक्रामक बीमारियों के बढ़ने का खतरा बढ़ गया है। डायरिया और दस्त जैसी बीमारियों के मामले बढ़ रहे हैं। इसी को देखते हुए पूर्व प्रखंड के महाराजपुर पंचायत स्थित मनरेगा भवन में उनकी ओर से निशुल्क सेवा शिविर का आयोजन किया गया है। इसमें शहर के 4 प्रसिद्ध चिकित्सक, दर्जनों मेडिकल और नर्सिंग स्टाफ, फार्मासिस्ट अपनी सेवा दे रहे हैं। ये स्वास्थ्य सेवा शिविर पूरी तरह निशुल्क है।

3 लोगों को गोली लगी, भीड़ वीडियो बनाती रही

सुपौल. सुपौल में गुरुवार को बदमाशों ने एक ही परिवार को तीन लोगों को गोली मार दी। तीनों घायल हालात में 10 मिनट तक सड़क किनारे बैठे रहे। इस दौरान भीड़ वीडियो बनाती रही। तब तक किसी ने उनकी मदद नहीं की। घटना की सूचना मिलने के बाद स्थानीय लोगों के साथ साथ पुलिस मौके पर पहुंची। आनन फानन में तीनों को एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया, जहां उनका इलाज चल रहा है। पिपरा थाने की पुलिस ने बताया कि भूमि विवाद में गोलीबारी की घटना हुई है। घायलों की पहचान जदिया थाना क्षेत्र के खुट गांव निवासी महेन्द्र साह (80) उनका छोटा भाई जोगेंद्र साह(65) और बेटा ललन साह (35) के रूप में हुई है। तीनों कोर्ट से वापस लौट रहे थे। इसी दौरान बदमाशों ने उन पर फायरिंग कर दी। घायल महेंद्र साह बताया ने कि गांव के ही नारायण साह से जमीन विवाद चल रहा है। इसको लेकर कोर्ट में केस भी चल रहा है। इस केस की आज तारीख थी, जिसमें हम, छोटा भाई और बेटा तीनों घर से बाइक पर सवार होकर पहुंचे थे। कोर्ट में हाजिर होकर वापस लौट रहे थे। इसी दौरान पिपरा थाना क्षेत्र के कटैया थूमहा के बीच नारायण साह 10 लोगों के साथ पहुंचे और गोलीबारी शुरू कर दी। पिपरा थानाध्यक्ष अमित कुमार ने कहा कि दो पक्षों में भूमि विवाद का मामला है। तीनों घायल सुपौल कोर्ट से वापस लौट रहे थे। इसी दौरान उनपर गोलीबारी की गई है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच जांच में जुटी है। जांच के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

स्कूल वैन ने स्कूटी सवार दंपत्ति को रौंदा...पत्नी की मौतःगोपालगंज के बथुआ बाजार के पास हुआ हादसा, पुलिस ने वाहन को किया जब्त

गोपालगंज. गोपालगंज के फुलवरिया थाना क्षेत्र के बथुआ बाजार के पास अनियंत्रित स्कूल वैन ने स्कूटी सवार दंपत्ति को रौंद दिया। इस हादसे में स्कूटी सवार महिला की मौके पर ही मौत हो गई जबकि उसका पति बुरी तरह जख्मी हो गया। स्थानीय लोगों के मदद से जख्मी को तत्काल इलाज के लिए स्थानीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए गोपालगंज सदर अस्पताल भेज दिया और पूरे मामले की जांच में जुट गई है। मृतका की पहचान उचकागांव थाना क्षेत्र के जगरनाथा गांव निवासी सोहन साह

की पत्नी उर्मिला देवी(57) के रूप में हुई है। घटना के संदर्भ में बताया जा रहा है की मृतका अपने पति के साथ स्कूटी पर सवार होकर ननद के घर गई थी। वापस लौटने के दौरान जैसे ही वह बथुआ बाजार के पास पहुंची ही थे की एक अनियंत्रित स्कूल वैन ने उनके स्कूटी में पीछे से जोरदार धक्का मार दिया। जिससे स्कूटी सहित दोनों दंपत्ति मौके पर ही गिर गए। जबतक दोनों उठ पाते तब तक स्कूल वैन ने महिला के ऊपर चढ़ा दिया, जिससे उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई। वहीं उसका पति दूर सड़क किनारे जा गिरा, जिससे वह जख्मी हो गया। स्थानीय लोगों ने जख्मी व्यक्ति को तत्काल स्थानीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया। जबकि इसकी सूचना फुलवरिया थाना को दी गई। सूचना मिलने के बाद मौके पर अपर थानाध्यक्ष विक्रम कुमार अपने दल बल के साथ पहुंचे और शव को लेकर सदर अस्पताल पहुंच गए। फुलवरिया थानाध्यक्ष विक्रम कुमार ने बताया कि सड़क हादसे महिला की मौत हुई है। शव का पोस्टमार्टम कराया जा रहा है। वाहन को जब्त कर लिया गया है। आगे की कार्रवाई की जा रही है।

आईपीएस शिवदीप लांडे का इस्तीफा, कहा-बिहार में ही रहूंगाःयही मेरी कर्म भूमि; 2015 में दुपट्टा ओढ़कर यूपी पुलिस इंस्पेक्टर को घूस लेते पकड़ा था

पटना. बिहार कैडर के आईपीएस शिवदीप लांडे ने पद से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने इसकी घोषणा सोशल मीडिया पर की है। 2 हफ्ते पहले ही उन्हें तिरहुत रेंज से हटाकर पूर्णिया आईजी बनाया गया था। आईजी बनाए जाने के 2 हफ्ते बाद ही उन्होंने पद से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने फेसबुक पर लिखा- 'मेरे प्रिय बिहार, पिछले 18 वर्षों से सरकारी पद पर अपनी सेवा प्रदान करने के बाद आज मैंने इस पद से इस्तीफा दे दिया है। इन सभी वर्षों में मैंने बिहार को खुद से और अपने परिवार से भी ऊपर माना है।अगर मेरे बतौर सरकारी सेवक के कार्यकाल में कोई त्रुटि हुई हो तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूं । मैंने आज भारतीय

पुलिस सर्विस (आईपीएस) से त्यागपत्र दिया है परन्तु मैं बिहार में ही रहूंगा और आगे भी बिहार मेरी कर्मभूमि रहेगी। जय हिन्द।' तिरहुत जैसे बड़े इलाके से पूर्णिया भेजे जाने पर उनकी नाराजगी की बात चर्चा में थी। अब दो हफ्ते बाद उनका इस्तीफा सामने आ गया है। कुछ दिन पहले ही लेडी सिंघम के नाम से चर्चित आईपीएस अधिकारी काम्या मिश्रा ने भी निजी कारणों से इस्तीफा सौंप दिया था। बीते 52 दिनों में बिहार में लगातार दूसरे आईपीएस ने इस्तीफा दिया है। इससे पहले 6 अगस्त को आईपीएस काम्या मिश्रा ने इस्तीफा दिया था। नौकरी छोड़ने की वजह उन्होंने निजी कारण बताया था। काम्या मिश्रा बिहार कैडर की 2019 बैच की आईपीएस ऑफिसर थी। गुरुवार दोपहर सोशल मीडिया पर आईपीएस शिवदीप लांडे ने जब अपने इस्तीफे की बात कही तो पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया। वर्दी में तिरंगे को सलामी देते हुए तस्वीर शेयर करते हुए आईपीएस शिवदीप लांडे ने लिखा - मैंने बिहार को ख़ुद से और अपने परिवार से भी ऊपर माना है। आज भारतीय पुलिस सर्विस (आईपीएस) से त्यागपत्र दिया है परन्तु मैं बिहार में ही रहूंगा और आगे भी बिहार मेरी कर्मभूमि रहेगी। ऐसे में यह कहना गलत नहीं होगा कि वह बिहार में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव के चुनावी जंग में किस्मत आजमाएंगे। बिहार के हर जिले में उनकी बड़ी फैन फॉलोइंग है। ऐसे में वो अगर किसी दल के साथ राजनीति में उतरते हैं तो यूथ आइकॉन के रूप में उसे फायदा निश्चित मिलेगा। लोकसभा चुनाव से पहले भी असम कैडर के आईपीएस और 2011 बैच के अधिकारी आनंद मिश्रा ने इस्तीफा दिया था। उन्होंने बक्सर से चुनाव भी लड़ा, लेकिन हार गए। शिवदीप लांडे 2006 बैच के भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी रहे हैं। लांडे मूल रूप से महाराष्ट्र के रहने वाले हैं। बिहार कैडर में रहने के दौरान उन्होंने बिहार के पटना, अररिया, पूर्णिया और मुंगेर जिलों में बतौर एसपी रह चुके हैं। पटना सेंट्रल के एसपी के रूप में वे काफी लोकप्रिय थे। शिवदीप की शादी महाराष्ट्र के मंत्री विजय शिवतारे की बेटी ममता से 2 फरवरी 2014 को हुई। उनकी एक बेटी भी है। शिवदीप लांडे की बिहार में पहली नियुक्ति मुंगेर के नक्सल प्रभावित जमालपुर में हुई थी। पटना में अपने कार्यकाल के दौरान अपनी कार्यशैली के कारण शिवदीप फेमस हुए थे।

कोयलांचल संवाद

हिंदी दैनिक

रांची व धनबाद से एक साथ प्रकाशित

रांची, शुक्रवार, 20 सितंबर, 2024 वर्ष : 12 अंक : 128

YouTube Subscribe Koylanchal samvad news

www.koylanchalsamvad.com

भाजपा के हरियाणा चुनाव संकल्प पत्र में 20 वादे:अग्निवीर को... | पत्रवार के इस दौर में कोई पिछड़ तो नहीं रहा | हरी खाद का करें प्रयोग, मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ाएं | मूल्य : 2 रुपए

संक्षिप्त खबरें

बरकाकाना ट्रिपल मर्डर मामला: आरपीएफ जवान रहे पवन की फांसी की सजा को हाईकोर्ट ने 25 साल की कैद में बदला

रांचीः रामगढ़ जिले के बरकाकाना रेलवे कॉलोनी में घुसकर 17 अगस्त 2019 की रात परिवार के तीन लोगों की गोली मारकर हत्या व दो लोगों को जख्मी करने मामले में फांसी की सजा पाए अभियुक्त पवन कुमार सिंह की सजा के खिलाफ क्रिमिनल अपील एवं राज्य सरकार द्वारा फांसी को कंफर्म करने वाली याचिका पर झारखंड हाई कोर्ट ने फैसला सुनाया है. हाई कोर्ट की खंडपीठ ने पवन कुमार सिंह की फांसी की सजा के खिलाफ अपील को खारिज कर दिया. साथ ही खंडपीठ ने रामगढ़ की निचली अदालत द्वारा उसे सुनाए गए फांसी की सजा को 25 साल की कैद में बदल दिया. खंडपीठ ने सरकार की ओर से पवन कुमार सिंह को फांसी की सजा को कंफर्म करने की याचिका को भी खारिज कर दिया.

जेएसएससी-सीजीएल पेपर लीक मामले में दानापुर से दो गिरफ्तार

रांचीः झारखंड कर्मचारी चयन आयोग (जेएसएससी) की सीजीएल (कंबाइंड ग्रेजुएट) पेपर लीक मामले में पुलिस ने बिहार के दानापुर से दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है. गिरफ्तार आरोपियों के नाम वीरेंद्र कुमार शर्मा और शंकेश हैं. रांची से दानापुर पहुंची पुलिस की स्पेशल टीम ने बिहार पुलिस के सहयोग से इन दोनों को शनिचरा स्थान में छापेमारी करके गिरफ्तार किया है. रांची पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि इन दोनों को ट्रांजिट रिमांड पर लेकर पूछताछ की जाएगी. इस मामले में जुलाई महीने में बिहार के आरा से अमन सिंह नामक शख्स को गिरफ्तार किया गया था. उसके पास से कई परीक्षार्थियों के एडमिट कार्ड, पेपर उपलब्ध कराने के एवज में मनी ट्रांजैक्शन के साक्ष्य, लैपटॉप और मोबाइल बरामद किए गए थे. अमन सिंह से पूछताछ में दानापुर में छिपे दो आरोपियों के बारे में सुराग मिले थे.

पत्नी-बच्ची हत्याकांड में सिविल कोर्ट ने दी थी फांसी की सजा, हाईकोर्ट ने किया बरी

रांची : झारखंड हाईकोर्ट ने आनंद कुमार दांगी को उसकी पत्नी और बच्चे की हत्या के जुर्म से बरी कर दिया है. आनंद कुमार दांगी को हजारीबाग सिविल कोर्ट ने पत्नी और बच्चे की हत्या में दोषी पाते हुए सितंबर 2023 में फांसी की सजा सुनाई थी. सिविल कोर्ट के फैसले के खिलाफ आनंद कुमार दांगी ने हाईकोर्ट में अपील दायर की थी. मामले की सुनवाई के दौरान अदालत ने साक्ष्य के अभाव में आनंद कुमार दांगी को बरी कर दिया. दरअसल साल 2018 में अंगिरा कुमारी के पिता ने चौपारण थाना में आनंद के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई थी. जिसमें यह आरोप लगाया गया था कि आनंद दांगी ने अपनी गर्भवती पत्नी अंगिरा कुमारी और एक साल की बेटी को पहले धारदार हथियार से काटकर हत्या की और इसके बाद साक्ष्य मिटाने के लिए उनके शवों को कुएं में फेंक दिया.

कडरू तालाब में डूबकर नाबालिग की मौत, आक्रोशितों ने सड़क जाम की

रांची : अरगोड़ा थाना क्षेत्र स्थित कडरू तालाब में गुरुवार को डूबकर एक नाबालिग की मौत हो गयी. उसकी पहचान 14 वर्षीय इरशाद के रूप में हुई है. घटना के संबंध में बताया जा रहा है कि इरशाद गुरुवार को नहाने के लिए कडरू तालाब गया था, इसी दौरान वह गहरे पानी में चला गया और पानी में डूब गया. सूचना मिलते ही आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और अपने स्तर पर इरशाद को बचाने की कोशिश की. लेकिन वो उसे बचा नहीं सके. घटना के बाद आक्रोशितों ने दोपहर में हज हाउस के पास सड़क जाम कर दी. जिसकी वजह से अरगोड़ा चौक से डोरंडा आने-जाने वाले लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा. जाम में स्कूली बसें भी फंसी है. सड़क जाम की सूचना पर मौके पर अरगोड़ा थाना की पुलिस पहुंची है और स्थानीय लोगों को समझाने का प्रयास कर रही है.

दुष्कर्म के दोषी को 10 वर्ष सश्रम कारावास

रांचीः रांची सिविल कोर्ट ने दुष्कर्म के दोषी विनोद राम को 10 वर्ष सश्रम कारावास की सजा सुनाई है. इसके साथ ही अदालत ने उस पर 10 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया गया है. सिविल कोर्ट के अपर न्यायायुक्त (7) विशाल श्रीवास्तव की अदालत ने गुरुवार को सजा का एलान किया. दुष्कर्म की घटना को रांची के एयरपोर्ट थाना अंतर्गत ओबरिया नायक टोला में अंजाम दिया गया था. घटना 26 मार्च 2020 की है.पीड़िता के द्वारा दर्ज करवाई गई प्राथमिकी के मुताबिक, जब वह धान कुटाने मील गई थी, तब विनोद उसे बहला-फुलसा कर तालाब के किनारे लीची बागान की ओर ले गया और उसके साथ जबरन शारीरिक संबंध बनाया. उसके बाद विनोद ने पीड़िता को धमकी दी कि घटना की जानकारी किसी को देने पर उसे जान से मार देगा.

हमारा मकसद ना सिर्फ आपकी समस्याओं का समाधान करना है, बल्कि विकास में आपकी भागीदारी भी सुनिश्चित करनी है: सीएम

मुख्यमंत्री ने कहा- हम आपको इतना सशक्त बनाएंगे कि किसी के आगे हाथ फैलाने की जरूरत नहीं होगी

रांची । मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने गढ़वा जिला अंतर्गत मेराल में आयोजित "आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार " कार्यक्रम में गढ़वा एवं लातेहार जिले को लगभग 1197 करोड़ 62 लाख रुपए की 748 योजनाओं की सौगात दी। मुख्यमंत्री ने दोनों जिलों के 2 लाख 22 हज़ार 228 लाभुकों के सशक्तिकरण की दिशा में बढ़ाया कदम, लगभग 206 करोड़ रुपए की परिसंपत्तियां बांटी। मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा कि आज आपके चेहरे की खुशी यह बता रही है कि हमारी जन कल्याणकारी योजनाएं आपको कितनी पसंद आ रही है । हमारा मकसद ना सिर्फ आपकी समस्याओं का समाधान करना है, बल्कि विकास में आपकी भागीदारी भी सुनिश्चित करनी है। इस कड़ी में "आपकी योजना- आपकी सरकार- आपके द्वार" एक मजबूत और बेहद कारगर कार्यक्रम साबित हो रहा है। मुख्यमंत्री श्री हेमन्त सोरेन आज गढ़वा जिला अंतर्गत मेराल प्रखंड स्थित दुलदुलवा पंचायत में आयोजित "आपकी योजना- आपकी सरकार- आपके द्वार" कार्यक्रम को संबोधित करते हुए झारखंड के नवनिर्माण की प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने इस बात पर जोर देते हुए कहा कि उनकी सरकार रांची हेडक्वार्टर से नहीं बल्कि गांव और देहात से चल रही है ताकि सरकार और जनता के बीच सीधा संपर्क बना रहे।

आपसे सीधा संवाद हो, इसलिए जिला और पंचायतों में लगने वाले शिविरों में हो रहा हूं शामिल

मुख्यमंत्री ने कहा कि "आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार" कार्यक्रम के तहत गांव -पंचायत एवं टोला- मोहल्ला में विशेष शिविर

लगाए जा रहे हैं । बीडीओ- सीओ जैसे जिन अधिकारियों को आपने कभी देखा नहीं, वे आपके दरवाजे पर आकर सरकार की योजनाओं से आपको जोड़ने का काम कर रहे हैं। मैं भी विभिन्न जिलों में आयोजित हो रहे विशेष शिविरों में लगातार शामिल हो रहा हूं, ताकि आपके साथ सीधा संवाद करने के साथ सरकार की योजनाओं की हकीकत को जान सकूं। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार हर कदम पर आपकी साथ खड़ी है। चाहे कोविड का वह भयावह दौर हो या आज पूरे मान- सम्मान के साथ आपको हक- अधिकार देने की बात। सरकार हर मोर्चे पर आपको आगे बढ़ाने का प्रयास कर रही है। मैं आपको भरोसा दिलाता हूं कि अगले 5 वर्षों में हर घर में हर वर्ष एक लाख रुपया पहुंचाएंगे। हम आपको इतना सशक्त बनाएंगे कि किसी के आगे हाथ फैलाने की जरूरत नहीं होगी। बस जिस तरह आप हमारा सहयोग करते आ रहे हैं, आगे भी अपना आशीर्वाद बनाए रखें, ताकि आपके लिए और मजबूती के साथ काम करने की ताकत हमें मिले।

आधी आबादी को दे रहे हैं सम्मान

मुख्यमंत्री ने कहा कि नारी सशक्तिकरण हमारी प्रतिबद्धता है। इस कड़ी में झारखंड मुख्यमंत्री मंइयाँ सम्मान योजना के माध्यम से हम आधी आबादी को मान- सम्मान देने का काम कर रहे हैं। आज 18 वर्ष से 50 वर्ष तक की लगभग 50 लाख माताओं और बहन -बेटियों को हर महीने एक हज़ार रुपए समान राशि दे रहे हैं । इनके खाते में दूसरी किस्त की भी राशि भेजी जा चुकी है। मैं आपको भरोसा दिलाना चाहता हूं कि यह योजना निरंतर चलेगी, ताकि इस राज्य की बहन- बेटियों को सशक्त बनाने की दिशा में और मजबूती के साथ आगे बढ़ सकें।

किसानों को वैकल्पिक खेती के लिए कर रहे हैं प्रोत्साहित

मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों की आय में बढ़ोतरी के लिए सरकार कई योजनाएं लेकर आई है। इस कड़ी में बिरसा हरित ग्राम योजना,दीदी -बाड़ी योजना, नीलांबर- पीतांबर जल समृद्धि योजना जैसी योजनाओं से जुड़ने के लिए किसानों को प्रोत्साहित कर रहे हैं ताकि वे वैकल्पिक खेती के लिए आगे आएं, ताकि उनकी आय में बढ़ोतरी कर सकें। मुख्यमंत्री ने कहा कि कोई भी राज्य तभी आगे बढ़ेगा, जब समाज में किसी तरह का कोई बिखराव नहीं होगा। सभी मिल- जुलकर रहेंगे और समाज तथा राज्य के विकास में अपना योगदान देंगे । मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आपको दिग्भ्रमित कर समाज को जो तोड़ना चाह रहे हैं, उससे ना सिर्फ सतर्क तथा सावधान रहें बल्कि करारा जवाब भी दें।

सरकार की नीतियों, निर्णयों और उपलब्धियों से कराया अवगत

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के आदिवासी -मूलवासी, दलित, पिछड़ा, गरीब, बूढ़े-बुजुर्ग, महिला, नौजवान और बच्चे बच्चियों को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं। आज कोई भी बूढ़ा -बुजुर्ग बिना पेंशन के नहीं है। 50 लाख महिलाओं को सम्मान राशि मिल रहा है ।बच्चियों को पढ़ाने की जिम्मेदारी सरकार उठा रही है। युवाओं को सरकारी नौकरी और स्वरोजगार से जोड़ने की दिशा में लगातार काम हो रहा है । नौकरियों में स्थानियों की बहाली हो रही है। गुरुजी क्रेडिट कार्ड योजना के तहत विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए 15 लाख रुपए तक का शिक्षा लोन दिया जा रहा है। सभी कोटि के सरकारी कर्मियों की समस्याओं तथा मांगों को पूरा कर उनका मनोबल बढ़ा रहे हैं। राज्य के 20 लाख गरीबों को अबुआ आवास दे रहे हैं । राज्य के छात्रावासों का जीर्णोद्धार हो रहा है, जहां विद्यार्थियों को मुफ्त भोजन की व्यवस्था की जा रही है । किसानों के दो लाख रुपए तक के लोन माफ कर दिए गए हैं । बिजली उपभोक्ताओं को 200 यूनिट मुफ्त बिजली के साथ बकाया बिल माफ कर दिया गया है। हमारी सरकार की ऐसी अनेकों योजनाएं हैं, जिनके मार्फत राज्य के हर वर्ग और तबके को सशक्त बना रहे हैं

लाभुकों के बीच बांटी गई परिसंपत्ति

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर गढ़वा एवं लातेहार जिले को लगभग 1197 करोड़ 62 लाख रुपए की 748 योजनाओं का तोहफा दिया। इसमें गढ़वा जिला अंतर्गत 732 करोड़ 50 लाख 37 हज़ार 800 रूपए की 113 योजनाओं का शिलान्यास तथा 260 करोड़ 92 लाख 61 हज़ार रुपए की 22 योजनाओं का उद्घाटन शामिल है। जबकि लातेहार जिले में 109 करोड़ 22 लाख 16 हज़ार 368 रूपए की 144 योजनाओं का शिलान्यास एवं 94 करोड़ 98 लाख 22 हज़ार 924 रुपए की 469 योजनाओं का उद्घाटन संपन्न हुआ। इस अवसर पर गढ़वा जिले के 25044 लाभुकों के बीच 38 करोड़ 94 लाख 15 हज़ार 800 रुपए एवं लातेहार जिले के 197184 लाभुकों के बीच 167 करोड़ 14 लाख 6 हजार 904 रुपए की परिसंपत्तियां बांटी गई। मुख्यमंत्री ने इस कार्यक्रम में लातेहार जिले के लिए 54 अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र सौंपा। कार्यक्रम में मंत्री श्री सत्यानन्द भोक्ता, मंत्री श्री मिथिलेश कुमार ठाकुर, विधायक श्री रामचंद्र सिंह, जिला परिषद अध्यक्ष श्रीमती शांति देवी, पलामू प्रमण्डल के आयुक्त श्री बाल किशुन मुंडा, पुलिस उप महानिरीक्षक श्री वाई एस रमेश तथा गढ़वा एवं लातेहार जिले के उपायुक्त तथा पुलिस अधीक्षक समेत अन्य पदाधिकारी मौजूद थे।

आईसीएआर के कार्यक्रम में शामिल होने रांची पहुंचीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

राज्यपाल और सीएम ने किया राष्ट्रपति का स्वागत

रांची : धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की पावन भूमि झारखंड आगमन पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु का बिरसा मुंडा हवाई अड्डा, रांची परिसर में स्वागत एवं अभिनंदन राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार एवं मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने किया. इन्होंने गुलदस्ता एवं अंगवस्त्र देकर राष्ट्रपति का अभिनंदन किया. यहां बता दें कि राष्ट्रपति 20 सितंबर को रांची के नामकुम स्थित इंडियन कौंसिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च (आईसीएआर) के कार्यक्रम में शामिल होंगी. राष्ट्रपति का काफिला जिस मार्ग से गुजरेगा, वहां पर तीन लेयर की सुरक्षा रहेगी. राष्ट्रपति की सुरक्षा में छह आईपीएस के अलावा 10 डीएसपी, 25 इंस्पेक्टर, 20 दारोगा, दो हजार से अधिक अतिरिक्त जवानों की तैनाती की गई है. साथ ही सुरक्षा में बम निरोधक दस्ता, जैप, आईआरबी, रैफ और जगुआर की टीम को भी तैनात किया गया. कार्यक्रम स्थल के आसपास अवैध पार्किंग वर्जित रहेगा. कार्यक्रम स्थल में सिर्फ पास युक्त लोगों को ही प्रवेश करने दिया जाएगा.

झारखंड पुलिस और भारतीय स्टेट बैंक के बीच सैलरी पैकेज को लेकर हुआ एमओयू

रांची : झारखण्ड पुलिस और भारतीय स्टेट बैंक के बीच पुलिस सैलरी पैकेज के लिए एमओयू पर हस्ताक्षर किया गया. इस एमओयू में पुलिस महानिदेशक, झारखण्ड की ओर से मो० नौशाद आलम, पुलिस उप महानिरीक्षक, बजट, झारखण्ड तथा भारतीय स्टेट बैंक की ओर से देवेश मित्तल, उप महाप्रबंधक, आंचलिक कार्यालय, रांची ने हस्ताक्षर कर एक दूसरे को एमओयू के दस्तावेज सौंपे. 21.08.2023 को पुलिस महानिदेशक, झारखण्ड की पहल पर झारखण्ड पुलिस एवं भारतीय स्टेट बैंक के बीच पुलिस सैलरी पैकेज के लिए एमओयू हुआ था, जिसके तहत पुलिस सैलेरी पैकेज से पुलिस कर्मियों को कई सुविधाएं उपलब्ध करायी गयी थीं. डीजीपी अनुराग गुप्ता के निर्देशन तथा आरके मल्लिक, अपर पुलिस महानिदेशक, मुख्यालय एवं मनोज कौशिक, पुलिस महानिरीक्षक, मुख्यालय के प्रयास से आज पुलिस मुख्यालय स्थित सभागार में झारखण्ड पुलिस एवं भारतीय स्टेट बैंक के बीच पूर्व में किये गये एमओयू के द्वारा दिये गये सुविधाओं की समीक्षा करते हुये पुलिस पदाधिकारी एवं पुलिसकर्मियों के हित में नये सिरे से एमओयू किया गया.

एमओयू में पुलिस को दी जानेवाली सुविधाएं

▪ व्यक्तिगत दुर्घटना मृत्यु बीमा 01 करोड़ ▪ स्थायी पूर्ण विकलांगता पर- 1 करोड़ ▪ स्थायी आंशिक विकलांगता पर 80 लाख तक ▪ वायुयान दुर्घटना पर 01 करोड़ 60 लाख ▪ नक्सल हिंसा/उग्रवादियों एवं अपराधियों द्वारा घात लगा कर किये गये हमलों में शहीदों के आश्रित को अतिरिक्त 10 लाख रुपये का प्रावधान किया गया है साथ ही 10 लाख तक ऋण माफी की सुविधा दी जा रही है. ▪ पहली बार झारखण्ड पुलिस एवं भारतीय स्टेट बैंक के बीच सामान्य मृत्यु पर भी 10 लाख व्यक्तिगत दुर्घटना में मृत्यु होने पर आश्रित बच्चों के उच्चतर शिक्षा के लिये बीमा राशि 10 लाख तथा अविवाहित बच्चियों के विवाह के लिए भी बीमा राशि अधिकतम 10 लाख दिये जाने का प्रावधान है. ▪ स्वैच्छिक 'मेडिकल सुपर टॉप-अप' सुविधा, जिसमें परिवार के चार सदस्यों के लिए सिर्फ 2495 रुपये में 30 लाख रुपये तथा 1995 रुपये में 15 लाख रुपये का एक और वैकल्पिक सुविधा उपलब्ध कराई गयी है. ▪ भारतीय स्टेट बैंक की ओर से सभी पुलिस कर्मियों को रुपे प्लेटिनम कार्ड उपलब्ध कराया जाएगा, जिसके तहत दुर्घटना आदि में मौत होने पर 10 लाख रुपये का अतिरिक्त बीमा कवर उपलब्ध होगा. यह सभी विशेष बीमा सुविधाएं भारतीय स्टेट बैंक के द्वारा पुलिस सैलेरी पैकेज के तहत खाता धारक को निःशुल्क उपलब्ध करायी जायेंगी. ▪ पुलिस कर्मियों के परिवार के चार सदस्यों को निःशुल्क खाता, चेक बुक, एटीएम कार्ड एवं उन चारों वयस्क सदस्यों का 05-05 लाख रुपये, कुल 20 लाख रुपये के बीमा का प्रावधान किया गया है.

वीर शहीद सिद्धो कान्हू को नमन कर भाजपा की परिवर्तन यात्रा का 20 सितंबर को शुभारंभ करेंगे केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह

रांची। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह वीर शहीद सिद्धो कान्हू को नमन कर भाजपा की परिवर्तन यात्रा का शुभारंभ 20 सितंबर को करेंगे। परिवर्तन यात्रा 20 सितंबर से शुरू होकर 2 अक्टूबर तक चलेगी। भाजपा परिवर्तन यात्रा के संयोजक एवं राज्यसभा सांसद दीपक प्रकाश ने बताया कि 20 सितंबर से दो प्रमंडल में परिवर्तन यात्रा की शुरुआत होगी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह साहिबगंज के पुलिस लाइन मैदान से सुबह 11 बजे संथाल परगना प्रमंडल के परिवर्तन यात्रा का शुभारंभ करेंगे। इससे पहले श्री शाह भोगनाडीह में वीर सिद्धो कान्हू की प्रतिमा पर माल्यार्पण करेंगे एवं उन्हें श्रद्धांजलि देंगे। प्रकाश ने बताया कि धनबाद प्रमंडल की परिवर्तन यात्रा का शुभारंभ गिरिडीह जिले के जमुआ के झारखंडी धाम मैदान से दोपहर 3:00 बजे केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह करेंगे। इससे पहले वे झारखंड धाम

में शिव मंदिर का दर्शन करेंगे एवं वहां पूजा अर्चना करेंगे। प्रकाश ने बताया कि प्रदेश भाजपा अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी के नेतृत्व में यह यात्रा पूरे राज्य में 200 से अधिक प्रखंडों से गुजरते हुए 5400 किलोमीटर की दूरी तय करेगी। यात्रा सभी 81 विधानसभा क्षेत्र से गुजरेगी। यात्रा में 80 स्वागत कार्यक्रम, 65 सार्वजनिक रैली होगी, जिसमें राष्ट्रीय और प्रदेश के 50 से अधिक प्रमुख नेता शामिल होंगे। प्रकाश ने कहा कि पिछले लगभग 5 वर्षों से झारखंड की ठगबंधन सरकार ने राज्य के स्वाभिमान, अस्मिता और पहचान को चोट पहुंचाया है। झारखंड के लोगों की पहचान ईमानदारी, सच्चाई और परिश्रम से है। हेमंत सरकार ने देश और दुनिया में झारखंड को बदनाम कर दिया है। झारखंड की पहचान लूट खसोट, भ्रष्टाचार, नोटो के पहाड़ से हो गई है। उन्होंने कहा कि हेमंत सरकार ने केवल खान, खनिज, जमीन को ही नहीं लूटा, बल्कि केंद्र सरकार की नल जल योजना सहित अन्य कल्याणकारी योजनाओं को भी भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ा दी। राज्य सरकार के इस कदम से आम लोग तबाह हो गए हैं। प्रकाश ने कहा कि यह सरकार बांग्लादेशी और रोहिंग्या घुसपैठियों की संरक्षक बन गई है। घुसपैठियों के कारण राज्य की डेमोग्राफी में अप्रत्याशित बदलाव आया है। आदिवासी आबादी तेजी से घटी और मुस्लिम आबादी तेजी से बढ़ी है। परिवर्तन यात्रा के माध्यम से जनता हेमंत सोरेन जवाब दो, 5 साल का हिसाब दो के नारों के साथ भाजपा और आम जनता जवाब मांगेगी। राज्य की युवा शक्ति, महिला शक्ति राज्य में परिवर्तन के लिए संकल्पित है। उन्होंने कहा कि राज्य में 1800 एकड़ से अधिक जमीन का फर्जीवाड़ा हुआ है। सीएनटी एक्ट का उल्लंघन करते हुए 3000 करोड़ से अधिक रुपए का लेनदेन हुआ है। इसके तार कोलकाता तक जुड़े हैं। परिवर्तन यात्रा के प्रदेश संयोजक सांसद दीपक प्रकाश ने कहा कि परिवर्तन यात्रा सत्ता परिवर्तन के साथ व्यवस्था परिवर्तन के लिए है। यह यात्रा राज्य की साढ़े तीन करोड़ जनता की जन भावनाओं की अभिव्यक्ति है। उन्होंने कहा कि जनता ने भ्रष्ट कांग्रेस, झामुमो और राजद गठबंधन को सत्ता से बाहर करने का मन बना लिया है। प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी जी के नेतृत्व में यह यात्रा राज्य में मिल का पत्थर साबित होगी।

परिवर्तन यात्रा का कार्यक्रम

पलामू प्रमंडल की परिवर्तन यात्रा 21 सितंबर को बंशीधर नगर से प्रारंभ होगी और 28 सितंबर को संपन्न होगी। हजारीबाग प्रमंडल की यात्रा 21 सितंबर से इटखोरी स्थित भद्रकाली मंदिर से प्रारंभ होगी और 28 सितंबर को संपन्न होगी। दक्षिण छोटानगपुर प्रमंडल की यात्रा खूंटी स्थित आम्रेश्वर धाम से 23 सितंबर से प्रारंभ होगी और 1अक्टूबर को संपन्न होगी। संथाल परगना प्रमंडल की यात्रा 20 सितंबर को भोगनाडीह से प्रारंभ होकर 30 सितंबर को संपन्न होगी। धनबाद प्रमंडल की यात्रा झारखंडी धाम से 20 सितंबर को प्रारंभ होगी और 26 सितंबर को संपन्न होगी। कोल्हान प्रमंडल की परिवर्तन यात्रा चित्तेश्वर धाम बहरागोड़ा से 23 सितंबर को प्रारंभ होगी और 2 अक्टूबर को संपन्न होगी।

झारखंड के चाईबासा में नक्सलियों ने किया आईईडी ब्लास्ट, एक जवान घायल

चाईबासाः झारखंड के चाईबासा में नक्सलियों ने एक बार फिर बड़ी घटना को अंजाम दिया है. गुरुवार की सुबह 7.20 बजे सारंडा जंगल के इलाके में आईईडी ब्लास्ट की चपेट में आने से एक 209 कोबरा बटालियन का जवान घायल हो गया है. उन्हें एयरलिफ्ट कर रांची लाया जा रहा है. जहां उनका इलाज राज अस्पताल में चलेगा. मामला छोटानागरा थाना क्षेत्र के बाबुडेरा की है. पश्चिमी सिंहभूम के एसपी आशुतोष शेखर ने घटना की पुष्टि की है. नक्सलियों के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान के दौरान ये घटना हुई है. दरअसल पुलिस को ये सूचना मिली थी कि प्रतिबंधित संगठन भाकपा माओवादियों के शीर्ष नेता मिसिर बेसरा अपने दस्ते के सदस्यों के साथ कोल्हान के सारंडा जंगल के क्षेत्र में भ्रमणशील है. इसके बाद सुरक्षा बलों के जवानों ने छोटानागरा और जराईकेला के सीमावर्ती वाले जंगल में संयुक्त अभियान चलाया. जंगल में माओवादियों ने नक्सलियों को नुकसान पहुंचाने के उद्देश्य से पहले ही आईईडी लगा रखा था. जिसकी चपेट में आने से एक जवान घायल हो गया.

सुरक्षाबलों ने तेज किया अभियान

घटना के बाद उन्हें तुरंत एयरलिफ्ट कर रांची भेजा गया. बताया जा रहा है कि नक्सली अब भी जंगल में छिपे हुए हैं. इस वजह से सुरक्षाबलों ने इस अभियान को तेज कर दिया है. अधिकारी पूरी तरह से अलर्ट मोड में हैं. हाल के दिनों में नक्सलियों के खिलाफ कई अभियान चलाया गया है. उनके खिलाफ पुलिस को बड़ी सफलता भी मिली है. जुलाई में ही नक्सलियों और जवानों के बीच मुठभेड़ हुआ था. जब नक्सलियों का संगठन कमजोर पड़ा तो वे जंगल का फायदा उठाकर भागने में सफल रहे. इस दौरान जवानों को भारी मात्रा में हथियार बरामद हुआ था. नक्सली नेता मिसिर बेसरा, मोछू, अनल, अनमोल, अशिवन, पिंटू लोहरा, चंदन लोहार, अमित हांसदा उर्फ अपटन समेत अन्य के सारंडा और कोल्हान जंगल में छिपे होने की सूचना है. इसके मद्देनजर सारंडा जंगल की घेराबंदी कर दी गयी है.

हृदयगति रुकने से पांडेपुर के एक युवक की मौत,भाजपा नेता मृतक के परिजनों को बंधाया ढांढस,दी आर्थिक मदद

संवाददाता विश्रामपुर (पलामू) : विश्रामपुर नप के वार्ड 10 पांडेपुर गवा निवासी स्व॰ युगेश्वर यादव का पुत्र अरुण यादव (22) की मौत आज अचानक हृदयगति रुकने से हो गयी। अरुण अपने माँ-बाप का इकलौता पुत्र था। यहां उल्लेखनीय है कि अरुण के पिताजी का भी मौत 10 वर्ष पहले ही हो गया था। उसके निधन से गांव में शोक की लहर है। वही उसके निधन से परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। इधर मौत की खबर सुनते ही भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य डॉ ईश्वर सागर चंद्रवंशी उर्फ मुन्ना चंद्रवंशी मृतक के घर पहुंचे। मृतक के अंतिम दाह संस्कार मर शामिल हुये। तथा शव पर पुष्प चढ़ा कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया। इसके अलावा श्री चंद्रवंशी परिजनों से मिलकर परिवार वालो को ढांढस बंधाया। और मृतक के परिजनों को आर्थिक मदद भी की। डॉ ईश्वर सागर चंद्रवंशी ने कहा कि अरुण का निधन काफी दुःखद घटना है। भगवा मृत आत्मा को शांति प्रदन करे। उन्होंने मृतक के परिजनों को हर संभव मदद करने का भरोसा भी दिलाया। अंतिम यात्रा में दामोदर प्रसाद यादव,सुनील चौधरी,उदेश्वर यादव,इशरार हवारी,उदय यादव सहित कई लोग शामिल थे।

भाजपा नेत्री ने प्रदेश के चुनाव सह प्रभारी सहित कई आला नेताओं से की मुलाकात,विस चुनाव पर चर्चा

संवाददाता विश्रामपुर (पलामू) :भाजपा नेत्री संध्या सिंह ने झारखंड के चुनाव सह प्रभारी हिमंत विश्व शर्मा से पार्टी के रांची स्थित प्रदेश कार्यालय में मुलाकात की। इसके अलावा श्रीमति सिंह भाजपा विधायक दल के नेता अमर बाउरी व प्रदेश के क्षेत्रीय महामंत्री नागेंद्र नाथ त्रिपाठी से भी मिलीं। संध्या सिंह ने पार्टी के आला नेताओं के साथ आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर चर्चा किया। उन्होंने उक्त सभी नेताओं को विश्रामपुर विधानसभा सहित पलामू प्रमंडल के वर्तमान राजनीतिक हालात की जानकारी दी। हिमंत विश्व शर्मा ने संध्या सिंह को संगठन को विस्तारित करने के कार्य में जुट जाने को कहा। श्री शर्मा ने संगठन में ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को जोड़ने पर बल दिया।

गैड़ा एवं बेलकप्पी में सास बहू पति सम्मेलन का आयोजन

संवाददाता सहबाज़ खान

बरकट्ठा(हज़ारीबाग)। बरकट्ठा प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत ग्राम गैड़ा पंचायत भवन एवं एचडब्ल्यूसी बेलकप्पी में सास बहू पति सम्मेलन का आयोजन किया गया।कार्यक्रम की अध्यक्षता सुलेखा कुमारी, सीएचओ अर्पणा दास, एएनएम आरती देवी ने की व संचालन सहिया साथी बसंती देवी एवं सुनीता देवी ने किया।इस मौके पर बीटीटी प्रकाश पंडित एवं नरोत्तम कुमार उपस्थित थे।बीटीटी प्रकाश पंडित ने उपस्थित लाभार्थियों को चार गाठ के बारे में जानकारी दी।बताया कि 21 वर्ष में शादी एवं पहला बच्चा शादी के 2 साल बाद, दो बच्चे के बीच 3 साल का अंतराल रखने एवं दो बच्चे के बाद स्थाई विधि अपनाने के बारे में बताया. सहिया साथी बसंती देवी एवं सुनीता देवी ने अस्थाई विधि, परिवार नियोजन का साधन अंतरा माल एन छाया ओसीपी कोपऑरटीव के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी. मौके पर चार गाठ अपने वाले लाभार्थियों को स्टील का बरतन गिफ्ट देकर सम्मानित किया गया. इस अवसर पर गैड़ा में सहिया दीदी कुमारी रीता पांडेय, कविता देवी, सावित्री देवी, बेलकप्पी में सहिया दीदी लक्ष्मी देवी, आरती आरती देवी, सुनीता देवी समेत अन्य कई लोग मौजूद रहे ।

गोरहर के समीप ट्रक के चपेट में आने से वृद्ध की हुई मौत

बरकट्ठा(हज़ारीबाग)।बरकट्ठा प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत ग्राम गोरहर के समीप ट्रक के चपेट में आने से एक वृद्ध की मौत हो गई। घटना गुरुवार की सुबह जीटी रोड़ पर बगोदर की ओर से आ रही ट्रक ने सड़क पार कर रहे वृद्ध को चपेट में ले लिया। इस हादसे में ग्राम अटका बगोदर निवासी बसंत साव 65 वर्ष पिता नुनूचंद साव की मौके पर ही मौत हो गई। बताया जा रहा है कि मृतक बसंत साव अपने रिस्तेदार के घर किसी व्यक्ति के निधन पर क्रियाक्रम में शामिल होने गोरहर गांव आया था। इसी बीच तीव्र गति से आ रही ट्रक ने उसे अपने चपेट में ले लिया।घटना के बाद शव के बीच सड़क पर पड़े रहने के कारण कुछ देर के लिए जीटी रोड़ जाम हो गया। बाद में सूचना मिलने पर गोरहर थाना पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को जप्त कर पोस्टमार्टम के लिए हजारीबाग भेज दिया। जबकि ट्रक को गोरहर पुलिस ने पकड़ कर अपने साथ थाना ले गये। जानकारी हो कि पिछले दो माह में एनएच 2 पर सड़क दुर्घटना में बरकट्ठा व गोरहर थाना क्षेत्र में 3 मौतें हो चुकी है।सड़क सुरक्षा को लेकर एन एचआई के अधिकारी से लेकर सड़क निर्माण कार्य एजेंसी कोई भी गंभीर नही है।

नगर परिषद ने स्वच्छता पखवाड़ा के तहत चलाया कई कार्यक्रम, शिक्षकों व बच्चों को दिलाया स्वच्छता का शपथ

संवाददाता विश्रामपुर (पलामू) : विश्रामपुर नगर परिषद द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा के तहत आज कई कार्यक्रम आयोजित किया गया। जनता उच्च विधालय सहित कई विद्यालयों में बच्चों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करते हुए फायदा बताया गया। इसके अलावा कार्यपालक पदाधिकारी सोमा खण्डेत ने शिक्षकों,अभिभावकों व छात्र-छात्राओं को स्वच्छता का शपथ भी दिलाया। सोमा खण्डेत ने कहा कि स्वच्छता को स्वभाव और संस्कार में शामिल करने की जरूरत है। सप्ताह में दो घंटा स्वच्छता के लिए श्रमदान जरूर करें। न खुद गंदगी करें और न ही दूसरों को करने दें। ताकि आपका शहर,वार्ड,गांव व घर साफ सुथरा रह सके। क्षेत्र के साफ सफाई के लिए नगर परिषद प्रतिबद्ध है। उन्होंने स्वच्छता से होने वाले फायदे बच्चों को बताया। मौके पर नगर प्रबंधक सुभाष हेंब्रम,प्रभात कुमार,अनिल गुप्ता,सुबोध केशरी,दीपक कुमार,राजेश प्रसाद,आनंद कुमार,संदीप कुमार मौर्या,रमेश कुमार,रवि कुमार,सुमित कुमार,मुबारक अंसारी,प्रवीन कुमार,कमलेश चौधरी सहित कई लोग मौजूद थे।

पहचान पत्र आई कार्ड का वितरण किया जाएगा

रांची : 19 सितंबर 2024 को झारखंड प्रदेश सीएनजी ऑटो चालक महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष दिनेश सोनी ने बताया है कि ओरमांझी BIT बूटी मोड़ खेलगांव कोकर कांटाटोली परिचालन करने वाले ऑटो चालकों का पहचान पत्र आई कार्ड का वितरण 21 सितंबर 2024 को समय 12:00 बजे स्थान बूटीमोड़ मैं किया जाएगा सभी सीएनजी ऑटो चालकों से अनुरोध है की आई कार्ड आकर जरूर से जरूर प्राप्त कर ले और आई कार्ड वितरण करने का शुरुआत यातायात प्रशासन द्वारा किया जाएगा दूसरे चरण में सभी ई रिक्शा चालकों के लिए इसी प्रकार का आई कार्ड जल्द ही जो भी रांची जिला ई रिक्शा चालक यूनियन का सदस्य होगा उन सभी चालक को आई कार्ड वितरण किया जाएगा और जो भी फॉर्म लेकर सदस्य नहीं बने हैं कृपया करके फॉर्म लेकर सदस्य बनने का कृपया करें सदस्य बनने के लिए कोई चार्ज नहीं लिया जाएगा.

तेली समाज अब किसी राजनीतिक दल का बंधुआ वोटर नहीं बनेगा- हरिनाथ साहू

रांचीः पुराना अरगोड़ा चौक पुनदाग रोड स्थित मधुराम साहू के आवास पर राजनीतिक भागीदारी परिचर्चा को लेकर तेली समाज का एक संगोष्ठी बैठक रखा गया।

बैठक की अध्यक्षता तेली समाज के वरिष्ठ नेता धनीराम साहू एवं संचालन विजय साहू ने किया।

संगोष्ठी बैठक में मुख्य रूप से राष्ट्रीय तेली साहू महा संगठन के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष सह लोकहित अधिकार पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष हरिनाथ साहू, आरटीएसएम के प्रदेश कार्य समिति सदस्य सह रांची जिला सहप्रभारी हजारी प्रसाद मोदी,अखिल भारतीय तैलिक साहू महासभा के राष्ट्रीय महासचिव सह भाजपा नेता मनोज लाल साहू, त्रिलोकी साहू, दशरथ साहू, प्रमोद प्रसाद गुप्ता,जयप्रकाश गुप्ता, देवेंद्र साहू, गणेश साहू, राहुल कुमार, मनोज कुमार महतो उपस्थित हुए।

बैठक में उपस्थित सभी सामाजिक अगुआ प्रतिनिधियों द्वारा प्रमुखता से बहुसंख्यक तेली समाज को आबादी अनुसार राजनीतिक भागीदारी एवं आरक्षण के मुद्दे पर विस्तार से चर्चा किया गया।

बैठक की अध्यक्षता कर रहे धनीराम साहू ने कहा भारतीय जनता पार्टी सहित सभी राजनीतिक दल तेली समाज को अपना बंधुआ वोटर मानते हैं सिर्फ हिंदुत्व का एजेंडा और नरेंद्र मोदी जी का चेहरा दिखा कर भारतीय जनता पार्टी तेली समाज का लंबे समय से राजनीतिक शोषण करता आ रहा है।

रांची लोकसभा से पूर्व प्रत्याशी रहे हरिनाथ साहू ने कहा सभी जागरूक और शासक वर्ग समाज की तरह तेली समाज को भी अब आबादी अनुसार राजनीतिक भागीदारी के लिए एकजुट होकर पहले जाति फिर पार्टी के तर्ज पर लड़ाई लड़ने की आवश्यकता है। यदि हमारा बहुसंख्यक तेली समाज को कोई भी राजनीतिक पार्टी राजनीतिक भागीदारी देने में नजरअंदाज करती है तो फिर राष्ट्रीय पार्टी के रूप में रजिस्टर्ड लोकहित अधिकार पार्टी तेली समाज सहित सभी शोषित उपेक्षित और वंचित समाज को राजनीतिक भागीदारी एवं प्रतिनिधित्व का मौका देगा।

तेली समाज के राष्ट्रीय नेता विजय साहू ने नारा बुलंद करते हुए कहा अभी नहीं तो कभी नहीं, हमें भीख नहीं भागीदारी चाहिए,आबादी अनुसार हिस्सेदारी चाहिए।

भाजपा पिछड़ा मोर्चा के पूर्व जिला अध्यक्ष वर्तमान के प्रदेश का समिति सदस्य किसान मोर्चा के हजारी प्रसाद मोदी ने कहा भाजपा में मैं पिछले 30 वर्षों से विभिन्न दायित्वों में रहकर पूरी निष्ठा और समर्पण भाव से पार्टी का झंडा ढो रहा हूं, किंतु वर्तमान भाजपा संगठन में पुराने कार्यकर्ताओं का कोई मान सम्मान और ना ही राजनीति में आगे बढ़ने का अवसर दिखाई दे रही है मैं हटिया विधानसभा से पूर्व में चुनाव लड़ चुका हूं और जिला परिषद का भी चुनाव अपने क्षेत्र से लड़ता रहा हूं किंतु भारतीय जनता पार्टी का पुराना कार्यकर्ता होने के बावजूद भी ना ही मुझे राजनीतिक भागीदारी का मौका दिया गया और न उचित मान सम्मान इसीलिए मैं आगामी 22 सितंबर 2024 ,दिन रविवार को अपने सैकड़ों समर्थकों के साथ सामाजिक न्याय का आंदोलन लोकहित अधिकार पार्टी के नीति सिद्धांतों से प्रभावित होकर पार्टी का दामन थामने जा रहा हूं।

बैठक में उपस्थित सभी सामाजिक अगुवा प्रतिनिधियों द्वारा हजारी प्रसाद मोदी को लोकहित अधिकार पार्टी में शामिल होने के लिए अग्रिम शुभकामनाएं और बधाई दिए।

माननीय राष्ट्रपति महोदया के आगमन को लेकर आला पुलिस-प्रशासनिक पदाधिकारियों की बैठक

रांचीः माननीय राष्ट्रपति महोदया के आगमन को लेकर आज दिनांक 19 सितंबर 2024 को आला पुलिस-प्रशासनिक पदाधिकारियों की बैठक हुई। समाहरणालय ब्लॉक बी स्थित कमरा संख्या 307 में एडीजी श्री संजय लाटकर की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में आईजी श्री अखिलेश झा, डीआईजी रांची श्री अनुप बिरथरे, डीआईजी बोकारो रेंज श्री सुरेन्द्र कुमार झा, उपायुक्त रांची श्री राहुल कुमार सिन्हा, वरीय पुलिस अधीक्षक श्री चंदन कुमार सिन्हा, पुलिस अधीक्षक नगर श्री राजकुमार मेहता, अपर जिला दण्डाधिकारी (विधि-व्यवस्था) श्री राजेश्वरनाथ आलोक, पुलिस अधीक्षक यातायात सहित

प्रतिनियुक्त दण्डाधिकारी, पुलिस एवं प्रशासनिक पदाधिकारी उपस्थित थे।

बैठक में माननीय राष्ट्रपति महोदया के आगमन को लेकर सुरक्षा-व्यवस्था, विधि-व्यवस्था एवं शांति-व्यवस्था संधारण को लेकर चर्चा करते हुए संबंधित पदाधिकारियों को एडीजी श्री संजय लाटकर द्वारा आवश्यक दिशा-निर्देश दिया गया। उन्होंने रुटलाइन पर प्रतिनियुक्त पदाधिकारियों को माननीय राष्ट्रपति महोदया एवं माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार के आवागमन के दौरान विशेष सर्तकता बरतने के निदेश दिये। इस दौरान सुगम यातायात व्यवस्था हेतु तत्परता से कार्य करने का निदेश एडीजी द्वारा दिया गया।

मानगो नगर निगम में मानव चैन बना कर किया गया स्वच्छता पखवाड़ा

जमशेदपुर । स्वच्छता ही सेवा 2024 कार्यक्रम के तहत 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक नगर निगम क्षेत्र में विशेष सफाई अभियान चलाया जा रहा है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के तौर पर मानगो के उपस्थित डीडीसी मनीष कुमार ने कार्यालय परिसर में गणमान्य व्यक्तियों, कार्यालय कर्मियों और स्कूली बच्चों को स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम का नेतृत्व करते हुए शपथ दिलाई और मानव चैन का निर्माण मानगो नगर निगम के कार्यालय से लेकर मानगो मेन रोड तक बनाया जिसका मुख्य उद्देश आम नागरिकों की स्वच्छता के प्रति जागरूक करने का था । मौके पर मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित डीडीसी मनीष कुमार ने कूड़ा-कचरा न फैलाने,सूखा एवं गीला कचरा को अलग अलग कर चिन्हित जगहों पे रखने, प्लास्टिक का उपयोग न करने और कचरा संग्रहण

सेवाओं के माध्यम से कचरे का उचित तरीके से निपटान करने के महत्व पर जोर दिया।उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि अभियान विशेष रूप से आगामी त्योहारों की प्रत्याशा में स्वच्छता बनाए रखने पर केंद्रित है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से उप नगर आयुक्त रंजीत लोहार ,अकिब जावेद ,संतोष कुमार सिटी मैनेजर, जितेंद्र कुमार ,निर्मल कुमार ,कुणाल कुमार , मानगो नगर निगम के ब्रांड एंबेसडर मुख्तार आलम खान , ताहिर अंसुमन ,कुमार राजेश समेत स्थानीय गणमान्य व्यक्ति, कार्यालय कर्मचारी और आसपास के क्षेत्र के सरकारी स्कूल के बच्चे शिक्षक खास तौर से इस स्वच्छता मानव चैन में शामिल हुए।

बेड़ोकला में आयोजित फुटबॉल प्रतियोगिता के खिताब पर बरही की टीम ने जमाया कब्जा

बरकट्ठा(हज़ारीबाग)। बरकट्ठा प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत बेड़ोकला गांव में खेली जा रही फुटबॉल प्रतियोगिता के खिताब पर बरही की टीम ने कब्जा कर लिया। बरही की टीम ने फाइनल मैच में केएफसी क्लब कोनहराकला बरकट्ठा की टीम को पेनाल्टी शूटआउट में 4-3 से पराजित किया। निर्धारित समय तक दोनों टीमों का खेल गोलरहित पर समाप्त हुआ था। इसके पूर्व खेली गई सेमीफाइनल मैच में बरही ने खरगु चलकुशा की टीम को तथा कोनहराकला ने डुमारियाटांड की टीम को पराजित कर फाइनल में पहुंची थी।प्रतियोगिता का आयोजन आदर्श नवयुवक क्लब ने किया। जिसमें बरकट्ठा, बरही, चलकुशा, जयनगर, सरिया, बगोदर समेत अन्य प्रखंडों की कुल 32 टीमों ने भाग लिया।मुख्य अतिथि पूर्व झामुमो जिला अध्यक्ष शंभुलाल यादव, पूर्व मुखिया तुलसी पांडेय, पंसस युसूफ अंसारी, देवीलाल साव, पूर्व मुखिया सरयू यादव, सुखदेव यादव मौजूद थे। अतिथियों ने प्रतियोगिता के विजेता टीम बरही, उपविजेता कोनहराकला बरकट्ठा समेत अन्य खिलाड़ियों को ट्राफी देकर पुरस्कृत किया।प्रतियोगिता में मैच रेफरी की भूमिका मनोज कुमार राणा एवं नारायण शर्मा ने निभाई। इस अवसर पर शिक्षक प्रिया रंजन, अशोक राणा, रामप्रवेश साव, प्रभु यादव, बालेश्वर यादव, आयोजक रोहित साव, भीम साव, छोटीलाल यादव, शंकर चौधरी, सुदामा यादव, दिनेश चौधरी समेत क्लब के सभी सदस्य मौजूद थे।

भाजपा का परिवर्तन यात्रा में झारखंड सरकार के झूठे वादे को जनता से करायेंगे अवगत : आनंद पाठक

संवाददाता विश्रामपुर (पलामू) : भाजपा का परिवर्तन यात्रा की शुरुआत झारखंड में 20 सितंबर से होगा। इस दौरान गांव-गांव,घर-घर जाकर झारखंड सरकार के झूठे दावे व वादे को जनता से अवगत करायेंगे। उक्त बातें आज भाजपा नेता आनंद पाठक ने नौगढ़ में प्रेसवार्ता कर पत्रकारों को दी। आनंद पाठक ने बताया कि भाजपा द्वारा 20 सितंबर से झारखंड में परिवर्तन यात्रा की शुरुआत कर रही है। जिसकी शुरुआत गृहमंत्री अमित शाह गिरिडीह के भोगुडीह बरहेट से करेंगे। वहीं 21 सितंबर को पलामू प्रमंडल में यात्रा की शुरुआत रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह वंशीधर नगर से करेंगे। श्री पाठक ने कहा कि झारखंड सरकार बड़े-बड़े झूठे वादे पांच लाख युवाओं को नौकरी,स्नातकोत्तर युवाओं को सात हजार रूपए प्रति माह,चूल्हा खर्च तीन हजार रुपये प्रति माह जैसे लुभावने वादे कर

जनता को मूर्ख बना रही है। सता में चूर हेमंत सरकार सभी मोर्चों पर विफल साबित हुई हैं। प्रदेश में कानून व्यवस्था की धज्जियां उड़ रही हैं। सरकार अपनी नाकामियों का ठिकरा विपक्ष पर फेंकतीं है। उन्होंने कहा कि परिवर्तन यात्रा में सभी भाजपा नेता-कार्यकर्ता गांव-गांव,घर-घर जा कर ठगबंधन सरकार द्वारा झूठे वादे से जनता को अवगत करायेंगे।उन्होंने कहा कि झारखंड का निर्माण भाजपा सरकार ने किया और विकास भी भाजपा सरकार ही कर सकती हैं।

वरीय पुलिस अधीक्षक का कार्यालय, राँची

सर्वसाधारण के लिए सूचना

नाम–लापता महिला राजमुनी देवी उम्र–22 वर्ष, रंग–साँवला, ऊँचाई–5 फीट, पहनावा–सलवार सुट हल्का रंग की पहनी हुई है।

उपरोक्त लापता महिला राजमुनी देवी उम्र–22 वर्ष, पे0–स्व0 जगेश्वर मुण्डा, सा0–रामदागा–मसनिया, थाना–अनगड़ा, जिला–राँची जो दिनांक–28.08.2024 को घर से बगैर बताए कहीं चले गए जो आजतक अपने घर वापस नहीं आए है। जिसके संबंध में अनगड़ा थाना सन्हा संख्या–19/2024, दिनांक–30.08.2024 दर्ज कर खोजबिन की जा रही है। उपरोक्त सूचना को सार्वजनिक किया जाना आवश्यक है।

अतः सभी जनसाधारण से अनुरोध है कि यदि उपरोक्त लापता महिला कहीं मिलती/दिखती है तो इसके संबंध में वरीय अधीक्षक के कार्यालय में या निम्नांकित फोन नम्बर पर संपर्क कर इसकी सूचना दें।

पुलिस उपाधीक्षक, सिल्ली, राँची। –9431770066
थाना प्रभारी अनगड़ा, राँची। –9431706180

वरीय पुलिस अधीक्षक, राँची

PR 336038 Police(24-25)#D

जिला अभियंता का कार्यालय, जिला परिषद, रामगढ़

अति अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना
ई–निविदा सं० :– ZP/RAMGARH/05/2024-25

1.कार्य की विस्तृत विवरणी :–

क्र.	प्रखण्ड	योजना का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र का मुल्य (रु०)	कार्य पुर्ण करने की अवधि
1	Chitarpur	Construction of 4 ACR and New Boundary Wall & Reparing of Hall and 4 Classroom of UPG High School Barkipona.	9974600	200000	10000	06 (छ) माह
2	Gola	Construction of 10 ACR and 01 Nos of Cycle Shed & Reparing of 10 Room of S.S High School, Gola.	24329364	487000	10000	09 (नौ) माह

1. वेबसाईट में निविदा प्रकाशन की तिथि – दिनांक 23.09.2024
2. ई–निविदा डालने/प्राप्ति की तिथि एवं समय – दिनांक 23.09.2024 से दिनांक 28.09.2024 अपराह्न 5:00 बजे तक।
3. निविदा खोलने की तिथि एवं समय– दिनांक – 30.09.2024 को पूर्वाह्न 11:00 बजे।
4. निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का पदनाम एवं पता– जिला अभियंता, जिला परिषद, रामगढ़।
5. ई–निविदा प्रकोष्ट का दुरभाष नं०– 9801557645
6. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि केवल *Online mode* द्वारा स्वीकार्य होगी।
7. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि का ई– भुगतान संवेदक द्वारा जिस बैंक खाता से किया जायेगा, उसी खाते मे अग्रधन की राशि वापस होगी। अगर बैंक खाता को बंद कर दिया जाता है। तो उसकी सारी जवाबदेही संवेदक की होगी।
8. निविदा Double Bid पद्धति से होगा।
9. इस निविदा में जिला परिषद, रामगढ़ के अंतर्गत पंजीकृत समुचित श्रेणी के संवेदक भाग ले सकेंगे।

विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाईट *Jharkhandtenders.gov.in* एवं कार्यालय के सूचनापट्ट पर देखा जा सकता है।

ह०/–
जिला अभियंता,
जिला परिषद, रामगढ़

PR 336032 District(24-25).D

कार्यालय, जिला परिषद्, लोहरदगा।

(अभियंत्रण कोषांग)
Phone Number:- 06526-222064 *email-id:* zplohardaga@gmail.com

ईच्छा की अभिव्यक्ति (Expression of Interest)
(अति अल्पकालीन निविदा सूचना)
(Very Short term Tender Notice)

लोहरदगा जिला अन्तर्गत लोहरदगा क्रिकेट स्टेडियम के बगल में Open Gym के अधिष्ठापन के लिए Turnkey आधार पर सर्वेक्षण, डिजाईन, आपूर्ति, अधिष्ठापन, पर्यवेक्षण और सामान्य रख–रखाव गतिविधियों हेतु निबंधित एवं इच्छुक आपूर्तिकर्ता/कम्पनी/संस्थानों/फर्म/उत्पादक एवं उनके प्राधिकृत प्रतिनिधि आदि से दिनांक **27-09-2024** के **11:30** बजे पूर्वा० तक ईच्छा की अभिव्यक्ति (Expression of Interest) आमन्त्रित की जाती है।

"ईच्छा की अभिव्यक्ति तकनीकी बीड एवं वित्तीय बीड की अलग–अलग सीलबंद लिफाफे को एक बड़े सीलबंद लिफाफे में समर्पित किया जायेगा। ईच्छा की अभिव्यक्ति (Expression of Interest) समर्पित करने संबंधी विस्तृत शर्त एवं दिशा निर्देश लोहरदगा जिला के वेबसाईट **www.lohardaga.nic.in** एवं कार्यालय के सूचना पट्ट पर देखा जा सकता है। सीलबंद Expression of Interest के तकनीकी बीड़ को प्रस्तावकों/प्राधिकृत प्रतिनिधियों की उपस्थिति में **दिनांक 27-09-2024 के 12:30 बजे (अपराह्न)** को खोला जायेगा, तत्पश्चात तकनीकी बीड़ के सफल प्रस्तावकों का वितीय बीड़ खोला जायेगा।

नोट :–विशेष जानकारी हेतु कार्यालय में कार्यालय दिवस एवं अवधि में सम्पर्क किया जा सकता है।

जिला अभियन्ता,
जिला परिषद्, लोहरदगा।

PR 336103 (Lohardaga) 24-25 (D)

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER, BUILDING CONSTRUCTION DEPARTMENT BUILDING DIVISION, HAZARIBAG

e-Procurement Cell
Very Short e-Procurement Notice
Tender Reference No:-BCD/EE/HAZARIBAG/ 21/2024-25 Date:-18-09-2024

Sl. No	Name of Work	Estimated Cost	Earnest Money	B.O.Q Rate	Time of completion
1	Construction of Boundary Wall UPV Ber Tola Chepakhurd Panchayat Darikalan Block Barkagaon Hazaribag	1667600/-	34000/-	5000/-	3 Month
2	Construction of Boundary Wall Primary School Shohadi Panchayat Talaswar Block Barkagaon Hazaribag	1468700/-	30000/-	2500/-	3 Month
3	Construction of Boundary Wall Primary School Chelengdag Panchayat Ango Block Barkagaon Hazaribag	1866500/-	38000/-	5000/-	3 Month
4	Construction of Boundary Wall Primary School Singarsas Panchayat Ango Block Barkagaon Hazaribag	2224500/-	45000/-	5000/-	3 Month
5	Construction of Boundary Wall UMV Mahugaikhurd Panchayat Chandol Block Barkagaon Hazaribag	1932800/-	39000/-	5000/-	3 Month
6	Renovation work for Primary School Hindi Kanya School Badam Block Barkagaon, Hazaribag	2434400/-	49000/-	5000/-	3 Month
7	Renovation work for UPV Rohangarha,Urimari Block Barkagaon, Hazaribag	2174900/-	44000/-	5000/-	3 Month
8	Construction of Toilet Block in Utkramit Madhya Vidyalaya, Bhadaikhap (Part-02)Block-Keredari, District-Hazaribagh	641200/-	13000/-	1250/-	2 Month
9	Construction of Toilet Block inUtkramit Ucch Vidyalaya, Hendegir, (Part-02) Block-Keredari, District- Hazaribag.	641200/-	13000/-	1250/-	2 Month
10	Construction of Toilet Block in Rajkiya Utkramit Madhya Vidyalaya, Manatu (Part-02) ,Block-Keredari, District- Hazaribag.	641200/-	13000/-	1250/-	2 Month
11	Construction of Toilet Block Utkramit Madhya Vidyalaya, Pahra,(Part-02) Block-Keredari, District- Hazaribag	641200/-	13000/-	1250/-	2 Month
12	Deep Boring (200 x 150 mm dia) & Installation of 1.5 H.P. Submersible Pump in Madhya Vidyalaya, Pagar, Block-Keredari, District- Hazaribagh	327950/-	7000/-	750/-	1 Month
13	Construction of Kitchen Cum Store in Utkramit Madhya Vidyalaya ,Kanki, Block- Dari, District- Hazaribag	1944900/-	39000/-	5000/-	4 Month
14	Construction of Kitchen Cum Store in Nav Prathmik Vidyalaya , Jara Tand, Block- Dari, District- Hazaribag	1944900/-	39000/-	5000/-	4 Month
15	Renovation work for HSC Pachra, Block -Keredari, Hazaribag for the year of 2024-25	2475000/-	50000/-	5000/-	3 Month
16	Installation of High Mast Light in the Campus of PHC Huwai , Dari, Hazaribag.	978100/-	20000/-	1250/-	2 Month

A.	Date of Publication of Tender on website	23-09-2024
B.	Last date/Time for receipt of bids	29-09-2024 03.00 PM
C.	Name & address of office Inviting tender	Office of the Executive Engineer, Building Construction Department, Building Division,Hazaribag
D.	Contact no. of Procurement officer	9348952485
E.	Helpline number of e-Procurement cell	**06546-225723**

Further details and subsequent amendments can be seen on website http://jharkhandtenders.gov.in

Nodal Officer,
e-Procurement Cell,
Office of the Executive Engineer,
Building Construction Department,
Building Division, Hazaribag

PR 336123 Building(24-25).D

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के कर्मचारियों ने किया प्रदर्शन

रांचीः यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, अरगोडा चौक, रांची पर उच्च बैंक प्रबंधन के मनमानी के खिलाफ पूरे देश में यूनियन बैंक में 70,000 यूनियन बैंककर्मी AIUBOF और AIUBEA के सदस्यों ने विरोध प्रदर्शन किए। विरोध प्रदर्शन पूरे 18 अंचल कार्यालयों पर किया गया। रांची अंचल कार्यालय पर दोनों संगठनों के लगभग 200 साथियों ने धरना प्रदर्शन में भाग लिए। अंचल प्रमुख रांची को 20 मांगों की सूची भी सौंपी गयी, जिसमें से कुछ मुख्य मांगें है। बैंक में सभी पदों पर भर्ती शीघ्र करना।बैंक के पूंजी को अनावश्यक रूप में खर्च करने पर रोक लगे। अनुकम्पा के आधार पर नौकरी शीघ्र प्रदान करना। बैंक में आउटसोर्सिंग से कार्य करवाना बंद हो। बैंक में अप्रेन्टिस की भर्ती बंद हो। प्रदर्शन का नेतृत्व अधिकारी वर्ग के महामंत्री कॉ० ज्योतेन्श्वर पांडेय और कर्मचारी वर्ग के महामंत्री कॉ. दिनेश कुमार शर्मा ने किया।

दफादार चौकीदार पंचायत राज्य कमेटी ने किया बैठक

रांचीः झारखंड राज्य दफादार चौकीदार पंचायत राज्य कमेटी के द्वारा रांची पुराने विधायक क्लब में एक बैठक का आयोजन किया गया।जिसकी अध्यक्षता कृष्ण दयाल सिंह मुख्य अतिथि ने की, संचालन लोहरदगा जिला अध्यक्ष समशूल अंसारी ने किया बैठक में मुख्य रूप से चौकीदार बहाली विज्ञापन निकाल कर पूर्व चौकीदारों के बीटों पर रामगढ़ जिला मे बहाली किया गया है और जिन चौकीदारों की मृत्यु सेवा काल के दौरान हुआ है उनके आश्रितों को अनुकंपा में नियुक्ति होना चाहिए था उस बीट पर विज्ञापन निकालकर दूसरे लोगों को बहाली कर दिया गया है जो बिल्कुल अन्याय हुआ है और यही हालत झारखंड के सभी जिलों में विज्ञापन निकालने में त्रुटि देखा जा रहा है। झारखंड राज्य दफादार चौकीदार पंचायत मांग करती है सरकार से की रामगढ़ में जो नियुक्ति हुआ है बिल्कुल अवैध रूप से नियुक्त हुआ है झारखंड सरकार तत्काल प्रभाव से रद्द करें और जिन जिलों में विज्ञापन निकाला गया है उस पर रोक लगाई जाए। संघ के सदस्यों का एक प्रतिनिधि मंडल 14 जुलाई 2024 को मुख्यमंत्री के आवास में मिला था जिसमें राज्य अध्यक्ष कृष्णा दयाल सिंह के अलावे अन्य सदस्य शामिल थे उसमें मुख्यमंत्री जी बोले थे कि चौकीदारों का काम हम जरूर करेंगे।

जातीय जनगणना सहित 11 सूत्री मांगों को लेकर महामहिम राज्यपाल से ओबीसी एकता अधिकार मंच ने किया मुलाकात

रांचीः रांची राजभवन में राज्य में जातीय जनगणना सहित 11 सूत्री मांगों को लेकर महामहिम राज्यपाल से ओबीसी एकता अधिकार मंच, झारखंड प्रदेश के केंद्रीय अध्यक्ष ब्रह्मदेव प्रसाद (बी. डी. प्रसाद) के निर्देशानुसार केंद्रीय सचिव गोरखनाथ चौधरी के नेतृत्व में महामहिम राज्यपाल को एक मांग पत्र सौंपा गया जिसमें राज्य में जातीय जनगणना यथाशीघ्र कराने तथा झारखंड प्रदेश के बेरोजगार युवा युवतियों को रोजगार दिलाने सहित प्रदेश में सभी विभागों में रिक्त पड़े पदों पर यथाशीघ्र बहाल करा कर रिक्त पद को भरने सहित अन्य मांगे शामिल है महामहिम राज्यपाल से मिलने के बाद श्री चौधरी ने पत्रकार को बताया कि झारखंड प्रदेश में ओबीसी एकता अधिकार मंच के द्वारा झारखंड प्रदेश के पलामू एवं छोटानागपुर प्रमंडल सहित पूरे प्रदेश में रथ यात्रा के माध्यम से न्याय रथ चला कर ओबीसी परिवार को राजनीतिक एवं शैक्षणिक रूप से जागरूक करने का काम किया गया है मेरी मांग जायज है। महामहिम राज्यपाल महोदय ने आश्वासन देते हुए कहा कि आपकी जो मांग है झारखंड राज्य के लिए जायज है हमसे जितना बनेगा मैं यथाशीघ्र करने का काम करूंगा मैं राज्यपाल महामहिम का धन्यवाद देना चाहता हूं की ओबीसी परिवार की बातों को गंभीरता से लिया है पूरे प्रदेश के ओबीसी परिवार की ओर से महामहिम राज्यपाल जी को बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

एनएसयूआइ का प्रतिनिधिमंडल राज्यपाल से मिल छात्रहित में मांगपत्र सौंपा

रांची(एम.आलम):एनएसयूआइ का प्रतिनिधिमंडल कुलाधिपति सह राज्यपाल झारखंड संतोष गंगवार जी से मिला, और झारखंड के सभी सरकारी विश्विद्यालयों से जुड़े हुए मामलों पर ध्यान आकृष्ट कराया गया एवम निम्न बिंदुओं पर उचित कार्रवाई करने की मांग की गई । राज्य के सभी सरकारी विश्विद्यालय में स्थाई कुलपति, रजिस्टर, प्रति कुलपति, परीक्षा नियंत्रक नहीं है, बहाल किया जाए । कोयलांचल विश्वविद्यालय के अंतर्गत कैंटीन का टेंडर तथा मैन पावर का टेंडर जिनको भी दिया गया है या पूरा बकरिया ही विवादों में है और इसकी जांच होनी चाहिए कि किन आधार पर वैसे कंपनियों को टेंडर दिया गया है जो उस क्षेत्र में अनुभवी नहीं है और ना ही टेंडर प्रक्रिया में जरूरी नियम का पालन किया गया है । नई शिक्षा नीति के अनुसार किसी भी विश्वविद्यालय अथवा कॉलेज में लाइब्रेरी में पुस्तक उपलब्ध नहीं है, उपलब्ध कराई जाए । प्रतिनिधिमंडल में मुख्य रूप हुसैन, अमन अहमद, हुसैन अंसारी,पवन कुमार,अंकिता शीखर शामिल थे।

श्री काली मंदिर दुर्गा पूजा समिति के पूजा कार्यालय का हुआ उद्घाटन,सुजीत वर्मा पुनः बने अध्यक्ष

रांचीः रातु रोड शास्त्री चौक स्थित (गैलेक्सिया मॉल के सामने)श्री काली मंदिर दुर्गा पूजा समिति के पूजा कार्यालय का शुभ उद्घाटन समिति के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों के उपस्थिति मे संयुक्त रूप से नारियल फोड़कर एवं रीबन काटकर हुआ। इस मौके पर संस्थापक शशि कांत तिर्की,संरक्षक फ्रांशिश तिर्की,अध्यक्ष सुजीत वर्मा, प्रवक्ता शिव किशोर शर्मा,पुजारी श्रीगोपाल पाठक सहित,विंदुल वर्मा,ननकु तिर्की,मंटू वर्मा,कुमुद वर्मा,गौतम वर्मा,महादेव टोप्पो,राजनंदन जी,राजू शर्मा,सोनू वर्मा,पुतुल चौधरी,दीपू सिन्हा,बीटू वर्मा,सोनू पांडा,प्रकाश कुमार,अनिल वर्मा,राजेश महतो,रूपेश सोनी,मनोज तिवारी,अनिल थापा,छोटू सिंह,राजेश कुमार,पिंटू सिंह,भोलू सिंह,रवि कुमार,आयुष साहा,अर्जुन पांडा, रिपु वर्मा,नंदू कुमार यह जानकारी प्रवक्ता शिव किशोर शर्मा ने दी है।

फर्जी आंदोलनकारी संगठनों पर कार्रवाई हो : विमल

रांचीः झारखंड आंदोलनकारी मोर्चा के कार्यालय में गुरुवार को विमल कच्छप की अध्यक्षता में बैठक की गई. इस बैठक में सर्वसम्मति से राज्य सरकार से आंदोलनकारियों के चिह्नितीकरण कार्य सम्पन्न कराने की मांग की गई. मोर्चा के संयोजक विमल कच्छप ने बताया कि कुछ तथाकथित आंदोलकारी संगठन फर्जीवाड़ा कर रहे हैं. पुष्कर महतो के नेतृत्व में झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा के नाम से गलत लोगों को झारखंड आंदोलकारी के रूप में प्रसारित किया जा रहा है, जो गलत है. शफीक आलम ने बताया कि झारखंड आंदोलकारी संघर्ष मोर्चा के लोगों ने न ही कोई अलग राज्य बनाने के संघर्ष में आंदोलन किया है, और न ही कोई आंदोलन में कभी जेल गया है. बेवजह बंदी और प्रदर्शन करके आम जनता और सरकार को क्षति पहुंचाने वाले ये लोग झारखंड आंदोलकारियों के नाम पर ठगी और उगाही का काम कर रहे हैं.

ग्रीन बजटिंग से मिलेगा झारखंड के सतत विकास को नया आयाम

रांचीः टास्क फोर्स-सस्टेनेबल जस्ट ट्रांज़िशन (झारखंड सरकार), सेंटर फॉर एनवायरनमेंट एंड एनर्जी डेवलपमेंट (सीड) और इंस्टीट्यूट फॉर एनर्जी इकनॉमिक्स एंड फाइनेंशियल एनालिसिस (आइफा) द्वारा आयोजित ग्रीन बजटिंग केंद्रित कांफ्रेंस में एक रिपोर्ट 'जस्ट ट्रांज़िशन फाइनेंसिंग पाथवे फॉर झारखंड' जारी की गयी. कार्यक्रम में ग्रीन बजटिंग और सस्टेनेबल फाइनेंसिंग की आवश्यकता पर जोर दिया गया, साथ ही राज्य में एनर्जी ट्रांज़िशन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने और ग्रीन इकॉनोमी बनाने के प्रयासों का समर्थन करने के लिए विभिन्न वित्तीय उपायों एवं संसाधनों पर चर्चा की गई. कांफ्रेंस को संबोधित करते हुए अमरेंद्र प्रताप सिंह (आईएएस, सेवानिवृत्त) अध्यक्ष, झारखंड राज्य वित्त आयोग ने राज्य में ग्रीन बजटिंग की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया. कहा कि यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि सार्वजनिक व्यय का उपयोग क्लाइमेट रेसिलिएंट एवं सस्टेनेबल इकॉनोमी के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किया जाए. विविध विभागों के समन्वय से ग्रीन बजट निर्माण की प्रक्रिया पूरी हो सकती है, जिससे राज्य में ग्रीन इकॉनमी को प्रोत्साहन मिलेगा. कांफ्रेंस के विषयवस्तु से अवगत कराते हुए अजय कुमार रस्तोगी (आईएफएस, सेवानिवृत्त), अध्यक्ष, टास्क फोर्स-सस्टेनेबल जस्ट ट्रांज़िशन ने ग्रीन अर्थव्यवस्था की ओर बदलाव में ग्रीन फाइनेंसिंग के महत्व पर जोर दिया, जो दीर्घकालिक विकास के लिए वित्तीय ढांचे के निर्माण पर जोर देती है. उन्होंने कहा कि हरित पहलों के लिए बजट आवंटन बढ़ाना देश एवं राज्य के जलवायु लक्ष्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक है. उन्होंने राज्य में जस्ट ट्रांज़िशन फंड की स्थापना पर भी बल दिया ताकि भविष्योन्मुखी अर्थव्यवस्था के लिए जरूरी संसाधन उपलब्ध कराये जा सके. ग्रीन बजट के व्यापक सामाजिक-आर्थिक लाभों के बारे में बताते हुए रमापति कुमार, सीईओ, सीड ने बताया कि यह न केवल एनवायरनमेंटल सस्टेनेबिलिटी को बढ़ावा देता है, बल्कि नए रोजगार के अवसर और वैकल्पिक राजस्व साधनों को भी पेश करता है. उन्होंने ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेशों को सही दिशा देने के लिए एक वित्त पोषण ढांचे के विकास की आवश्यकता पर जोर दिया. रिपोर्ट के अनुसार झारखंड की अर्थव्यवस्था जीवाश्म ईंधनों पर बहुत ज्यादा निर्भर है. वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान जीवाश्म ईंधन से प्राप्त राजस्व राज्य की आय का 32% हिस्सा थे. इसके विपरीत, छत्तीसगढ़ और ओडिशा ने क्रमशः 22% एवं 16% राजस्व जीवाश्म ईंधनों से प्राप्त किया. झारखंड की लगभग 57% जीएसटी संग्रहण जीवाश्म ईंधन-निर्भर उद्योगों से आती है, जिसमें स्टील, आयरन, सीमेंट, और कोयला लगभग 40% योगदान करते हैं, और ऑटोमोबाइल्स एवं पेट्रोलियम 17% जोड़ते हैं. रिपोर्ट ने सतत विकास लक्ष्यों को पूरा करने और एनर्जी ट्रांज़िशन की जरूरतों को पूरा करने के लिए सस्टेनेबल फाइनेंसिंग और ग्रीन बजट जैसे उपायों को लागू करने की सिफारिश की है. रिपोर्ट के बारे में विभूति गर्ग, निदेशक-दक्षिण एशिया, आइफा ने बताया कि झारखंड में सस्टेनेबल ट्रांजिशन के लिए ग्रीन क्षेत्रों, अक्षय ऊर्जा, सततशील कृषि और ग्रीन अधिसंरचना में सार्वजनिक व्यय की ओर ठोस बदलाव की आवश्यकता है. सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों से क्लाइमेट फाइनांस जुटाना ट्रांज़िशन की अधिसंरचना निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है. इस रिपोर्ट में बताए गए फाइनेंसिंग फ्रेमवर्क एवं मैकेनिज्म राज्य में वित्तीय योजना को सुदृढ़ करने, कार्बन फुटप्रिंट को कम करने, आर्थिक विकास के अवसर उत्पन्न करने में मदद करेंगे. कार्यक्रम में टास्क फोर्स के नामित सदस्य, वित्त, योजना एवं विकास, कृषि, ऊर्जा, परिवहन, उद्योग आदि विभिन्न सरकारी विभागों और एजेंसियों के वरिष्ठ अधिकारी, स्टेट लेवल बैंकर्स कमिटी, नाबार्ड समेत प्रमुख वित्तीय संस्थाएं एवं बैंक, सिविल सोसाइटी संगठनों के प्रतिनिधियों के अलावा शांतनु श्रीवास्तव (रिसर्च लीड, आइफा), गौरव उपाध्याय (एनर्जी फाइनेंस विशेषज्ञ, आइफा) आदि की भागीदारी रही.

नशे के बढ़ते कारोबार पर रोक लगाने की मांग को लेकर 26 को राजभवन के समक्ष धरना देगा आजसू

रांची : सरकार खनिज एक्सपोर्ट करनेवाले झारखंड को मादक पदार्थ एक्सपोर्ट करने वाला राज्य बनाने की तैयारी में है. नशे के कारोबार को रोकने के प्रति सरकार की उदासीनता ने युवाओं को नशे के दलदल में धकेल दिया है. राज्य में पिछले कुछ सालों में नशे का कारोबार काफी तेजी से फल फूल रहा है. सरकार का संरक्षण प्राप्त ड्रग माफियाओं और पेडलरों ने अपना जाल विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय से लेकर खेल के मैदान और हर चौक चौराहों तक फैला लिया है. राज्य में अवैध रूप से फलता-फूलता नशे का कारोबार और नशे के सौदागरों की सक्रियता चिंता का विषय है. उक्त बातें युवा आजसू के राज्य संयोजक गौतम सिंह ने हरमू स्थित आजसू पार्टी केंद्रीय कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान कही. उन्होंने कहा कि युवा आजसू इस गंभीर विषय को लेकर लगातार प्रयास कर रही है. इस दौरान हमने कई बार जिला प्रशासन को ज्ञापन सौंपा है, मगर जिला प्रशासन उदासीन बना रहा. अब युवा आजसू सड़क पर आंदोलन के माध्यम से आवाज बुलंद करने जा रहा है. बढ़ते नशे के कारोबार पर पूर्णतः रोक लगाने को लेकर हम 'एक युद्ध नशे के विरुद्ध' अभियान चलाएंगे. इस अभियान के तहत युवा आजसू आगमी 26 सितंबर को राजभवन के समक्ष धरना देगा. गौतम के मुताबिक नशे के कारोबार पर रोक लगाने में पुलिस पूरी तरह से विफल रही है. झारखंड हाईकोर्ट ने कई बार मौखिक निर्देश दिए हैं कि मादक पदार्थों की बिक्री, नशे के सौदागरों की सक्रियता और युवाओं को नशे के दलदल में फंसने से रोकने के लिए ठोस कदम उठाए जाएं. इसके बावजूद पुलिस नशे के सौदागरों और उनके सिंडीकेट पर नियंत्रण नहीं कर पा रही है, जो सरकार की इस मामले के प्रति गैर जिम्मेदाराना रवैया को दिखलाता है.

जेएसएससी सीजीएल एग्जाम की तिथि आगे बढ़ाने के लिए कैंडिडेट्स ने बाबूलाल मरांडी से मांगी मदद

रांची : जेएसएससी सीजीएल परीक्षा के अभ्यर्थियों ने गुरुवार को पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी से भेंट की. उन्हें पत्र सौंपकर परीक्षा तिथि आगे बढ़ाने का आग्रह किया. बाबूलाल ने इससे संबंधित जानकारी एक्स पर शेयर करते बताया है कि जेएसएससी ने 21 और 22 सितंबर को परीक्षा तिथि तय की है. इस अवधि के दौरान 21 से 27 सितंबर तक नक्सली संगठन स्थापना दिवस कार्यक्रम पर हिंसा की आशंका बनी हुई है, जिसकी पुष्टि कई समाचार पत्रों ने भी की है. बाबूलाल मरांडी के अनुसार उत्पाद सिपाही भर्ती के दौरान राज्य सरकार की लापरवाही के कारण कई छात्रों की जान चली गई थी, इस वजह से भी छात्र असुरक्षित महसूस कर रहे हैं. बाबूलाल ने सरकार से आग्रह करते कहा है कि छात्रों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए आवेदन पर संवेदना पूर्वक विचार करे और परीक्षा तिथि में संशोधन करे.

झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा का समीक्षा बैठक सम्पन्न

रांचीः झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा की समीक्षा बैठक डोरंडा झंडा चौक स्थित केंद्रीय कार्यालय में हुई। बैठक में 11 सितंबर को झारखंड बंद कार्यक्रम की व्यापक सफलता पर प्रसन्नता एवं प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन करने वालों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। समीक्षा बैठक में निर्णय लिया गया कि 25 सितंबर 2024 तक झारखंड आंदोलनकारियों के जेल जाने की बाध्यता समाप्त करने, राजकीय मान- सम्मान ,अलग झारखंडी पहचान, बेटा बेटियों के सौ प्रतिशत रोजी रोजगार नियोजन देने के गारंटी देने तथा एक-एक आंदोलनकारी को सम्मान पेंशन राशि 50-50 हजार रु. देने की दिशा में पहल कदमी नहीं हुई तो 30 सितंबर को मुख्यमंत्री आवास का घेराव करने का निर्णय लिया गया। प्रत्येक आंदोलनकारी परंपरागत अस्त्र शस्त्र के साथ जुटेंगे। बैठक की अध्यक्षता करते हुए विदेशी महतो ने कहा कि अस्मिता की रक्षा के लिए अपनी लड़ाई स्वयं लड़ेंगे और अपने संघर्ष के बल पर ही अपने अधिकारों को लेकर रहेंगे। बैठक का संचालन करते हुए संस्थापक व प्रधान सचिव पुष्कर महतो ने कहा कि झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष करते हुए, अपनी पहचान व मान सम्मान के सवाल पर शहादत देने के लिए तैयार है। 30 सितंबर को झारखंड आंदोलनकारी गण मुख्यमंत्री का हुक्का पानी बंद करने का काम करेंगे। केंद्रीय उपाध्यक्ष जितेंद्र सिंह कुशवाहा ने कहा कि झारखंड आंदोलनकारी अपने शेष समय को विशेष बनाते हुए अपने मान सम्मान, अलग पहचान रोजी रोजगार नियोजन के अधिकार की रक्षा के लिए 30 सितंबर को सड़कों पर उतरेंगे। पलामू प्रमंडलीय अध्यक्ष बालकिशुन उरांव ने कहा कि अपने मान सम्मान, पहचान के लिए संघर्ष करेंगे और बाल बच्चों को अधिकारों को दिलाकर रहेंगे। लड़ेंगे और जीतेंगे। मौके पर विभिन्न जिलों से आए आंदोलनकारियों में जिदन कोल, श्याम बिहारी प्रजापति, बुधन कोल, कार्तिक महथा, राजदेव महथा, सोमारी देवी, नीलू देवी, पुनीत भगत, , महमूद आलम, प्रकाश खलखो, सीरिया उरांव, सुजात तोप्पो, जमालउद्दीन अंसारी,, विजय उरांव, दाउद केरकेट्टा, इंद्रदेव उरांव बिरसा उरांव अमित राव चंद्रवंशी चंडी राम महतो महतो मनेंद्रनाथ महतो गोविंद चंद्र महतो मोहम्मद शाहिद अंसारी, सहदेव महतो विशेश्वर महतो संतोष कुमार लेकिन चंद्र कुमार महेंद्र ठाकुर संजय लाल महतो, किरण लकड़ा, विमल मुंडा, मंजूर आलम संतोष कुमार सिंह सहित बड़ी संख्या में अन्य उपस्थित थे।

'वन नेशन वन इलेक्शन' पर बोले सीएम हेमंत, क्षेत्रीय मुद्दों को खत्म करने की यह भाजपा की चाल है

रांची : 'वन नेशन, वन इलेक्शन' के प्रस्ताव को मोदी कैबिनेट ने मंजूरी दे दी है. इसके बाद से पक्ष और विपक्ष इस पर अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं. झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने भी एक्स पर 'वन नेशन वन इलेक्शन'पर प्रतिक्रिया दी है. हेमंत सोरेन ने लिखा कि "एक देश एक चुनाव का प्रस्ताव लोकतंत्र की मूल भावना पर कुठाराघात है. यह हमारे संघीय ढांचे को कमजोर करने और राज्यों की स्वायत्तता को नष्ट करने का एक षड्यंत्र है. इस प्रस्ताव से लोगों की आवाज दबाई जायेगी और उनके मतदान के अधिकार का अपमान होगा. डिमोनेटाइजेशन की जन-विरोधी एवं असफल नीति की तरह ही यह कदम डी-डेमोक्रेटाइजेशन की तरफ धकेलने का प्रयास है. हम इस अलोकतांत्रिक कदम का पुरजोर विरोध करते हैं. एक अन्य पोस्ट में हेमंत सोरेन ने कहा कि वन नेशन वन इलेक्शन क्षेत्रीय मुद्दों को खत्म करने की भाजपा की चाल है. यह देश के संवैधानिक अधिकारों के साथ-साथ पारंपरिक आदिवासी स्वशासन व्यवस्था पर भी कुठाराघात है. झामुमो इसे हरगिज बर्दाश्त नहीं करेगा.

चैंबर चुनाव 22 सितंबर को, 3909 मतदाता होंगे शामिल

रांची : फेडरेशन ऑफ झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्रीज के सत्र 2024-25 का चुनाव 22 सितंबर को गुरुनानक स्कूल के हॉल में होगा. मतदान सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक होगा. 5 बजे तक कतार में खड़े होनेवाले मतदाता मतदान कर सकेंगे. इस बार कुल 3909 मतदाता चैंबर के चुनावी प्रक्रिया में हिस्सा लेंगे. मतदाता सूची के अनुसार कुल 83 सम्बद्ध संस्थाएं हैं. सम्बद्ध संस्थाओं को दो वोट देने का अधिकार है. यह जानकारी चैंबर चुनाव पदाधिकारी ललित केडिया ने दी. उन्होंने कहा कि अन्य सभी मतदाताओं को एक वोट देने का अधिकार है. कार्यकारिणी समिति के लिए चुनाव में कुल 35 उम्मीदवार हैं. प्रत्येक मतदाता को 21 उम्मीदवार का चयन करना है. कार्यकारिणी समिति के साथ ही पलामू प्रमंडल के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष का चुनाव भी रविवार को ही मतदान स्थल पर होगा. चुनावी प्रक्रियाओं से अवगत कराते हुए चुनाव पदाधिकारी ललित केडिया और अंचल किंगर ने संयुक्त रूप से बताया कि आमसभा 21 सितंबर से 30 दिन पूर्व बने लाइफ, कॉरपोरेट लाइफ और पैट्रोन सदस्य तथा 90 दिन पूर्व बने जेनरल एफिलियेटेड, कॉरपोरेट जेनरल कैटगरी के सदस्य ही मतदान प्रक्रिया में हिस्सा ले सकते हैं. मतदान से पूर्व कॉरपोरेट जेनरल, जेनरल और एफिलियेटेड बॉडी के सदस्यों का किसी प्रकार का बकाया नहीं होना चाहिए. पूर्व की भांति इस चुनाव में में सीए और सीएस एसोसियेशन का सहयोग रहेगा. जानकारी दी गयी कि 21 सितंबर को चैंबर भवन में आयोजित चेंबर की 60वीं वार्षिक आमसभा में बतौर मुख्य अतिथि रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ और विशिष्ट अतिथि के तौर पर राज्यसभा सांसद महुआ माजी उपस्थिति रहेंगी. मतदान के उपरांत देर रात्रि तक मतगणना और रिजल्ट की घोषणा रविवार को ही की जायेगी. मतगणना के रिजल्ट से असंतुष्ट प्रत्याशी पुर्नमतगणना शुल्क के साथ 23 सितंबर को दोपहर 2 बजे तक पुर्नमतगणना की अपील कर सकते हैं.

आरएसएस कौन होता है आदिवासियों की धर्म-संस्कृति निर्धारित करनेवाला : बंधु तिर्की

रांची : पूर्व मंत्री, झारखण्ड सरकार की समन्वय समिति के सदस्य एवं झारखण्ड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की ने कहा है कि आदिवासियों की पहचान बतानेवाला आरएसएस कौन होता है? उन्होंने सवाल पूछा कि आखिर अपने किस अधिकार के तहत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आदिवासियों की धर्म एवं संस्कृति को निर्धारित करने की हैसियत रखता है? श्री तिर्की ने कहा कि आरएसएस के अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के संचार प्रमुख प्रमोद पेठकर का वह बयान बहुत अधिक आपत्तिजनक है जिसमें उन्होंने भारत के सभी जनजातियों को मूल रूप से हिंदू कहा है. श्री पेठकर के बयान को पूरी तरह अस्वीकार्य बताते हुए उन्होंने कहा कि यह आदिवासियों की अस्मिता के साथ ही उनकी पहचान को मिटाने की आरएसएस की वही पुरानी साजिश है जिस रास्ते पर वह निरंतर आगे बढ़ रहा है. श्री तिर्की ने कहा कि अपने एक बयान से ही संघ ने यह साबित कर दिया है कि आदिवासियों की मौलिक पहचान से संबंधित मांग सरना धर्मकोड का वह न केवल विरोधी है बल्कि संघ परिवार पूरी तरीके से आदिवासी पहचान और अस्मिता को समाप्त करने के लिये गहरी साज़िश के तहत योजनाबद्ध तरीके से काम कर रहा है. श्री तिर्की ने आरोप लगाया कि संघ के साथ ही भारतीय जनता पार्टी द्वारा राज्य में पैराशूट से उतारे गए नेताओं के द्वारा झारखण्ड एवं यहाँ की सामाजिक एकता और धार्मिक सद्भाव में जहर घोलने का काम किया जा रहा है. हर सप्ताह झारखण्ड के अलग-अलग स्थानों पर बयानबाजी करनेवाले हेमंत विश्व सरमा और शिवराज सिंह चौहान जैसे नेताओं की बातें जमीन से बिल्कुल कटी हुई है और उसका यहाँ के जनमानस से कोई मतलब नहीं है.

मास्टर्स टेनिस टूर्नामेंट : एकल में राजेंद्र सिंह, संजीव बने चैंपियन

रांचीः इंटरनेशनल टेनिस फेडरेशन (आई. टी. एफ) के तत्वाधान में ऑल इंडिया टेनिस एसोसिएशन (ए. आई. टी. ए) के मार्गदर्शन में झारखंड टेनिस एसोसिएशन द्वारा खेलगांव स्थित टेनिस स्टेडियम में आयोजित आईटीएफ वर्ल्ड टेनिस मास्टर्स टूर्नामेंट एमटी 100 का गुरूवार को समापन हुआ. अंतिम दिन 65 और 55 वर्ष आयु वर्ग के एकल और युगल के फाइनल मुकाबले खेले गए. एकल में राजेंद्र सिंह व संजीव, युगल में जितेंद्र कुमार नायर एवं मिहिर टोपनो व सन्याशी एवं राजेंद्र कि जोड़ी ने खिताब जीता. 14 सितंबर तक आयोजित प्रतियोगिता में 30 , 35 , 40 , 45 , 50 , 55 , 60 व 65 आयु वर्ग में सिंगल्स, डबल्स व मिक्स्ड डबल्स के मैच खेले गए, जिसमें 61 खिलाड़ियों ने भाग लिया. समापन के अवसर पर विभिन्न वर्ग के खिलाड़ियों को झारखंड टेनिस संघ के अध्यक्ष एवं जेएसएसपीएस के प्रशासनिक अधिकारी मुकुल टोप्पो ने ट्रॉफी दे कर सम्मानित किया. इस दौरान अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए नियुक्त व्हाइट बैच अंपायर सोमनाथ मन्ना समेत विपुल कुमार, मनोज सिंह, करण सिंह, स्नेहोजित साहा, गौरव गुरुंग एवं असफाक को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया.

Govt. of Jharkhand
OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER
Field Survey Division, Advance Planning, Road Construction Department, Nirupan Bhawan, 4th floor, 56-Set Chowk, Doranda, Ranchi-834002
e-mail--- eercdapfsdran-jhr@nic.in

e-Procurement Very Short Notice 2nd Call
e-Tender Reference No .-RCD/FSD /AP/ RAN/21/24-25 Dated 18.09.2024

1-	Name of Work	Consultancy services for Feasibility report for construction of 2-Lane configuration ROB beside the existing Kadru ROB , at Ranchi in the state of Jharkhand from Consultants empanelled in Category-II with the Road Construction Department, Government of Jharkhand vide letter no -3063(S) W.E dated 22-08-2022 are allowed to bid.
2-	Work completion time	15 Days
3-	Tentative Length	1.0 km
4-	Cost of Tender Document & Earnest Money Deposit (EMD)	**Cost of Tender Document**: - Rs 5,000/- (Rupees Five Thousand) (Non-Refundable) through online mode only. **EMD :-** Rs- 20,000/- (Rupees Twenty Thousand) through online mode only As per the Departmental Letter no.-4652(S) dated 06.10.2023, cost of tender document and Earnest Money Deposit will be received in online mode only through e-procurement portal (https://jharkhandtenders.gov.in) by Internet banking/ NEFT/ RTGS facility as per Standard Operating Procedure (SOP) issued by Information Technology & e-Governance Department, Government of Jharkhand vide letter no- 120 dated 03.10.2023.
5-	Date and Time of Publishing of Tender on official website	20.09.2024, 05.00 PM
6-	Last date and Time of submission of Tender (With Tender Fee and EMD)	27.09.2024, 12.30 PM
7-	Date and Timing of Bid opening	30.09.2024, 12.30 PM
8-	Tender Inviting Authority	Executive Engineer, Field Survey Division, Advance Planning, RCD, Ranchi, Nirupan Bhavan, 56 set Chowk, Doranda, Ranchi-834002, Mobile No-8051090751
9-	Mode of Bid Submission	e-Tendering (http://jharkhandtenders.gov.in)
10-	PR No-	334411 Road (24-25)

For further information please go through the website http://jharkhandtenders.gov.in

Executive Engineer
Field Survey Division,A.P
Road Construction Department,Ranchi .

PR 336061 (Road)24-25*D

e-Procurement Cell
OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER BUILDING CONSTRUCTION DEPARTMENT BUILDING DIVISION NO. – 1, RANCHI
(Behind State Guest House Morhabadi) Dindayal Nagar Booty Road Ranchi-834008
Short Term e-Procurement Notice
Date – 19-09-2024

Sl. No.	Tender Reference No.	Work Name	Amount (Rs.)	Completion Time
1	BCD/Div.No.-1, Ranchi/38/2024-25	Renovation of Soil Test Laboratory at Krishi Bhawan Campus, Kanke Road, Ranchi	5605200	Three Month
2	Start Date of Submission of Bids		26-09-2024 at 11.00 AM	
3	Last Date/Time of Submission of Bids		04-10-2024 at 11.00 AM	
4	Date/Time of Opening of Bid		05-10-2024 at 11.00 AM	
5	Helpline Number of e-procurement Cell		8527519262	
6	e-mail ID		eebcddiv1ranchi@gmail.com	
7	Note : - Cost of bidding document (Non Refundable) & Bid Security Shall be payable on online through http://Jharkhandtenders.gov.in Any Change can be on Website http://Jharkhandtenders.gov.in Any Other information can be on Website http://Jharkhandtenders.gov.in			

PR 335999 Building(24-25)D

Executive Engineer
Building Construction Department Building Division No. 1, Ranchi

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER,
BUILDING CONSTRUCTION DEPARTMENT
BUILDING DIVISION, HAZARIBAG
e-Procurement Cell

Very Short e-Procurement Notice(3rd Call)
Tender Reference No:-BCD/EE/HAZARIBAG/ 18 /2024-25 Date:-18-09-2024

Sl.No	Name of Work	Estimated Cost	Earnest Money	B.O.Q Rate	Time of completion
1	Construction of Kitchen Cum Store in NPS Kojiya Block- Keredari, District- Hazaribag	1944900/-	39000/-	5000/-	04 Month
2	Construction of Kitchen Cum Store in UPG. P.S ,Dhamansaria , Block-Churchu , District-Hazaribag	1944900/-	39000/-	5000/-	04 Month

A.	Date of Publication of Tender on website	20-09-2024
B.	Last date/Time for receipt of bids	26-09-2024 03.00 PM
C.	Name & address of office Inviting tender	Office of the Executive Engineer, Building Construction Department, Building Division,Hazaribag
D.	Contact no. of Procurement officer	9348952485
E.	Helpline number of e-Procurement cell	**06546-225723**

Further details and subsequent amendments can be seen on website http://jharkhandtenders.gov.in

Nodal Officer, e-Procurement Cell,
Office of the Executive Engineer,
Building Construction Department,
Building Division, Hazaribag

PR 336116 Building(24-25)D

सम्पादकीय

कोयलांचल संवाद 4

रांची, शुक्रवार, 20 सितंबर, 2024

www.koylanchalsamvad.com

पत्रवार के इस दौर में कोई पिछड़ तो नहीं रहा

एक समय था जब पत्राचार कुशलक्षेम जानने से लेकर प्रेम और स्नेह को जतलाने के लिए किया जाता था। इससे पहले राजा-महाराजाओं के समय में संधी या युद्ध की धमकी के लिए पत्रों का अदान-प्रदान होता था। खास बात यह है कि तब पत्र जिसे लिखा जाता था वही पत्र का जवाब देता था, भले ही वह पढ़ा-लिखा हो या न हो। अब चूंकि दुनियां अत्याधुनिक दौर में प्रवेश कर चुकी है। अब कागज व कलम-दवात की जगह इंटरनेट के साथ ही कंम्प्यूटर, लेपटॉप व मोबाईल जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से संदेशों का अदान-प्रदान ज्यादा होने लगा है। ऐसे में समय की बचत के साथ ही पत्र सही जगह पहुंचेगा या नहीं इसकी समस्या भी अब जाती रही है। बावजूद इसके राजनीतिक गलियारे में पत्रवार या पत्रों की सियासी जंग जारी है। इस पत्रवार में एक बात जरुर देखने को मिल रही है कि जिसे पत्र लिखा जाता है, वह जवाब दे या न दे, लेकिन दूसरे लोग उसके जवाब में लंबा-चौड़ा पत्र लिखकर सामने वाले को पस्त करने में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रख रहे हैं। यकीन नहीं आता तो कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लिखे गए पत्र के जवाब में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के पत्र को ही देख लें। वैसे भी भारतीय राजनीति उस दौर में है जहां भाषा और सुचिता का कोई मेल ही नहीं है। जिसके जो मर्जी आता है बोल देता है। इससे लोकतंत्र भी आहत होता है। ऐसी भाषा जो दूसरों को आहत करे, लोगों को मरने-मारने पर उतारु कर दे, इसका अहिंसावादी देश भारत में क्या काम हो सकता है? लेकिन ऐसी भाषा का इस्तेमाल सियासी गलियारे में खूब हो रहा है। जिसे रोकने की जिम्मेदारी सत्ता पक्ष और विपक्ष के शीर्ष नेतृत्व की है। इससे इंकार नहीं किया जा सकता, लेकिन देखने में आ रहा है कि इसे रोकना तो दूर बढ़ाने के प्रयास ज्यादा हो रहे हैं।

दरअसल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को कांग्रेस के राज्यसभा सांसद और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने जो पत्र लिखा उसमें उन्होंने लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी को एनडीए नेताओं के द्वारा आतंकवादी कहे जाने पर आपत्ति दर्ज कराते हुए इस तरह के बयानों पर लगाम लगाए जाने की बात कही। पत्र में उन्होंने लिखा कि, मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ध्यान एनडीए नेताओं द्वारा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के खिलाफ की गई असभ्य टिप्पणियों की ओर आकर्षित करना चाहता हूं...। मैं आपसे आग्रह करता हूं कि अनुशासन और शिष्टाचार के जरिए ऐसे नेताओं पर लगाम लगाएं...ऐसे बयानों के लिए सख्त कानूनी कार्रवाई की जानी चाहिए ताकि भारत की राजनीति को पतन की ओर जाने से रोका जा सके। कांग्रेस अध्यक्ष ने अपने पत्र की भाषा को संयमित रखा। पर इससे क्या, क्योंकि उन नेताओं को बोलने का अवसर तो मिल ही गया, जो हर मुद्दे पर अपनी राय रख कर देश और दुनियां का ध्यान अपनी ओर खींचना चाहते हैं, ताकि उनकी राजनीति किसी भी कीमत पर चमकती रहे। कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे के पत्र का जवाब प्रधानमंत्री ने फिलहाल तो नहीं दिया, लेकिन भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने एक लंबा पत्र बतौर जवाब लिखा और सख्त लहजे में बतला दिया कि कांग्रेस और उसके नेता यथार्थ और सत्य से कोसों दूर हैं। पत्र के जवाब में सवाल करते हुए भाजपा अध्यक्ष ने पूछा कि क्या आप राहुल गांधी की करतूत भूल गए? राहुल गांधी जाति जनगणना और आरक्षण के नाम पर भड़का रहे हैं। यही नहीं राहुल गांधी ने कई बार पीएम मोदी का अपमान किया। सोनिया गांधी ने तो पीएम को मौत का सौदागर कहा था। नड्डा ने पत्र में कहा है कि कांग्रेस ने कई बार पीएम का अपमान किया है। कांग्रेस ने देश को शर्मसार किया है।

बात इतनी सी है कि भूतपूर्व नेताओं और वर्तमान नेताओं को अपशब्द कहने से बचा जाना चाहिए, फिर चाहे वह सत्ता पक्ष हो या विपक्ष। पर सभी जानते हैं कि ऐसा करना मुमकिन नहीं है। दरअसल इस कलयुग की राजनीति रसातल की ओर जा रही है। जहां चुनाव जीतना मुख्य लक्ष्य है। इसके लिए तमाम लोकतांत्रिक मूल्य और लाज-शर्म ताक पर रख मैदान मार लेना ही वीरता की निशानी मानी जाती है। आज की राजनीति साम, दाम, दंड-भेद से आगे बढ़ चुकी है, जहां सब जायज है, बशर्ते जीत तय हो। ऐसे में पत्रवार होना कोई बड़ी बात तो नहीं है। बावजूद इसके कहना तो यही है कि पत्रवार नहीं बल्कि स्वस्थ पत्राचार होना चाहिए, जिससे देश की अन्य मूल-भूत और संकट पैदा करने वाली बड़ी समस्याओं का निदान निकल सके। भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए समृद्धि आवश्यक है और यह तभी संभव है, जबकि अनेकता में एकता फलिभूत हो। जिस प्रकार बड़ी लाइन को मिटाकर छोटी लाइन को बड़ा नहीं किया जा सकता, ठीक उसी प्रकार किसी के चरित्र का हनन करके अपने दागदार दामन को उजला नहीं किया जा सकता है। यह समझने वाली बात है कि जब दूसरे पर आप एक अंगुली उठाते हैं तो बाकी उंगलियां आपकी अपनी ओर हो जाती हैं। मतलब साफ है कि ऐसे तमाम बयानों और भाषणों पर रोक लगना चाहिए जिससे किसी का चिरहरण होता हो और कब्र खोदने की बातें की जाती हों, क्योंकि हिंसा तो हिंसा होती है, फिर चाहे वह शारीरिक तौर पर की गई हो या जुबानी या पत्र लिखकर की जा रही हो। लोकतंत्र में इसे किंचित भी प्रवेश नहीं मिलना चाहिए। अंततः इस पत्रवार को यहीं रोकें और पत्राचार से समस्या का समाधान निकालें, जिसकी देश को दरकार है।

राम नाम की महिमा अपरम्पार

भगवान राम के नाम का पहला अक्षर रा है, जिसकी विभिन्न व्याख्याएँ हैं। प्राचीन संस्कृतियों में, रा अक्सर सूर्य देवता से जुड़ा होता था, जो प्रकाश, ऊर्जा और जीवन शक्ति का प्रतिनिधित्व करता था। भगवान राम के संदर्भ में, रा आत्मज्ञान और परम सत्य का प्रतीक है। विज्ञान हमें सिखाता है कि प्रकाश पृथ्वी पर सभी जीवन के लिए मौलिक है, प्रकाश संश्लेषण को चलाता है और जीवित रहने के लिए आवश्यक ऊर्जा प्रदान करता है। इसी तरह, आत्मज्ञान एक रूपक समझ है जो स्पष्टता और ज्ञान लाती है। भगवान राम ने अपने दिव्य गुणों और अनुकरणीय चरित्र के साथ ज्ञान का संचार किया, धर्म का मार्ग प्रशस्त किया और अपने अनुयायियों को ज्ञान की ओर अग्रसर किया।उनके नाम का दूसरा अक्षर मा है, जिसकी कई तरह से व्याख्या की जा सकती है। माँ पोषण करने वाली स्त्री ऊर्जा या दिव्य मातृ पहलू का प्रतीक है। यह प्रेम, करुणा और सुरक्षा का प्रतिनिधित्व करता है, ये गुण अक्सर मातृत्व से जुड़े होते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, मा की अवधारणा को प्रकृति के नियमों और ब्रह्मांड में उनकी पोषण संबंधी भूमिका से जोड़ा जा सकता है। जिस तरह एक माँ अपने बच्चे की प्यार से देखभाल करती है, उसी तरह प्रकृति के नियम ब्रह्मांड को नियंत्रित और संरक्षित करते हैं, जिससे इसका सुचारू संचालन सुनिश्चित होता है।इसके अलावा, मा को पदार्थ की धारणा से जोड़ा जा सकता है। भौतिकी में, पदार्थ को ऐसी किसी भी चीज़ के रूप में परिभाषित किया जाता है जो स्थान घेरती है और जिसमें द्रव्यमान होता है। इसमें परमाणु, अणु और उपपरमाण्विक कण शामिल हैं जो भौतिक दुनिया के निर्माण खंड बनाते हैं। भगवान राम के नाम में रा और मा के बीच तालमेल को अस्तित्व के आध्यात्मिक और भौतिक पहलुओं के बीच अंतर्संबंध के प्रतिनिधित्व के रूप में देखा जा सकता है। यह सुझाव देता है कि जीवन के आध्यात्मिक और भौतिक दोनों आयामों को पहचानने और उनमें सामंजस्य बिठाकर सच्चा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।इसलिए, भगवान राम के नाम में ज्ञान, प्रकाश, ऊर्जा, प्रेम और सद्भाव का एक शक्तिशाली ब्रह्मांडीय मिश्रण समाहित है। इन विशेषताओं को अपनाकर, भगवान राम आध्यात्मिकता और वैज्ञानिक समझ के पूर्ण मिलन का अनुपम उदाहरण देते हैं, यह दिखाते हुए कि दोनों एक साथ रह सकते हैं और एक दूसरे के पूरक हो सकते हैं और सतमार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।इसके अलावा, भगवान राम नाम का हिंदू महाकाव्य रामायण में भी बहुत महत्व है, जहां भगवान राम को एक आदर्श राजा और एक महान योद्धा के रूप में दर्शाया गया है। उनका नाम एक ऐसे व्यक्ति का प्रतीक है जो दृढ़, न्यायप्रिय और धर्मात्मा है।

इन गुणों का वैज्ञानिक अनुप्रयोग नैतिकता के क्षेत्र में पाया जा सकता है, जहाँ न्याय, सत्यनिष्ठा और नैतिक आचरण के सिद्धांत किसी भी वैज्ञानिक प्रयास में महत्वपूर्ण हैं। वैज्ञानिक, भगवान राम की तरह, ज्ञान और समझ की खोज में सत्य, धार्मिकता और सद्भाव के लिए प्रयास करते हैं।प्रत्येक अक्षर के प्रतीकवाद की जांच करके भगवान राम के नाम के पीछे के वैज्ञानिक अर्थ को समझा जा सकता है। यह एक अनुस्मारक है कि विज्ञान और आध्यात्मिकता मानवता की भलाई के लिए एक-दूसरे के पूरक और संवर्द्धन के साथ सहज रूप से सह-अस्तित्व में रह सकते हैं।रा आत्मज्ञान, प्रकाश और ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि मा पोषण, प्रेम और अस्तित्व के भौतिक आयाम का प्रतीक है। साथ में, ये शब्दांश गहन ब्रह्मांडीय सामंजस्य और आध्यात्मिकता और विज्ञान के बीच अंतर्संबंध को समाहित करते हैं। भगवान राम का नाम नैतिक आचरण, सत्य और धार्मिकता के प्रतीक के रूप में खड़ा है, जो वैज्ञानिक गतिविधियों में आवश्यक सिद्धांत हैं।

विपक्ष पर दबाव का केजरीवाली आतिशी दांव

> अरविंद केजरीवाल ने महाराष्ट्र और झारखंड के साथ ही दिल्ली विधानसभा का भी चुनाव कराने की मांग की है, उनकी यह मांग अस्वीकृत हो गयी है, फिर भी अगले साल फरवरी के पहले पखवाड़े तक दिल्ली में चुनाव कराने होंगे। केजरीवाल ने दिल्ली के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा सोची-समझी रणनीति के तहत ही दिया है, ताकि आगामी विधानसभा चुनाव को अपनी ईमानदारी के जनमत संग्रह के रूप में दर्शा सकें। उनका मकसद भाजपा सरकार द्वारा दर्ज भ्रष्टाचार के आरोपों का मुकाबला करने तथा खुद को राजनीतिक प्रतिशोध के शिकार के रूप में दिखा जनता की सहानुभूति अर्जित करना भी है। लेकिन इस तरह की राजनीतिक चतुराई में अगर कोई आधार नहीं होता, कोई तथ्य नहीं होता।

ललित गर्ग

अरविंद केजरीवाल राजनीति के चतुर खिलाड़ी हैं। उन्होंने राजनीति में कुछ मौलिक प्रतिस्थापनाएं की है, बने-बनाये रास्तों पर न चलकर नये रास्ते इजाद किये हैं। वे संकटों को अवसर में बदलने वाले करिश्माई व्यक्तित्व भी हैं। उनकी राजनीति अनेक विरोधाभासों एवं विसंगतियों से भरी रही है, उनके व्यवहार एवं वचनों में विरोधाभास स्पष्ट परिलक्षित होते रहे हैं, लेकिन ये ही विरोधाभास उनकी राजनीतिक चमक का कारण भी बने हैं। क्योंकि राजनीति में सब जायज माना जाता है। सर्वोच्च न्यायालय से सशर्त जमानत मिलने से खुद को बंधा महसूस करते हुए उन्होंने इस्तीफे का धारदार दांव चलाकर राजनीतिक जगत में एक हलचल पैदा कर दी। वहीं पार्टी में संभावनाओं भरे अनेक चेहरों के होने के बावजूद उन्होंने आतिशी को दिल्ली का मुख्यमंत्री बनाया, जबकि वह वरिष्ठता क्रम में निचले पायदान पर खड़ी थी, लेकिन केजरीवाल ऐसे चौंकाने वाले फैसले पहले भी लेते रहे हैं। लेकिन इस तरह वे जनादेश का मजाक भी बनाते रहे हैं तो संवैधानिक स्थितियों की धता भी करते रहे हैं।

अरविंद केजरीवाल साहस के कदम एवं चतुराई की आंख लेकर परम्परागत राजनीति की जंजीरों को तोड़कर आगे निकलते रहे हैं। संभावनाएं की जा रही थी कि केजरीवाल आम आदमी पार्टी के किसी वरिष्ठ नेता को मुख्यमंत्री बना सकते हैं। अधिक संभावनाएं उनकी पत्नी सुनीता केजरीवाल को मुख्यमंत्री बनाये जाने की थी। क्योंकि क्षेत्रीय दलों में किसी राजनीतिक या कानूनी संकट के चलते परिवार के ही किसी सदस्य को सत्ता की बागडोर सौंप देने परंपरा रही है। ताकि स्थितियां सामान्य होने पर फिर मुख्यमंत्री की गद्दी आसानी से वापस ली जा सके। इसके अनेक उदाहरण है, जिनमें बिहार में चारा घोटाले में घिरने के बाद लालू यादव ने पत्नी राबड़ी देवी को सत्ता की बागडोर सौंपी थी। बहरहाल, केजरीवाल ने जेल से बाहर आते ही अपने तरकश से जो तीर चले हैं, उनकी धार एवं तीक्ष्णता को महसूस किया जा सकता है। इन तीरों से हरियाणा व जम्मू कश्मीर चुनाव समेत अन्य राष्ट्रीय मुद्दों में उलझी भाजपा व कांग्रेस पर केजरीवाल ने मनोवैज्ञानिक राजनीतिक दबाव तो बना ही दिया है। हरियाणा में स्वतंत्र चुनाव लड़ने का निर्णय लेकर उन्होंने सत्ता के गठन में स्वयं को एक ताकतवर मोहरे के रूप में प्रस्तुत करने का चतुराई भरा खेल भी खेला है। दिल्ली में भी उन्होंने अपनी निस्तेज होती स्थितियों को मजबूती दी है।

दरअसल, केजरीवाल भ्रष्टाचार के विरोध में आन्दोलन के योद्धा के रूप में वर्ष 2014 के इस्तीफे के दांव की तरह 2015 में आम आदमी पार्टी को मिली भारी जीत का अध्याय दोहरा देना चाहते हैं। लेकिन इस बार की स्थितियां खुद भ्रष्टाचार में लिप्त होने से खासी चुनौतीपूर्ण व जोखिमभरी हैं। निस्संदेह, यह दांव मुश्किल भी पैदा कर सकता है क्योंकि पिछले लोकसभा चुनाव में पार्टी को एक भी सीट नहीं मिली थी। भले ही केजरीवाल अपने को, समय को पहचानने वाला साबित कर रहे हो, लेकिन वे अपने देश को, अपने पैरों की जमीन को एवं राजनीतिक मूल्यों को नहीं पहचान रहे हैं। 'आप' की राजनीति नियति भी विसंगति का खेल खेलती रहती है। पहले जेल जाने वालों को कुर्सी मिलती थी, अब कुर्सी वाले वाले जेल जा रहे हैं। यह नियति का व्यंग्य है या सबक? आप के शीर्ष नेताओं के लिये पहले श्रद्धा से सिर झुकता था अब शर्म से सिर झुकता है। कैसे आप की राजनीति इस शर्म के साथ जनता से मुखातिब होगी और जनता क्या जबाव देगी, यह भविष्य के गर्भ में है।

जिन अप्रत्याशित हालात में एवं बहुत कम समय के लिये आतिशी को दिल्ली का मुख्यमंत्री बनाया गया है, वे बेहद चुनौतीपूर्ण हैं। विधानसभा चुनावों से ठीक पहले राज्य में नेतृत्व परिवर्तन के कई उदाहरण हाल के वर्षों में दिखे हैं, लेकिन यह मामला उन सबसे अलग है। पिछले करीब दो साल न केवल आम आदमी पार्टी के लिए बल्कि दिल्ली सरकार के लिए भी इस मायने में चुनौतीपूर्ण रहे कि एक-एक कर उसके कई बड़े नेता और मंत्री जेल भेज दिए गए। दिल्ली का विकास मुफ्त की संस्कृति की भेट चढ़कर विकास को अवरुद्ध किये हुए हैं। मुख्यमंत्री केजरीवाल के जेल जाने के बाद संकट और गहराया। इन संकटपूर्ण हालातों में आतिशी ने पार्टी का प्रभावशाली ढंग से बचाव किया। उन्होंने सौरभ भारद्वाज और अन्य साथियों के साथ मिलकर सड़क से लेकर मीडिया तक आम आदमी पार्टी की जंग लड़ी, उससे कार्यकर्ताओं में उनकी एक जुझारू छवि बनी है। ऐसे में, उनसे उम्मीदें भी बढ़ गई हैं। क्या अतिशी अपने राजनीतिक कौशल से यह पद पाया है या वे केजरीवाल की राजनीति का एक मोहरा-भर बनी है? उनके हिस्से में यह पद तब आया जब पार्टी के दो सबसे बड़े नेताओं-अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया-ने कह दिया कि वे नए सिरे से जनादेश हासिल करने के बाद ही पद पर बैठेंगे। अगर पार्टी जनादेश हासिल नहीं कर पाती तब तो उन्हें पद छोड़ना ही पड़ेगा, अगर पार्टी चुनाव जीतती है तब भी मुख्यमंत्री पद से उनका हटना लगभग तय है। इन स्थितियों में कांटोंभरा ताज पहनकर उनके कामकाज एवं प्रभावी नेतृत्व का क्या औचित्य है? अतिशी एक वफादार एवं जिम्मेदार नेता के रूप में अपनी छाप छोड़ने में कामयाब रही है। पार्टी के लिये उनके समर्पण एवं अटूट निष्ठा की मुद्रा विधायक दल की नेता चुने जाने के वक्त भी सामने आयी, जब आतिशी ने सार्वजनिक रूप से यह कहा कि वह सिर्फ अगले चुनाव तक पदभार संभाल रही हैं, पार्टी के भीतर किसी नए केंद्र की आशंका को तिरोहित करना तो है ही, कहीं न कहीं यह वरिष्ठ नेताओं की आहत महत्वाकांक्षाओं पर मरहम रखना भी है। आतिशी का यह पहला कार्यकाल है, और किसी गैर-राजनीतिक पारिवारिक पृष्ठभूमि की महिला का पांच साल के भीतर यूं मुख्यमंत्री की कुरसी तक पहुंचने का यह विरल उदाहरण भी है। अतिशी दिल्ली जैसे सुबे की मुखिया बनी हैं, जिस दिल्ली ने सुषमा स्वराज और शीला दीक्षित जैसी दिग्गज महिला नेताओं का शासन देखा है। कुल मिलाकर, दिल्ली में शुरू हुए आप के इस नए प्रयोग और उसके नतीजों पर सबकी नजरें होंगी। अरविंद केजरीवाल ने महाराष्ट्र और झारखंड के साथ ही दिल्ली विधानसभा का भी चुनाव कराने की मांग की है, उनकी यह मांग अस्वीकृत हो गयी है, फिर भी अगले साल फरवरी के पहले पखवाड़े तक दिल्ली में चुनाव कराने होंगे। केजरीवाल ने दिल्ली के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा सोची-समझी रणनीति के तहत ही दिया है, ताकि आगामी विधानसभा चुनाव को अपनी ईमानदारी के जनमत संग्रह के रूप में दर्शा सकें। उनका मकसद भाजपा सरकार द्वारा दर्ज भ्रष्टाचार के आरोपों का मुकाबला करने तथा खुद को राजनीतिक प्रतिशोध के शिकार के रूप में दिखा जनता की सहानुभूति अर्जित करना भी है। लेकिन इस तरह की राजनीतिक चतुराई में अगर कोई आधार नहीं होता, कोई तथ्य नहीं होता, कोई सच्चाई नहीं होती तो दूसरों के लिए खोदे गए खड्डों में स्वयं एक दिन गिर जाने की स्थिति बन जाती है।

क्वॉड स्ट्रैटेजिक फोरम पर रणनीतिक सहयोग को मज़बूत करेंगे

> जब हम अपने करीबी दोस्तों और साझेदारों के साथ मिलकर काम करते हैं तो हम हमेशा बेहतर होते हैं। इसने आगे कहा, इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य देशों के बीच रणनीतिक सहयोग को मजबूत करना, एक स्वतंत्र और खुला हिंद प्रशांत क्षेत्र सुनिश्चित करना और इस क्षेत्र के सहयोगियों को ठोस लाभ प्रदान करना है। इस बैठक में स्वास्थ्य सुरक्षा, प्राकृतिक आपदाओं पर प्रतिक्रिया, समुद्री सुरक्षा, उच्च गुणवत्ता वाले बुनियादी ढांचे, महत्वपूर्ण और उभरती हुई तकनीक, जलवायु और स्वच्छ उर्जा और साइबर सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर फोकस किया जाएगा। साथियों बात अगर हम वैश्विक अशांति के बीच हो रहे क्वॉड शिखर सम्मेलन की करें तो पीएम की यात्रा का महत्व इस बात से और बढ़ जाता है कि क्षेत्रीय स्थिरता जैसे मुद्दों पर सदस्य देश गंभीरता से चर्चा करेंगे।

किशन भावनानी

वैश्विक स्तरपर दुनियां के देशों में आपस के समूह से बनाए गए अनेक अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की उपस्थिति का आगाज आज दुनियां महसूस करती है। इसलिए हम देखते हैं कि भारत, न सिर्फ़ हर एक अंतरराष्ट्रीय मंच का एक हिस्सा रहा है बल्कि आज की स्थिति में भारत का दम और प्रतिष्ठा बढ़ गई है। भारत अफ्रीकी यूनियन, ग्लोबल साउथ व अपने पड़ोस में एक मजबूत अर्थव्यवस्था वाला विकसित देश की ओर बढ़ने वाली महत्वपूर्ण हस्ती हो चला है, जिसके कारण भारत का दबदबा बड़ा है, यही कारण है कि जब भारत बोलता है तो विश्व ध्यान से सुनता है। यह इससे अंदाज लगाया जा सकता है कि भारतीय पीएम का नाम संयुक्त राष्ट्र की तरफ से जारी यूनाइटेड जनरल असेंबली के 79 वें सत्र के आम बहस के वक्ताओं की अंतिम सूची में उन लोगों में शामिल था जो 26 सितंबर 2024 को हाई लेवल मीटिंग को संबोधित करेंगे,परंतु अभी असमंजस बरकरार है।परंतु अब विदेश मंत्रालय द्वारा पीएम के अधिकृत दौरे का प्रोग्राम जारी कर 21-23 सितंबर 2024 का विवरण जारी कर दिया है, इसलिए अब माननीय विदेश मंत्री 28 सितंबर 2024 को आम बहस को संबोधित कर सकते हैं व अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन अपने कार्यकाल का अंतिम संबोधन करेंगे। चूंकि चौथा क्वॉड शिखर सम्मेलन 21 सितंबर 2024 को अमेरिका में है,जिसमें जलवायु परिवर्तन, सुरक्षा चिंताओं,इंफ्रास्ट्रक्चर पर रणनीतिक सहयोग मुद्दों पर चर्चा तथा भारत 2025 में क्वॉड की मेजबानी व अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के चलते पीएम का 21-23 सितंबर 2024 अमेरिका दौरा कई मायनों में खास रहेगा, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से,इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,क्वॉड स्ट्रैटेजिक फोरम पर अमेरिका भारत ऑस्ट्रेलिया और जापान रणनीतिक संबंधों को मजबूत करेंगे।

साथियों बात अगर हम भारतीय पीएम 21 से 23 सितंबर 2024 को अमेरिका यात्रा के दौरान चौथे क्वॉड शिखर सम्मेलन में शामिल होने की करें तो, विदेश मंत्रालय ने कहा कि यह बैठक डेलावेयर के विलमिंगटन में आयोजित होगी और इसकी मेजबानी अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन करेंगे। इनके अलावा, पीएम न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के एक कार्यक्रम को भी संबोधित करेंगे। यह समिट काफी अहम माना जा रहा है, जहां सदस्य देश भारत, अमेरिका जापान और ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं।इस बैठक के दौरान, क्वाड के नेताओं द्वारा पिछले एक साल में हासिल की गई प्रगति कीसमीक्षा की जाएगी और आगे का प्लान तय की जाएगा। यह प्लान खासकर इंडो-पैसिफिक क्षेत्र के डेवलपमेंट के लिए अहम साबित होगा। पीएम न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित करेंगे। इस समिट में क्वाड सदस्य देशों के बीच पिछले एक वर्ष की प्रगति की समीक्षा और आने वाले समय के लिए प्लान तय किए जाएंगे।पीएम की यात्रा का महत्व इस बात से और बढ़ जाता है कि क्षेत्रीय स्थिरता जैसे मुद्दों पर सदस्य देश गंभीरता से चर्चा करेंगे। मसलन, यूरोपी और मिडिल ईस्ट में चल रहे युद्ध के लिहाज से यह बैठक और भी अहम है, जहां गाजा में भारी संख्या में मासूम जानें जा रही हैं।हालांकि,क्वाड एक मिलिट्री सहयोग संगठन नहीं है, बल्कि इसको आर्थिक सुरक्षा, पर्यावरण में सुधार और अन्य पहलुओं पर फोकस करने के लिए डिजाइन किया गया है। अगला 2025 का क्वॉड समिट भारत में होगा।न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित करते हुए, पीएम वैश्विक मुद्दों पर भारत की स्थिति और भारत का नजरिया पेश करेंगे।इस संबोधन में अन्य देशों के साथ साझेदारी, वैश्विक चुनौतियों और विभिन्न मुद्दों पर भारत के विजन को सामने रखेंगे क्वाड के अगले समिट की मेजबानी भारत करेगा। साथियों बात अगर कर हम क्वॉड सम्मिट को समझने की करें तो,क्वाडीलेटरल सिक्योरिटी डायलाग , क्वाड एक इनफॉर्मल स्ट्रैटेजिक फोरम मंच है, जिसमें अमेरिका, भारत, ऑस्ट्रेलिया और जापान शामिल हैं। क्वाड की स्थापना 2007 में की गई थी। जापान के पूर्व पीएम शिंजो आबे 2007 में क्वाड के गठन का विचार रखने वाले पहले व्यक्ति थे।ऑस्ट्रेलिया के पीएम के कार्यालय ने बयान जारी किया। बताया गया किअल्बनीज शिखर सम्मेलन में क्वाड के सकारात्मक और व्यावहारिक एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए क्षेत्रीय मुद्दों और अवसरों पर चर्चा करेंगे। राष्ट्रपति ने कहा,मैं हिंद-प्रशांत क्षेत्र के सामने आने वाली चुनौतियों और भागीदारी को मजबूत करने पर चर्चा करने के लिए अपने क्वाड भागीदारों के साथ बैठक करने के लिए तत्पर हूं। उन्होंने यह भी कहा कि ऑस्ट्रेलिया ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र के भविष्य के लिए गहराई से निवेश किया है। उन्होंने आगे कहा कि ऑस्ट्रेलिया,अमेरिका,भारत और जापान एक ऐसे क्षेत्र के लिए एक दृष्टिकोण साझा करते हैं, जो स्वीकृत नियमों और मानदंडों द्वारा शासित होता है,जहां सभी देश सहयोग,व्यापार और कामयाब हो सकते हैं। इसके अलावा राष्ट्रपति अल्बनीज ने कहा कि हम जिस तरह के क्षेत्र में रहना चाहते हैं, उसे आकार देने के लिए मिलकर काम करेंगे। जब हम अपने करीबी दोस्तों और साझेदारों के साथ मिलकर काम करते हैं तो हम हमेशा बेहतर होते हैं। इसने आगे कहा, इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य देशों के बीच रणनीतिक सहयोग को मजबूत करना, एक स्वतंत्र और खुला हिंद प्रशांत क्षेत्र सुनिश्चित करना और इस क्षेत्र के सहयोगियों को ठोस लाभ प्रदान करना है। इस बैठक में स्वास्थ्य सुरक्षा, प्राकृतिक आपदाओं पर प्रतिक्रिया, समुद्री सुरक्षा, उच्च गुणवत्ता वाले बुनियादी ढांचे, महत्वपूर्ण और उभरती हुई तकनीक, जलवायु और स्वच्छ उर्जा और साइबर सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर फोकस किया जाएगा। साथियों बात अगर हम वैश्विक अशांति के बीच हो रहे क्वॉड शिखर सम्मेलन की करें तो पीएम की यात्रा का महत्व इस बात से और बढ़ जाता है कि क्षेत्रीय स्थिरता जैसे मुद्दों पर सदस्य देश गंभीरता से चर्चा करेंगे।मसलन, यूरोपी और मिडिल ईस्ट में चल रहे युद्ध के लिहाज से यह बैठक और भी अहम है, जहां गाजा में भारी संख्या में मासूम जानें जा रही हैं।हालांकि, क्वाड एक मिलिट्री सहयोग संगठन नहीं है, बल्कि इसको आर्थिक सुरक्षा, पर्यावरण में सुधार और अन्य पहलुओं पर फोकस करने के लिए डिजाइन किया गया है।

सरदार पटेल ने मैत्री व वफादारी के आश्वासन दिया था नेहरू को

एल.एस. हरदेनिया

सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा 28 मार्च 1950 को जवाहरलाल नेहरू को लिखे गए पत्र के कुछ अंश, जिनमें वे नेहरूजी को अपनी पूरी वफादारी और मैत्री का आश्वासन देते हैं। जो आपने बापू की मृत्यु के पहले लिखा वह मेरे मस्तिष्क में भी प्रभावशाली रूप में दिख रहा है। परंतु मेरी बापू के साथ जो बातचीत हुई थी और उस बातचीत में उन्होंने अपनी राय प्रकट की थी वह बहुत महत्वपूर्ण है। बापू ने कहा था कि मैं और तुम मिलकर काम करें। क्योंकि यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो वह कदापि देश के हित में नहीं होगा। मैंने पूरी कोशिश की है कि मैं बापू के इन अंतिम शब्दों के अनुसार चलने की कोशिश करूं। बापू के इन शब्दों को याद करते हुए मैंने पूरी कोशिश की है कि मैं आपके हाथों को मजबूत करूं। ऐसा मैंने जितना संभव हो सकता है वह किया। ऐसा करते हुए मैंने अपने विचारों को हर संभव ढंग से बताने की कोशिश की। मैंने तुम्हें पूरी वफादारी के साथ समर्थन किया। ऐसा करते समय मैंने अपने पर पूरा नियंत्रण रखा। इन पिछले दो वर्षों में मैंने ऐसा कोई भी रास्ता नहीं अपनाया जो तुम्हारे द्वारा अपनाई गई नीति के विरूद्ध हो। इस दरम्यान मेरे और तुम्हारे बीच में कुछ मतभेद भी हुए। इस तरह के मतभेद स्वभाविक हैं। परंतु इन मतभेदों के बावजूद हमने मिलाजुला रास्ता अपनाया। इस दरम्यान अपने विचारों को स्पष्ट रूप से बताते हुए मैंने कोई भी ऐसा काम नहीं किया जो तुम्हारे द्वारा निर्धारित नीतियों के विरूद्ध हो। जहां तक हमारे बीच कुछ मतभेदों का सवाल है मुझे ऐसा याद नहीं पड़ रहा है जो सेक्युलर उद्देश्यों के विरूद्ध हो। मैं यह कहने की स्थिति में हूँ कि हम दोनों के बीच इस मुद्दे पर कभी मतभेद हुआ हो। मैं भी पूरी तरह इस राय का हूँ कि अल्पसंख्यकों को पूरा संरक्षण दिया जाये और उनके विरूद्ध की जाने वाली हिंसा जो हमारे देश के भीतर हो या बाहर हो, हम पूरी तरह से उसकी भर्त्सना करें और उसे रोकें। जहां तक विदेश नीति का सवाल है मुझे याद नहीं पड़ता कि इस मामले में मैंने कभी भिन्न मत जारी किया हो, सिवाए उस समय जब कैबिनेट में ऐसे किसी विषय पर चर्चा हुई हो। मैंने ऐसी राय से तुमको अवगत कराया है। वह भी कुछ विशेष नीति के संदर्भ में। शायद मैं यह कहने की स्थिति में हूँ कि विदेशी मामलों में मैंने तुम्हारी नीति में किसी किस्म की बाधा पहुंचाई हो। यह संभव है कि हमने प्रायवेट तौर पर किसी विशेष मामले में तुमसे असहमति प्रगट की हो, पर वह असहमति एक विशेष मुद्दे तक ही सीमित रही। परंतु मैं सोचता हूं कि तुम भी इस राय के हो कि प्रायवेट में भी असहमति जाहिर न करें। मैं भी इस राय का हूं कि हमारे मिलेजुले कदम देश की प्रगति के लिये आवश्यक हैं। सच पूछा जाये तो बापू ने जो 1948 के जनवरी माह में कहा था वो आज भी पूरी तरह से उचित है। इसलिये मैंने उस संदर्भ में तुमसे अपील की थी कि तुम कोई भी ऐसा कदम न उठाओ जिसमें पद को छोड़ने की संभावना हो। क्योंकि ऐसा कोई भी कदम कदापि राष्ट्र के हित में नहीं होगा। इस तरह का कोई भी कदम देश के लिए पूरी तरह हानिप्रद होगा और इसलिए मैं सदा सोचता रहा हूं कि मुझे तुम्हारा पूरा विश्वास प्राप्त है। मेरी कदापि यह इच्छा नहीं है कि मैं किसी पद पर रहूं, यदि मैं बापू द्वारा दिये गये मिशन को पूरा करने की स्थिति में नहीं हूं। बापू ने मुझे स्पष्ट कहा था कि मैं तुम्हारे हाथों को मजबूत करूं और मैं गलती से भी यह बात महसूस करने कि स्थिति में नहीं हूँ कि तुम्हारे प्रति मेरी वफादारी नहीं है, या तुम यह सोचो कि तुम्हारे द्वारा बनाई गई नीतियों के पालन में मैं किसी किस्म का रोड़ा बन रहा हूं।

रिन्यूबल एनर्जी सेक्टर के उपकरणों पर टाटा पावर का जोर, ज्यादा मैन्युफैक्चरिंग होने पर निर्यात का भी प्लान!

टाटा पावर अपने नवीकरणीय ऊर्जा कारोबार में आपूर्ति श्रृंखला की चुनौतियां दूर करने के लिए प्रमुख कलपुर्जों का व्यापक स्तर पर उत्पादन करने की संभावना तलाश रही है। इसके जरिये वह समूह की सभी नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं की जरूरतों को पूरा करेगी। यदि घरेलू जरूरत से ज्यादा विनिर्माण होता है तो उसका निर्यात (खास तौर पर अमेरिका को) भी किया जा सकता है। गांधी नगर में आयोजित आरई-इन्वेस्ट कार्यक्रम से इतर टाटा पावर के वरिष्ठ प्रबंधन ने इसकी जानकारी दी। वरिष्ठ अधिकारियों ने संकेत दिए कि कंपनी अगले तीन साल में अपनी सोलर सेल और मॉड्यूल विनिर्माण क्षमता को दोगुना करने की संभावना तलाशेगी। ऊर्जा भंडारण के लिए कंपनी की योजना बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम में निवेश करने की है, जिसे कंपनी खुद विकसित करेगी। टाटा पावर के मुख्य कार्याधिकारी प्रवीर सिन्हा ने बताया कि कंपनी प्रमुख कलपुर्जों को खरीदने के बजाय उसका विनिर्माण खुद कर रही है। उन्होंने कहा, 'पहले हम इसकी खरीद करते थे मगर अब लागत कम करने के लिए हम उसे खुद बनाएंगे, जिससे दक्षता तथा गुणवत्ता में भी सुधार होगा। यह हमें आत्मनिर्भर बनाएगा और और कई बाहरी जोखिमों से भी बचाएगा।' टाटा पावर के सीईओ प्रवीर सिन्हा ने कहा कि भू-राजनीतिक मुद्दों ने कंपनी की आपूर्ति श्रृंखला को खतरे में डाल दिया है और इस कदम से कंपनी को आपूर्ति में कमी, परिवहन संबंधी दिक्कतें, कीमत में उतार-चढ़ाव जैसे बाहरी समस्याओं से बचाने में मदद मिलेगी। भारत में करीब 90 फीसदी सौर ऊर्जा परियोजनाएं आयातित कलपुर्जों-उपकरणों से बनी हैं। टाटा पावर सोलर विनिर्माण के क्षेत्र में उतरने वाली प्रारंभिक कंपनियों में से एक है। नवीकरणीय ऊर्जा के अन्य क्षेत्रों में वृद्धि की संभावना को देखते हुए कंपनी ने अब अपने सोलर विनिर्माण को बढ़ाने की योजना बनाई है।

सीईएससी की शाखा ने 686.85 मेगावाट विंड पावर प्रोजेक्ट के लिए किया समझौता

सीईएससी की शाखा पूर्वा ग्रीन पावर प्राइवेट लिमिटेड ने 686.85 मेगावाट तक की पवन ऊर्जा परियोजना स्थापित करने के लिए इकोरेन एनर्जी इंडिया के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। सीईएससी लिमिटेड ने शेयर बाजार को दी सूचना में बताया, इकोरेन एनर्जी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड न तो संबंधित पक्ष है और न ही इसके प्रवर्तक या प्रवर्तक समूह का हिस्सा है। कंपनी सूचना के अनुसार, उसकी अनुषंगी कंपनी पूर्वा ग्रीन पावर प्राइवेट लिमिटेड ने 686.85 मेगावाट तक की पवन ऊर्जा परियोजना स्थापित करने के लिए इकोरेन एनर्जी इंडिया के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। कंपनी ने कहा कि परियोजना तीन वर्षों के भीतर पूरी हो जाएगी। हालांकि इसके लिए विभिन्न प्राधिकरणों से संबंधित लाइसेंस/परमिट/अनुमोदन मिलना जरूरी है।

साल का सबसे बड़ा आईपीओ लाएगी एनटीपीसी

मुंबई (ईएमएस)। सार्वजनिक बिजली कंपनी एनटीपीसी इस साल का सबसे बड़ा आईपीओ लाने की योजना बना रही है। इसके लिए उसने सेबी के पास ड्राफ्ट दाखिल कर लिया है। कंपनी का कहना है कि उसकी सब्सिडियरी एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी का आईपीओ में केवल नए शेयर जारी किए जाएंगे। एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी के आईपीओ में केवल नए शेयर जारी किए जाएंगे। इस कंपनी के ग्रीन एनर्जी पोर्टफोलियो में छह से अधिक राज्यों में मौजूदगी के साथ सौर और पवन ऊर्जा एसेट्स शामिल हैं। एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी की परिचालन क्षमता 31 अगस्त तक 4,071 मेगावॉट थी। इसमें 3,071 मेगावॉट सोलर और 100 मेगावॉट विंड प्रोजेक्ट शामिल हैं। कंपनी का कहना है कि इस आईपीओ से होने वाली इनकम में से 7,500 करोड़ का उपयोग एनटीपीसी रिन्यूएबल एनर्जी का कर्ज कम करने और बाकी सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों के लिए किया जाएगा।

भारत 2019 में ब्रिटेन को पछाड़ते हुए 5वीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन गयाः पुरी

ह्यूस्टन (ईएमएस)। पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत 2019 में ब्रिटेन को पीछे छोड़ते हुए वह पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। ह्यूस्टन में भारत के महावाणिज्य दूत डी.सी. मंजूनाथ द्वारा हाल ही में यहां इंडिया हाउस में आयोजित सामुदायिक स्वागत समारोह में पुरी ने वैश्विक ऊर्जा क्षेत्र, खासकर हरित हाइड्रोजन और एयरोस्पेस (वांतरिक्ष) में ह्यूस्टन की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने अमेरिका-भारत रणनीतिक स्वच्छ ऊर्जा साझेदारी को दोनों देशों के बीच भविष्य के सहयोग की आधारशिला बताया। पुरी ने हाल के चुनावों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दल की राजनीतिक सफलताओं को रेखांकित किया और कहा कि मोदी के शासन में 2014 में 10वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से आगे बढ़कर देश 2019 तक ब्रिटेन को पीछे छोड़ते हुए पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। मंत्री ने भारत सरकार की महत्वाकांक्षी शहरी विकास पहलों की ओर इशारा करते हुए कहा कि देश ने 2017 से 2024 तक शहरी योजनाओं के लिए 25 अरब अमेरिकी डॉलर (1.57 लाख करोड़ रुपये) खर्च करने की प्रतिबद्धता जतायी है। पुरी ने ऊर्जा नवाचार के लिए वैश्विक केंद्र के रूप में ह्यूस्टन की सराहना की और कहा कि 2019 में 'हाउडी मोदी' जैसे कार्यक्रमों ने भारतीय-अमेरिकी संबंधों की ताकत को दर्शाया है।

आदमखोर भेड़िए को हनी ट्रैप में फंसाने की कोशिश कर रहा वन विभाग

बहराइच(ईएमएस)। बहराइच जिले में वन विभाग की टीम ने लंगड़े भेड़िये को पकड़ने के लिए आधुनिक तकनीकों जैसे ड्रोन, इंफ्रारेड और थर्मल इमेजिंग कैमरों का इस्तेमाल किया है, लेकिन सफलता नहीं मिली। इसके अलावा, बच्चों के पेशाब से भीगी टेडी बियर डॉल्स, हाथी की लीद, और पटाखों का इस्तेमाल भी किया गया। अब वन विभाग ने इस भेड़िये को पकड़ने के लिए एक नया इश्क वाला फॉर्मूला अपनाया है। वन विभाग के अधिकारी लाउडस्पीकर पर मादा भेड़िये की प्री-रिकॉर्डेड आवाज बजाकर उसे फंसाने की कोशिश कर रहे हैं। बहराइच के डिस्ट्रिक्ट फॉरेस्ट ऑफिसर (डीएफओ) अजीत प्रताप सिंह ने कहा कि इस बार मादा भेड़िये की चीखने और रोने की आवाजों का इस्तेमाल किया जा रहा है, ताकि लंगड़ा भेड़िया आकर्षित होकर जाल में फंस जाए। आदमखोर भेड़ियों का आतंक बढ़ता ही जा रहा है, जिससे स्थानीय लोग भयभीत और चिंतित हैं। भेड़ियों ने अब तक कई बच्चों और महिलाओं पर हमला किया है, जिसके बाद ऑपरेशन भेड़िया के तहत उन्हें पकड़ने के प्रयास हो रहे हैं। अब तक पांच भेड़ियों को पकड़ लिया गया है, लेकिन एक लंगड़ा भेड़िया अभी भी लोगों के लिए खतरा बना हुआ है।महसी तहसील के 50 गांवों के हजारों लोग इन भेड़ियों के हमलों से परेशान हैं। मार्च से भेड़ियों के हमले शुरू हुए थे, लेकिन जुलाई के बाद हमलों में तेजी आ गई।

भाजपा के हरियाणा चुनाव संकल्प पत्र में 20 वादेःअग्निवीर को सरकारी नौकरी की गारंटी, महिलाओं को 2100 महीने, यह कांग्रेस से 100 रुपए ज्यादा

रोहतकः भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने गुरुवार को हरियाणा चुनाव के लिए पार्टी का संकल्प पत्र जारी किया। संकल्प पत्र में अग्निवीर को सरकारी नौकरी की गारंटी दी गई है। महिलाओं को हर महीने 2100 रुपए देने का वादा किया है। यह राशि कांग्रेस के कल जारी घोषणा पत्र से 100 रुपए ज्यादा है। इसमें 500 रुपए में गैस सिलेंडर देने जैसी 20 बाते हैं। रोहतक में संकल्प पत्र जारी करते हुए नड्डा ने कहा कि अस्पतालों में डायलिसिस फ्री होगा और चिरायु आयुष्मान योजना में 10 लाख तक इलाज मुफ्त हो सकेगा। नड्डा ने कहा कि BJP ने 20 संकल्प रखे हैं। हरियाणा के विकास को नॉन स्टॉप रखने के लिए सिग्नल आपको डाउन करना है। वह किसका करना है, ये आपको तय करना है। इस प्रोग्राम में केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर, प्रदेश प्रभारी सतीश पूनिया, हरियाणा चुनाव प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान के अलावा बड़े नेता मौजूद थे।

संकल्प पत्र जारी करने के बाद जेपी नड्डा की 5 अहम बातें

1. कांग्रेस का रियल मेनिफेस्टो जमीन घोटालाः जेपी नड्डा ने कहा हरियाणा की छवि 10 साल पहले क्या थी?। पहले हरियाणा में नौकरी के लिए पर्ची-खर्ची चलती थी। नौकरी के कारण लोगों को सजाएं तक हुई। हरियाणा जमीनों के घोटाले के लिए जाना जाता था। उनका रियल मेनिफेस्टो ये था कि जमीन का घोटाला। किसानों की जमीन को हड़पना। उनकी जमीन की श्रेणी को बदलना।

2. भाजपा का संकल्प पत्र सीरियस डॉक्यूमेंटः मेनिफेस्टो को विरोधियों ने डायल्यूटेड बना दिया। भाजपा के लिए संकल्प पत्र सीरियस डाक्यूमेंट है। हम जो कहते हैं, वही करते हैं। इससे आपको साफ दिखेगा कि हरियाणा बदला है। हरियाणा का एक्सपोर्ट दस साल में 68 हजार करोड़ से बढ़कर ढाई लाख करोड़ से ज्यादा का हो चुका है। पहले 7 मेडिकल कॉलेज होते थे, जो आज 15 हो चुके हैं। पहले मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की 700 की सीटें थी, जो आज 2 हजार से ज्यादा हैं। 10 साल पहले 500 गांवों में बिजली थी, आज 5800 गांवों में बिजली पहुंच चुकी है।

3. कांग्रेस किसानों को 1-2 रुपए मुआवजा देती थीः यहां किसान की चर्चा बहुत होती है। कांग्रेस में ऐसे-ऐसे नेता हैं, जो किसानों की बात करते हैं, लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूं कि पहले किसानों को मुआवजे में 1-2 रुपए के चेक मिलते थे। आज सरकार किसानों को लाखों रुपए दे रही है। किसानों को पहले प्रति एकड़ 6 हजार रुपए मुआवजा मिलता था, लेकिन अब 15 हजार रुपए कर दिया था।

4. पहले 8, अब 24 फसलों पर एमएसपी दे रहेः किसानों को पहले 8 फसलों पर एमएसपी देते थे, लेकिन आज 24 फसलों पर दे रहे हैं। सरकार ने हर खेत तक पानी पहुंचाया। खेलों को बढ़ावा देने के लिए एक हजार खेल नर्सरी बनाईं। पहले दिल्ली से हरियाणा के लिए चार घंटे लगते थे, लेकिन आज एक घंटा भी नहीं लगता। ये फर्क आपको साफ दिख रहा है।

5. हरियाणा का रेल बजट 9 गुना बढ़ाया हरियाणा में रेलवे का बजट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 9 गुना बढ़ा दिया है। ये मैंने सारी बातें आपको इसलिए बताई कि आप जनता के सामने सच की स्थिति को स्पष्ट कर सकें। भाजपा के लिए संकल्प पत्र एक सीरियस डाक्यूमेंट हैं, इसमें हमने जो वादे किए हैं। वह 100 प्रतिशत देंगे।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बोले- हरियाणा का माहौल भाजपा के पक्ष में

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष मोहन बड़ौली ने कहा कि आज 2024 के चुनाव को लेकर संकल्प पत्र भाजपा का जारी किया है। इसमें जो भी बातें होंगी, उसे सरकार बनने पर लागू किया जाएगा। 2014 और 2019 में जो संकल्प पत्र भाजपा ने जारी किया था, उसके सभी वादे सरकार ने 10 सालों में पूरे किए। हरियाणा का माहौल भाजपा के पक्ष में है। जैसे केंद्र में मोदी सरकार बनी, वैसे ही हरियाणा में BJP सरकार बनेगी।

मेनिफेस्टो कमेटी चेयरमैन बोले- 2 लाख से ज्यादा सुझाव लिए

संकल्प पत्र के लिए हमने 2 लाख से ज्यादा लोगों के सुझाव लिए। कमेटी ने हर जिले में जाकर समाज के हर वर्ग से बातचीत करने की कोशिश की। इस बार हमारे घोषणा पत्र में एरिया वाइज जरूरत की चीजों का शामिल किया है। इस संकल्प पत्र में महिला, युवा, किसान, उद्योगपति, छोटे व्यापारी, पिछड़े वर्ग के लोग, हमारे बेरोजगार युवा समाज के हर वर्ग के लिए कुछ न कुछ रखा गया है। हम संकल्प पत्र में ऐसी घोषणा नहीं करते हैं, जो पूरी न कर सकें। जो बजट है, उसी के हिसाब से वादे किए हैं।

सरकार ने फूड प्रोसेसिंग सेक्टर के विकास के लिए कई सुधार किए : पीएम नरेंद्र मोदी

नई दिल्लीः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को कहा कि सरकार ने खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र के विकास के लिए पिछले 10 वर्षों में कई सुधार किए हैं। इन कदमों का मकसद यह सुनिश्चित करना है कि भारत खाद्य क्षेत्र में नवाचार, स्थिरता तथा सुरक्षा के वैश्विक मानक स्थापित करे। प्रधानमंत्री का संदेश विश्व खाद्य भारत 2024 के तीसरे संस्करण में पढ़ा गया। यह कार्यक्रम 19 से 22 सितंबर तक राष्ट्रीय राजधानी में आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में 90 से अधिक देश हिस्सा लेंगे। मोदी ने कहा, आधुनिक युग में प्रगतिशील कृषि पद्धतियों, मजबूत प्रशासनिक ढांचे और अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों के जरिये हमारा प्रयास यह सुनिश्चित करना है कि भारत खाद्य क्षेत्र में नवाचार, स्थिरता तथा सुरक्षा के लिए वैश्विक मानक स्थापित करे।

उन्होंने कहा कि पिछले 10 वर्षों में सरकार ने खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में बदलाव लाने के लिए व्यापक सुधार लागू किए हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, खाद्य

प्रसंस्करण में 100 प्रतिशत एफडीआई (प्रत्यक्ष विदेशी निवेश), प्रधानमंत्री किसान संपदा योजना, सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों का औपचारिकीकरण, खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना जैसी बहुआयामी पहलों के जरिये हम देश भर में आधुनिक बुनियादी ढांचे, मजबूत आपूर्ति श्रृंखलाओं और रोजगार सृजन का मजबूत परिवेश तैयार कर रहे हैं।

मोदी ने कहा कि कई देशों की भागीदारी से विश्व खाद्य भारत 2024 वैश्विक खाद्य उद्योग, शिक्षा तथा अनुसंधान के क्षेत्र में प्रतिभाशाली लोगों के लिए विशेष मंच के रूप में सामने आया है। इसमें वे बढ़ते अवसरों का अधिकतम लाभ उठा सकते हैं। उन्होंने कहा, भारत में एक जीवंत तथा विविध खाद्य संस्कृति है। भारतीय खाद्य परिवेश की रीढ़ किसान हैं। यह किसान ही हैं जिन्होंने पाक उत्कृष्टता की पौष्टिक तथा स्वादिष्ट परंपराओं को सुनिश्चित किया है। हम नवीन नीतियों और उनके कार्यान्वयन के साथ उनकी कड़ी मेहनत का समर्थन कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि सरकार का लक्ष्य छोटे उद्यमों को सशक्त बनाना है। मोदी ने साथ ही कहा कि भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) द्वारा वैश्विक खाद्य नियामक शिखर सम्मेलन का आयोजन विश्व स्वास्थ्य संगठन, खाद्य एवं कृषि संगठन और कई प्रतिष्ठित घरेलू संस्थानों सहित वैश्विक नियामकों को एक मंच पर लाएगा। इससे खाद्य सुरक्षा, गुणवत्ता मानकों और सर्वोत्तम प्रथाओं जैसे व्यापक मुद्दों पर चर्चा की जा सकेगी।

मोदी सरकार सख्तः अब भारत के पानी पर मौज नहीं कर पाएगा पाकिस्तान

कई दशकों से भारत की नदियों के पानी का पाकिस्तान भरपूर उपयोग कर रहा है। ये संभव इसलिए हुआ कि सिंधू जल संधि देश के पहले प्रधानमंत्री पं जवाहरलाल नेहरु ने की थी। हालांकि अब वक्त और परिस्थितियां बदली हैं इसलिए केंद्र की मोदी सरकार ने इस संधि की समीक्षा करने की मांग उठाते हुए पाकिस्तान को नोटिस भेजा है। सूत्रों ने कहा कि बीते महीने 30 तारीख को पाकिस्तान को नोटिस जारी किया गया है। समझौते की जो वजह बताई गई हैं, उनमें- जनसंख्या में बदलाव, पर्यावरण संबंधी मुद्दे और भारत के उत्सर्जन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए स्वच्छ ऊर्जा के विकास में तेजी लाने की आवश्यकता शामिल है। भारत ने कहा कि समझौते के बाद से परिस्थितियां काफी बदल चुकी हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच 1960 में सिंधु जल संधि पर हस्ताक्षर हुए थे। विश्व बैंक की मध्यस्थता में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति अयूब खान ने कराची में इस पर हस्ताक्षर किए थे।

आतिशी समेत कैबिनेट का शपथ ग्रहण 21 कोःनया चेहरा होंगे मुकेश अहलावत

नई दिल्लीः दिल्ली की मुख्यमंत्री चुनी गईं आतिशी 21 सितंबर को पद की शपथ लेंगी। आतिशी अपनी कैबिनेट के साथ शपथ लेंगी। कैबिनेट में मुकेश अहलावत नया चेहरा होंगे। आप ने बताया कि मुकेश, सामाजिक न्याय मंत्री राजकुमार आनंद की जगह लेंगे। अहलावत दिल्ली की सुल्तानपुर माजरा सीट से विधायक हैं। वे आम आदमी पार्टी का दलित चेहरा हैं। दिल्ली सरकार की कैबिनेट में मुख्यमंत्री समेत सात सदस्य हैं। नए मुख्यमंत्री और नए सदस्यों का कार्यकाल छोटा होगा, क्योंकि मौजूदा विधानसभा का कार्यकाल फरवरी 2025 तक है। कैबिनेट में गोपाल राय, कैलाश गहलोत, सौरभ भारद्वाज और इमरान हुसैन मंत्री पद पर बरकरार रहेंगे। सातवें सदस्य के नाम की घोषणा अभी नहीं की गई है। अरविंद केजरीवाल ने 17 सितंबर को विधायक दल की बैठक में आतिशी के नाम का प्रस्ताव रखा था। इसके बाद उन्हें मुख्यमंत्री चुना गया। इसी दिन केजरीवाल ने अपना

इस्तीफा दिया था। मार्च 2023 में दिल्ली कैबिनेट का हिस्सा बनी थीं आतिशी आतिशी आप की स्थापना के वक्त ही पार्टी में शामिल हो गई थीं। 2013 के विधानसभा चुनाव के लिए पार्टी की मेनिफेस्टो ड्राफ्टिंग कमेटी की सदस्य थीं। वह पार्टी की प्रवक्ता भी रह चुकी हैं। वह दिल्ली विधानसभा में कालकाजी निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती हैं और दिल्ली सरकार में सबसे ज्यादा विभागों की जिम्मेदारी उन्हीं के पास है। आतिशी को मार्च 2023 में शराब नीति मामले में मनीष सिसोदिया की गिरफ्तारी के बाद आप के सामने आई मुश्किलों के चलते दिल्ली कैबिनेट में नियुक्त किया गया था।

शाह बोले- पाकिस्तान और कांग्रेस का एजेंडा एकःराहुल हर भारत विरोधी ताकत के साथ

पाक रक्षा मंत्री बोले थे- 370 की बहाली हम भी चाहते

श्रीनगरः पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ के जम्मू-कश्मीर पर दिए बयान पर विवाद खड़ा हो गया। आसिफ ने कहा था कि वे भी कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस गठबंधन की तरह जम्मू-कश्मीर में आर्टिकल 370 की बहाली चाहते हैं। ख्वाजा के इस बयान पर गृह मंत्री अमित शाह ने कहा- कांग्रेस और पाकिस्तान के इरादे और एजेंडा एक ही हैं। पिछले कुछ सालों से राहुल गांधी हर एक भारत विरोधी ताकतों के साथ खड़े दिखे हैं। जम्मू-कश्मीर के भाजपा प्रभारी और पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुघ ने कहा- पाकिस्तान के रक्षा मंत्री के बयान से यह स्पष्ट हो गया है कि राहुल गांधी और फारूक अब्दुल्ला पाकिस्तान की भाषा बोलते हैं। वे पाकिस्तान के इशारों पर नाच रहे हैं। एनसी-कांग्रेस जम्मू-कश्मीर में पाकिस्तान की कठपुतली के रूप में काम कर रहे हैं।दरअसल, जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव में कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस साथ मिलकर चुनाव लड़ रही हैं। फारूक अब्दुल्ला ने कहा था कि अगर गठबंधन सत्ता में आता है तो आर्टिकल 370 को वापस लाएंगे।

पाक रक्षा मंत्री बोले- संभावना है जम्मू-कश्मीर में कांफ्रेंस की सरकार बनेगी

पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने पाकिस्तानी न्यूज चैनल जियो न्यूज पर बात कर रहे थे। पाकिस्तानी पत्रकार हामिद मीर ने ख्वाजा से जब सवाल किया तो उन्होंने कहा था कि, वे आर्टिकल 370 और 35ए की बहाली पर एकमत हैं। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ने यह भी दावा किया कि अगर नेशनल कॉन्फ्रेंस-कांग्रेस गठबंधन जम्मू-कश्मीर में सत्ता में आता है तो आर्टिकल 370 वापस आ सकता है। ख्वाजा ने कहा- मुझे लगता है कि यह संभव है। वर्तमान में, नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस का वहां बहुत बड़ा महत्व है। घाटी की आबादी इस मुद्दे पर बहुत प्रेरित है और संभावना है कि कॉन्फ्रेंस (नेशनल कॉन्फ्रेंस) सत्ता में आएगी। उन्होंने इसे चुनावी मुद्दा बना दिया है। गृह मंत्री अमित शाह ने सोशल मीडिया X पर लिखा, पाकिस्तान के रक्षा मंत्री का आर्टिकल 370 और 35A पर कांग्रेस और JKNC के समर्थन की बात ने एक बार फिर कांग्रेस को एक्सपोज कर दिया है। इस बयान ने पुनः यह स्पष्ट कर दिया है कि कांग्रेस और पाकिस्तान के इरादे भी एक हैं और एजेंडा भी। पिछले कुछ वर्षों से राहुल गाँधी देशवासियों की भावनाओं को आहत करते हुए हर एक भारत विरोधी ताकतों के साथ खड़े रहे हैं। शाह ने आगे लिखा, एयर स्ट्राइक व सर्जिकल स्ट्राइक के सबूत माँगने हों, या भारतीय सेना के बारे में आपत्तिजनक बातें करना हो, राहुल गाँधी की कांग्रेस पार्टी और पाकिस्तान के सुर हमेशा एक रहे हैं और कांग्रेस का हाथ हमेशा देशविरोधी शक्तियों के साथ रहा है।

यूपी में खरीदी जा रहीं 120 इलेक्ट्रिक बसें, अयोध्या समेत 5 शहरों में दौड़ेंगी

लखनऊ(ईएमएस)। यूपी में योगी सरकार 120 इलेक्ट्रिक बसें खरीदने जा रही है। इन बसों का संचालन अयोध्या सहित पांच शहरों में होगा। लखनऊ, अलीगढ़, मुरादाबाद, अयोध्या और गोरखपुर में चलने वाली इन बसों के रूट भी तय कर दिए गए हैं। अलीगढ़-मुरादाबाद क्षेत्र में 30-30 इलेक्ट्रिक बसें, लखनऊ, अयोध्या एवं गोरखपुर क्षेत्र में 20-20 इलेक्ट्रिक बसें संचालित की जाएंगी। परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह के मुताबिक अलीगढ़ क्षेत्र में अलीगढ़- नोएडा वाया जेवर 10, अलीगढ़-बालाबागड़-फरीदाबाद चार, अलीगढ़-मथुरा चार, अलीगढ़-कौशाम्बी वाया खुर्जा आठ, अलीगढ़-डिबाई-अनूपशहर-संभल-मुरादाबाद रूट पर चार बसें संचालित होंगी। इसी प्रकार मुरादाबाद क्षेत्र में कुल 30 इलेक्ट्रिक बसें संचालित की जाएंगी। मुरादाबाद-कौशाम्बी रूट पर 10, मुरादाबाद-मेरठ रूट पर छह, मुरादाबाद-नजीबाबाद कोटवार रूट पर चार, कटघर-बरेली रूट पर दो, कटघर-हल्द्वानी रूट पर चार, कटघर-अलीगढ़ रूट पर दो एवं कटघर-रामनगर रूट पर दो इलेक्ट्रिक बसों का संचालन किया जायेगा। लखनऊ क्षेत्र में न्यू बाराबंकी स्टेशन-अवध बस स्टेशन रूट पर 20 इलेक्ट्रिक बसें संचालित की जाएंगी।

राहुल को धमकी मामले पर नड्डा का खड़गे को जवाबः लिखा-राहुल की करतूतें भूल गए

कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा था- पीएम अपने नेताओं पर अंकुश लगाइए

नई दिल्ली : भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के नाम ओपन लेटर लिखा है। नड्डा ने लिखा है कि आप राहुल गांधी समेत अपने नेताओं की करतूतों को भूल गए हैं या फिर उन्हें जानबूझ कर नजरअंदाज किया है। यह उस चिट्ठी का जवाब है, जो खड़गे ने 17 सितंबर को पीएम मोदी की नाम लिखी थी। जिसमें उन्होंने राहुल गांधी को लेकर विवादित बयान देने वाले भाजपा नेताओं के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। भाजपा अध्यक्ष ने अपनी चिट्ठी में खड़गे से पूछा है कि जिस व्यक्ति का इतिहास ही देश के प्रधानमंत्री समेत पूरे ओबीसी समुदाय को चोर कहकर गाली देने का रहा हो, जिसकी मानसिकता पूरा देश जानता हो, उस राहुल गांधी को सही ठहराने की कोशिश आप किस मजबूरी के चलते कर रहे हैं? नड्डा ने लेटर में यह भी लिखा कि कांग्रेस के नेताओं ने पिछले 10 सालों में प्रधानमंत्री मोदी को 110 से ज्यादा गालियां दी हैं। तब राजनीतिक शुचिता, मर्यादा, अनुशासन, शिष्टाचार जैसे शब्द आपकी डिक्शनरी से क्यों गायब हो जाते हैं? आप राजनीतिक शुचिता की दुहाई दे रहे हैं लेकिन आपके नेताओं का इतिहास ही इसकी धज्जियां उड़ाने का रहा है। ऐसा दोहरा रवैया क्यों? उन्होंने लिखा- "अगर मैं उदाहरण गिनाने लग जाऊं, तो आपको भी पता है कि उसके लिए अलग से किताब लिखनी पड़ेगी। क्या ऐसे बयानों और हरकतों ने देश को शर्मसार नहीं किया, राजनीतिक मर्यादा को तार-तार नहीं किया? आप इसे कैसे भूल गए खड़गे जी? प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 74वें जन्मदिन पर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने उन्हें बधाई देने के बाद एक चिट्ठी भी लिखी थी। इसमें राहुल गांधी के खिलाफ हेट स्पीच पर चिंता जताई थी। खड़गे ने लिखा था- 'भाजपा और सहयोगी दलों के नेता लगातार राहुल गांधी के लिए बेहद आपत्तिजनक और हिंसक भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं।

देशभर में एक बार फिर बारिश का दौर शुरू, यूपी ने यागी तूफान का असर, दिल्ली में लोगों को मिली राहत, उत्तराखंड में हो सकती है झमाझम

नई दिल्ली, (ईएमएस)। देशभर में एक बार फिर बारिश का दौर शुरू हो गया है। दिल्ली-एनसीआर से यूपी-बिहार तक में बीते दो दिनों से लगातार बारिश हो रही है जिससे मौसम ठंडा हो गया है। वहीं लोगों को गर्मी से राहत मिली है। मौसम विभाग का कहना है कि अभी दिल्ली-यूपी ही नहीं पहाड़ों पर भी बारिश का दौर जारी रहेगा। आईएमडी के मुताबिक आज दिल्ली, यूपी, बिहार, हरियाणा, पंजाब में फिर झमाझम होने वाली है।

दिल्ली में विगत दिवस से रुक-रुक कर बारिश हो रही है। मौसम विभाग के मुताबिक गुरुवार को भी दिल्ली में सुबह से ही बादल छाए रहे। जो कुछ इलाकों में बरस भी सकते हैं। बारिश होने से दिल्ली का मौसम सुहावना हो गया है। वहीं तापमान में ही गिरावट आ सकती है। दिल्ली का अधिकतम तापमान 33 डिग्री और न्यूनतम तापमान 23 डिग्री रहने की संभावना है। दिल्ली में एक दो

दिन ही हल्की बारिश देखने को मिल सकती है। इस बार दिल्ली में कड़ाके की ठंड पड़ने के आसार हैं।

यूपी में यागी चक्रवात तूफान का प्रकोप देखने को मिल, जिसकी वजह कई इलाकों में जोरदान बारिश हो रही है। मौसम विभाग ने यूपी के 43 जिलों में बारिश के साथ ही वज्रपात की भी संभावना जताई है। विभाग के मुताबिक गुरुवार अलीगढ़, मथुरा, हाथरस, एटा, आगरा, फिरोजाबाद, मैनपुरी, इटावा, औरैया, जालौन, गाजीपुर, आजमगढ़, हरदोई, फर्रुखाबाद, कन्नौज, कानपुर देहात, कानपुर नगर, उन्नाव, लखनऊ, रायबरेली, अमेठी में भारी बारिश हो सकती है। वहीं बिहार में भी मौसम का मिजाज बदल रहा है। वहां अगले 24 घंटे में सुपौल, अररिया, किशनगंज, सहरसा, मधेपुरा, पूर्णिया, कटिहार, बक्सर, रोहतास, औरंगाबाद, अरवल, भोजपुर हल्की बारिश हो सकती है। मैदानी व पहाड़ी इलाकों में भी बारिश का सिलसिला जारी रहेगा। मौसम विभाग ने उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग, टिहरी और चमोली में पहले ही येलो अलर्ट जारी कर दिया है। गुरुवार को उत्तराखंड में झमाझम बारिश हो सकती है। वहीं मसूरी में भी बुधवार से रुक-रुककर हो रही बारिश से जनजीवन प्रभावित हुआ है। वहीं राजस्थान में बारिश का दौर जारी है। जयपुर मौसम केंद्र ने बताया है कि आज पूर्वी राजस्थान में बारिश होने की संभावना है। जिसकी वजह मध्यप्रदेश के ऊपर बना कम दबाव का क्षेत्र है। गुरुवार को राजस्थान के कई हिस्सों में बादल गरजने के साथ हल्की बारिश होने की संभावना है। जयपुर, भरतपुर, अजमेर और कोटा के कुछ हिस्सों में भी हल्की बारिश के आसार हैं।

राजस्थान-मध्य प्रदेश में अगले 4 दिन बारिश नहीं; हिमाचल में बर्फबारी, पहाड़ों पर ठंड

मौसम विभाग ने आज देश के किसी भी राज्य में तेज बारिश का अलर्ट जारी नहीं किया है। राजस्थान में भी अगले चार दिन बारिश नहीं होगी। प्रदेश में इस मानसून सीजन अब तक 59 फीसदी से ज्यादा बारिश दर्ज की गई है। मध्यप्रदेश में बुधवार को ग्वालियर, इंदौर समेत 12 जिलों में बारिश हुई। हालांकि आज एमपी में भी बारिश की संभावना नहीं है। यहां अगले चार दिन सिर्फ बादल छाए रहेंगे। उधर बिहार में गंगा नदी के खतरे के निशान के ऊपर बहने से 76 सरकारी स्कूल अगले 3 दिन तक बंद रहेंगे। वहीं हिमाचल प्रदेश में बीते तीन-चार दिनों में हुई बारिश और बर्फबारी से लाहौल-स्पीति और किन्नौर के तापमान में भारी गिरावट आई है। पहाड़ों पर ठंड होने लगी है।

हिमाचल प्रदेश में 50 सड़कें बंद

हिमाचल प्रदेश में बारिश के कारण बुधवार को 50 सड़कें बंद रहीं। राज्य के कुछ हिस्सों में मीडियम बारिश हुई। 1 जून से 17 सितंबर तक चल रहे मानसून सीजन के दौरान बारिश में 18 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई। राज्य में 18 सितंबर तक औसत 698.3 mm बारिश के मुकाबले 569.3 mm बारिश हुई। इस दौरान बारिश से जुड़ी घटनाओं में 172 लोगों की मौत हो चुकी है।

इजरायल की सबसे खुफिया और हाई-टेक मिलिट्री यूनिट्स ने लेबनान में जर्रे-जर्रे उड़ा दिए

मोसाद से भी ज्यादा खतरनाक है यूनिट 8200

नई दिल्ली(ईएमएस)। इजरायल दो दिनों से लेबनान पर ताबड़तोड़ हमले करने में जुटा है। इजरायल ने पिछले दो दिनों में पेजर से लेकर वॉकी-टॉकी, लैपटॉप, सोलर पैनल और रेडियो सहित कई तरह की इलेक्ट्रॉनिक डिवाइसों को हथियार बनाकर हिज्बुल्लाह को टारगेट पर रखा है। इन हमलों के पीछे अब तक इजरायल की खुफिया एजेंसी मोसाद को जिम्मेदार ठहराया जा रहा था। लेकिन अब हमले में इजरायल की यूनिट 8200 का भी नाम सामने आ रहा है।

ऑपरेशन लेबनान की तैयारी लगभग एक साल से की जा रही थी। इस ऑपरेशन में यूनिट 8200 की भूमिका काफी अहम थी। हिज्बुल्लाह की ओर से जिन पेजर्स का ऑर्डर दिया गया था। उन पेजर्स में विस्फोटक फिट करवाने की जिम्मेदारी यूनिट 8200 की ही थी।

क्या है यूनिट 8200

यूनिट 8200 इजरायल की सबसे खुफिया और हाई-टेक मिलिट्री यूनिट्स में से एक है। हाई-प्रोफाइल इंटेलिजेंस ऑपरेशंस और साइबर वारफेयर में इस यूनिट की भूमिका की वजह से वैश्विक स्तर पर यह काफी चर्चा में रही है। यूनिट 8200 दरअसल इजरायली सेना इजरायल डिफेंस फोर्सेज का ही हिस्सा है, जिसका काम तकनीकी युद्ध, खुफिया बैठकों और साइबर सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। इसे मोसाद से भी ज्यादा खुफिया माना जाता है। यह खुफिया जानकारी इकट्ठा कर उसके अनुरूप स्ट्रैटेजी बनाकर काम करती है। इसकी तुलना अक्सर अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी से की जाती है। यह यूनिट हैकिंग से लेकर इन्क्रिप्शन और सर्विलांस सहित जटिल से जटिल इंटेलिजेंस काम करने के लिए युवा सैनिकों को ट्रेनिंग भी देती है। इस यूनिट में इजरायल के सबसे बेहतरीन सुरक्षाकर्मियों को भर्ती किया जाता है। यह यूनिट लीक से हटकर सोचने, तकनीकी विशेषज्ञता और इनोवेशन के लिए जानी जाती है। इस यूनिट में सेवाएं दे चुके लोगों ने बाद में ओर्का सिक्योरिटी जैसी इजरायल की हाई-टेक इंडस्ट्री को खड़ा करने में अहम भूमिका निभाई है।

यूनिट 8200 के बड़े ऑपरेशंस

यूनिट 8200 कई बड़े ऑपरेशंस में शामिल रही है। ईरान के परमाणु कार्यक्रम को बर्बाद करने में इस यूनिट की बड़ी भूमिका मानी जाती है। कहा जाता है कि इस यूनिट ने एक वायरस तैयार किया था, जिसका इस्तेमाल कर इस यूनिट ने ईरान के परमाणु संयंत्रों पर हमला किया था। यह वायरस परमाणु संयंत्रों में लगे सेंट्रीफ्यूज को अंदर से ही जला देता था। इसकी जानकारी लम्बे समय तक ईरान को नहीं हो पाई। इसके अलावा यूनिट 8200 ने 2018 में संयुक्त अरब अमीरात से ऑस्ट्रेलिया जा रहे एक विमान को हाइजैक होने से बचाया था।

कितना भयावह था अटैक?

लेबनान और सीरिया में जिन पेजर में ब्लास्ट हुआ। ब्लास्ट से पहले उनमें कुछ सेकेंड तक बीप की आवाज सुनाई दी। कुछ पेजर जेब में ही ब्लास्ट हो गए जबकि कुछ लोगों ने जैसे ही बीप की आवाज सुनकर पेजर को जेब या बैग से बाहर निकाला, उनमें ब्लास्ट हो गया। कई पेजर लोगों के हाथ में ही फट गए। इस ब्लास्ट में 12 लोगों की मौत हुई जिनमें एक छोटी बच्ची भी शामिल थी। ब्लास्ट की वजह से 4000 लोग गंभीर या मामूली रूप से चोटिल हुए थे। कई लोगों के हाथ और पैर क्षतिग्रस्त हो गए। 500 से ज्यादा लोगों को अपनी आंखें गंवानी पड़ी। किसी का धड़ क्षतिग्रस्त हुआ तो किसी के शरीर का निचला हिस्सा धमाके में उड़ गया। लेबनान में ईरान के राजदूत मोजतबा अमानी को तो एक आंख गंवानी पड़ी जबकि उनकी दूसरी आंख बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई है। मरने वालों में लेबनानी सांसदों के बच्चे भी हैं और हिज्बुल्लाह के लड़ाकों के परिवार वाले भी धमाकों की चपेट में आ गए। ठीक इसी तरह बुधवार को वॉकी-टॉकी से लेकर सोलर पैनल, लैपटॉप और रेडियो तक में ब्लास्ट किए गए। इन हमलों में 20 लोगों की मौत हुई जबकि घायलों का आंकड़ा 450 रहा।

पीएम मोदी से मिलने को बेकरार मोहम्मद यूनुस....भारत नहीं दे रहा भाव

ढाका (ईएमएस)। बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमले जारी है। बांग्लादेश और भारत के बीच तनाव की स्थिति बनी हुई है। इस बीच बांग्लादेश के कार्यकारी सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलने की गुहार लगाई थी एक रिपोर्ट के अनुसार अगले सप्ताह संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक के दौरान पीएम मोदी की बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के प्रमुख यूनुस से मिलने की उम्मीद नहीं है।

बता दें कि इस महीने की शुरुआत में बांग्लादेश की ओर से महासभा के दौरान एक बैठक के लिए औपचारिक अनुरोध किया गया था। इसमें दोनों नेता भाग लेने वाले हैं। नाम न बताने की शर्त पर वरिष्ठ अधिकारियों ने बताया कि यूनुस पीएम मोदी के साथ बैठक के मिलने के लिए उत्सुक थे। उन्हें उम्मीद थी कि इससे शेख हसीना सरकार के पतन के बाद से द्विपक्षीय संबंधों में उभरी परेशानियों को दूर करने में मदद मिलेगी।

लेकिन सवाल है कि एक ओर यूनुस सरकार बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार को लेकर बेखबर दिख रही हैं। वहीं दूसरी ओर बांग्लादेश शेख हसीना पर भारत को वार्निंग दे रहा है। इस सब के बाद भारत कैसे माने कि यूनुस भारत के साथ रिश्तों में सुधार चाहते हैं। अगर वह ऐसा चाहते हैं, तब उन्हें पहले कूटनीति के दांवपेंच सीखना होगा। हर चीज उनके हिसाब से नहीं हो सकती है। लोगों का कहना है कि ऐसी कोई बैठक भारतीय पक्ष के एजेंडे का हिस्सा नहीं है।

यूनुस द्वारा एक इंटरव्यू में भारत-बांग्लादेश संबंधों पर की गई टिप्पणियां और ढाका में अंतरिम सरकार के सदस्यों द्वारा प्रतिदिन की जाने वाली टिप्पणियां भारत को बिल्कुल रास नहीं आई। इंटरव्यू में यूनुस ने भारत में निर्वासन के दौरान बांग्लादेश में विकास पर टिप्पणी करने के लिए पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की आलोचना की। अंतरिम सरकार के अन्य सदस्यों, जिनमें वास्तविक विदेश मंत्री तौहीद हुसैन भी शामिल हैं, ने हसीना के प्रत्यर्पण की संभावना को बार-बार उठाया है।

एफबीआई का बड़ा खुलासाः ईरानी हैकर्स ने ट्रंप की सीक्रेट फाइल्स चुराकर बाइडेन की टीम को दी

वॉशिंगटन(ईएमएस)। अमेरिकी राष्ट्रीय खुफिया एजेंसी एफबीआई ने बयान में कहा है कि जुलाई महीने में बाइडेन के प्रचार अभियान टीम से जुड़े लोगों को एक अनचाहा ई-मेल मिला था, जिसमें ईरानी हैकर्स ने ट्रंप के अभियान से जुड़े गैर सार्वजनिक ऑनलाइन सामग्रियां भेजी थी। हालांकि बाइडेन की टीम ने उस ईमेल का जवाब नहीं दिया। अगस्त में, एजेंसी ने ईरान को इस हैक का जिम्मेदार ठहराया था और तेहरान पर 2024 के चुनाव को प्रभावित करने की कोशिश करने का आरोप लगाया। हालांकि ईरान ने इन आरोपों से इनकार किया था।बयान में कहा गया है कि, नवंबर में चुनाव के दिन के करीब आने के साथ ही विदेशी ताकतें चुनाव प्रभावित करने वाली गतिविधियों को बढ़ा रहे हैं। रूस, ईरान और चीन पर विशेष रूप से यह आरोप लगाया गया है कि वे किसी न किसी तरह से अपने फायदे के लिए अमेरिकी समाज में विभाजन को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। अमेरिकी एजेंसियों ने कहा कि ईरानी साइबर हमलावरों ने ट्रंप अभियान से चुराई गई जानकारी को अमेरिकी मीडिया संगठनों के साथ साझा करने का भी प्रयास किया था। हालांकि एजेंसी ने उन आउटलेट्स का नाम नहीं बताया। वहीं दूसरी तरफ अगस्त में ईरान ने आरोपों से इनकार किया था तथा संयुक्त राष्ट्र में उसके मिशन ने वाशिंगटन को सबूत जारी करने की चुनौती दी। उस समय ईरानी मिशन ने कहा था, ऐसे आरोप निराधार हैं और इनका कोई आधार नहीं है। जैसा कि हमने पहले घोषणा की है, इस्लामिक गणराज्य ईरान का अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में हस्तक्षेप करने का न तो इरादा है और न ही मकसद है। अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव को लेकर डोनाल्ड ट्रंप और कमला हैरिस के बीच कांटे की टक्कर चल रही है। पिछली और दोनों के बीच हुई पहली डिबेट में हालांकि कमला हैरिस ने बाजी मार ली हो लेकिन, ट्रंप ने अभी अपनी हार नहीं स्वीकारी है।

इजरायल में आधी रात को अचानक बजने लगे मोबाइल, साइबर अटैक की आशंका

तेलअवीव(ईएमएस)। लेबनान का आतंकी संगठन हिजबुल्लाह पेजर और वॉकी-टॉकी अटैक से बेहाल है। उसने आरोप लगाया है कि इजरायली खुफिया एजेंसी मोसाद ने इस पूरे कांड को रचा। इसी बीच खबर आई की इजरायल पर साइबर अटैक हुआ है। यहां अचानक मोबाइल बजने लगे और हमले का अलर्ट दिया गया। लोकल मीडिया की रिपोर्ट है कि आधी रात को अचानक इजरायलियों के फोन बजने लगे। उन पर इमरजेंसी मैसेज दिखने लगा। मैसेज में इजरायलियों को सुरक्षित जगह भाग जाने के लिए कहा गया था। इस तरह के हजारों मैसेज मिलने के बाद अफरा-तफरी जैसी स्थिति पैदा हो गई। इजरायली अधिकारी इस तरह के मैसेज की जांच कर रहे हैं। बताया जा रहा है कि ये ईरानी हैकर्स द्वारा प्रायोजित हो सकते हैं।

वहीं, इजरायली सेना आईडीएफ ने इस तरह के मैसेजों को फर्जी करार देते हुए कहा कि उन्होंने इजरायलियों को इस तरह का कोई संदेश नहीं भेजा। यह साइबर अटैक हो सकता है। आईडीएफ के बयान में कहा गया, आपातकालीन घोषणा वाला मैसेज हमारी ओर से नहीं किया गया। होम फ्रंट कमांड की रक्षा नीति में कोई बदलाव नहीं हुआ है। गौरतलब है कि इजरायल पर साइबर हमले की खबर लेबनान में लगातार दो दिन पेजर और वॉकी-टॉकी विस्फोटों में मारे गए 20 से अधिक लोगों की जान जाने के बाद आई है। हिजबुल्लाह के अधिकारियों के मुताबिक, बेरूत और दक्षिणी लेबनान के कई इलाकों में लोगों के जेब में रखे पेजर में अचानक विस्फोट होने लगे। लेबनान मंगलवार को हुए इस हमले से संभला भी नहीं था, तभी अगले दिन बुधवार को वॉकी-टॉकी विस्फोट में कई लोगों की जान चली गई। इन दोनों हमलों के पीछे इजरायल की खुफिया एजेंसी मोसाद का हाथ बताया जा रहा है। पेजर और वॉकी-टॉकी में विस्फोटक भरा हुआ था। इजरायली मीडिया ने बताया कि बुधवार देर रात देशभर के इजरायलियों को आपातकालीन अलर्ट में फर्जी मैसेज प्राप्त हुए। जिनमें उनसे कहा गया कि वे जहां हैं, वहां से चले जाएं और किसी सुरक्षित क्षेत्र में चले जाएं। संदेश के व्यापक रूप से प्रसारित होने के बाद बताया कि इस संभावना की जांच की जा रही है कि इसके पीछे ईरान का हाथ है।

पुर्तगाल में जंगल की आग के बाद उठता हुआ धूआं।

अमेरिका हुआ नाराज....चीन को लुभाने सैन्य बेस के लिए जमीन देने को तैयार पाकिस्तान

इस्लामाबाद (ईएमएस)। पाकिस्तान ने हमेशा ही चीन और अमेरिका के साथ अपने संबंधों को बयान रखने की कोशिश की है। वहीं अमेरिका और चीन दोनों ही पाकिस्तान में राजनीतिक अस्थिरता का फायदा उठाकर अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश करते रहे हैं। एक रिपोर्ट में सीक्रेट दस्तावेजों के आधार पर दावा किया है कि पाकिस्तान ने चीन से ग्वादर में एक सैन्य बेस बनाने के लिए जगह देने का वादा किया था। ये तब हुआ था जब पाकिस्तान अमेरिका को लुभाने में कामयाब नहीं हो सका था। इसके अलावा बीजिंग की लंबे समय से चली आ रही पाकिस्तान के अंदर संयुक्त सैन्य अभियानों को अधिकृत करने की मांग पर भी इस्लामाबाद ने भरोसा दिया था।

रिपोर्ट कहती है कि अमेरिका के संबंधों की बेहतरी के प्रयास में 2022 के अक्टूबर में पाकिस्तान के सैन्य प्रमुख कमर जावेद बाजवा वॉशिंगटन की आधिकारिक यात्रा पर गए थे। बाजवा वाशिंगटन को आश्वस्त करना चाहते थे कि पाकिस्तानी सेना अमेरिका की ओर देख रही है ना कि चीन या रूस की तरफ। अमेरिका में बाजवा ने वादा किया कि बीजिंग के मुकाबले अमेरिका को पाकिस्तानी सेना की प्राथमिकता पर जोर दिया जाएगा। पाकिस्तान की कोशिश अमेरिका का पहले जैसा समर्थन और विश्वास हासिल करने की थी, जिसमें पाकिस्तान को कामयाबी नहीं मिल पाई। अमेरिकी दांव के विफल होने के बाद पाकिस्तानी अधिकारी चीन के साथ संबंधों को सुधारने के अपने प्रयासों में तेजी लेकर आए। दस्तावेजों से पता चलता है कि चीन को लुभाने के लिए पाकिस्तान ने वादा किया कि ग्वादर के बंदरगाह पर सैन्य अड्डे के लिए बीजिंग मंजूरी दी जाएगी।

सीक्रेट डॉक्यूमेंट से पता चलाता हैं कि पाकिस्तान की सैन्य-समर्थित सरकार ने निजी तौर पर बीजिंग को ग्वादर के प्रमुख बंदरगाह में सैन्य अड्डा देने का वादा किया। ग्वादर चीन की बेल्ट-एंड-रोड पहल में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। पाकिस्तान से होने वाले गलियारे का अंतिम पड़ाव चीन की अर्थव्यवस्था को पश्चिम से जोड़ेगा और दक्षिण चीन सागर में शिपिंग पारगमन पर इस कम निर्भर बनाएगा। ग्वादर अरब सागर के तट पर रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण होर्मुज जलडमरूमध्य के मुहाने पर स्थित है। वहां एक सैन्य अड्डा चीन की अपने क्षेत्र से परे बल प्रक्षेपित करने की क्षमता को बदल देगा और उसे दक्षिण पूर्व एशिया में समुद्री ऊर्जा शिपिंग मार्गों पर निर्भरता से मुक्त कर देगा, जबकि बीजिंग के खिलाफ वाशिंगटन की रोकथाम की रणनीति को कमजोर करेगा।

सिंगापुर में भारतीय मूल के व्यक्ति पर जुर्माना...जाने क्या हैं मामला

सिंगापुर (ईएमएस)। सिंगापुर के एक अस्पताल में उपचाराधीन भारतीय मूल के व्यक्ति पर सुरक्षा अधिकारी, पुलिस अधिकारियों और उसका उपचार कर रहे चिकित्सक के साथ अभद्रता करने के आरोप में जुर्माना लगाया गया है।

रिपोर्ट के अनुसार, मोहनराजन मोहन (30) ने उत्पीड़न से संरक्षण अधिनियम के तहत दो आरोपों में दोष स्वीकार किया है। राज्य अभियोजन अधिकारी ए. मजीद यूसुफ ने बताया कि 14 अप्रैल को मोहनराजन को बेहोशी की हालत में अस्पताल ले जाया गया था। अस्पताल में जांच करते समय उसे होश आ गया। अभियोजक ने कहा कि मोहनराजन नशे में था। इसके बाद मोहनराजन ने अस्पताल से छुट्टी देने पर जोर दिया और चिकित्सक तथा स्वास्थ्य कर्मियों के साथ गाली-गलौज शुरू कर दी। इस दौरान एक सहायक पुलिस अधिकारी से भी मोहनराजन ने अभद्र का प्रयोग किया। आपातकालीन विभाग से बाहर ले जाते समय भी वह सहायक पुलिस अधिकारी पर चिल्लाता रहा। इसके बाद मोहन को गिरफ्तार कर लिया गया।

अमेरिका में राष्ट्रपति कोई भी बने,एलन मस्क की रहेगी बल्ले-बल्ले

वाशिंगटन,(ईएमएस)। टेस्ला, स्पेसएक्स और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स के मालिक एलन मस्क को नेताओं का नेता कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। क्योंकि अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में उन्होंने एक छोटी सी झलक दिखाई है। जिसकी वजह से मस्क मस्क एक बार फिर अमेरिकी राजनीति के केंद्र में आ गए हैं। नवंबर में होने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति चुनावों से पहले मस्क के व्यवहार को लेकर नई बहस छिड़ गई है। एक तरफ जहां मस्क ने खुले तौर पर रिपब्लिकन उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रम्प का समर्थन किया है, वहीं उनकी कंपनियों के कर्मचारी डेमोक्रेटिक पार्टी की कमला हैरिस को चंदा देने में सबसे आगे हैं। यह विरोधाभासी स्थिति कई सवाल खड़े कर रही है।

मस्क ने एक्स पर एक पोस्ट के जरिए ट्रम्प का समर्थन किया था, जिसमें ट्रम्प ने चुनाव जीतने पर मस्क को गवर्नमेंट एफिशिएंसी कमीशन का प्रमुख बनाने का वादा किया था। यह सब ऐसे समय में हो रहा है जब मस्क पर दक्षिणपंथी झुकाव के आरोप लगते रहे हैं। 2020 के चुनावों में मस्क ने जो बाइडेन का समर्थन किया था, लेकिन हाल ही में उन्होंने खुद को वामपंथी विचारधारा से दूर करते हुए ट्रम्प के साथ अपनी नजदीकियों का प्रदर्शन किया है।विशेषज्ञों का मानना है कि मस्क की कंपनियों के कई कर्मचारी कैलिफ़ोर्निया में रहते हैं, जो डेमोक्रेटिक पार्टी का गढ़ माना जाता है। यह संभव है कि मस्क के कर्मचारी अपनी व्यक्तिगत पसंद के आधार पर कमला हैरिस को समर्थन दे रहे हों। हालांकि, मस्क की व्यक्तिगत राजनीतिक मंशा और उनके कर्मचारियों के व्यवहार के बीच यह विरोधाभास चुनावी माहौल में एक चर्चा का विषय बना हुआ है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक मस्क की कंपनियों के कर्मचारी डेमोक्रेटिक उम्मीदवार कमला हैरिस के चुनावी अभियान को बड़े पैमाने पर आर्थिक योगदान दे रहे हैं। ओपनसीक्रेट्स लाबिंग और डोनेशन से जुड़े डेटा को इकट्ठा करने का काम करती है। इसके अनुसार, टेस्ला के कर्मचारियों ने हैरिस के राष्ट्रपति अभियान में 42,824 डॉलर का योगदान दिया, जबकि ट्रम्प के अभियान को केवल 24,840 डॉलर मिले। स्पेसएक्स के कर्मचारियों ने भी हैरिस को 34,526 डॉलर दिए, जबकि ट्रम्प को केवल 7,652 डॉलर ही मिले। इसी प्रकार, सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स के कर्मचारियों ने हैरिस को 13,213 डॉलर का योगदान दिया, जबकि ट्रम्प को मात्र 500 डॉलर प्राप्त हुए।

उत्तर कोरिया में शीर्ष नेता किम जोंग उन एक बैलास्टिक मिसाइल की लांचिंग देखते हुए।

ट्रंप की रैली से पहले फैली बम की अफवाह, संदिग्ध हिरासत में

वाशिंगटन,(ईएमएस)। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति और राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप की न्यूयॉर्क में प्रस्तावित रैली स्थल के पास एक कार में विस्फोटक मिलने की सूचना पर तुरंत कार्रवाई करते हुए अधिकारियों ने सोशल मीडिया पर से इस तरह की फर्जी सूचना और अफवाह फर्जी को हटा दिया है। ट्रंप की यूनियनडेल के नासाउ कोलिजीयम में बुधवार को होने वाले प्रचार अभियान कार्यक्रम से कुछ घंटे पहले ही कार में विस्फोटक की झूठी खबरें प्रसारित हो गई थीं। पुलिस आयुक्त पैट्रिक राइडर ने बताया कि पुलिस ने रैली स्थल के पास एक व्यक्ति से पूछताछ कर उसे हिरासत में लिया था।

नेतन्याहू को मारने का प्लान फेल........शिन बेट का दावा, इजरायली व्यवसायी का इस्तेमाल कर रहा था ईरान

तेल अवीव (ईएमएस)। इजरायल ने दावा किया है कि उसने ईरान की बड़ी साजिश को नाकाम कर दिया है। इजरायल की आतंरिक सुरक्षा के लिए जिम्मेदार एजेंसी शिन बेट ने कहा है कि प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू, रक्षा मंत्री योव गैलेंट और शिन बेट डायरेक्टर रोनेन बार की हत्या की ईरान की साजिश को नाकाम किया है। शिन बेट ने गुरुवार को ये बड़ा दावा किया है। इस साजिश में ईरान एक इजरायली व्यवसायी का इस्तेमाल कर रहा था, जिसने तुर्की में काफी समय बिताया था। वे इजरायल में हत्या की योजना बनाने के लिए तुर्की और ईरानी दोनों व्यक्तियों के साथ बैठकें और लेनदेन कर रहा था।

रिपोर्ट के मुताबिक, प्लान को पूरा करने के लिए इस वर्ष अप्रैल में तुर्की के नागरिक आंद्रेई फारूक असलान और गुनीद असलान ने इजरायली कारोबारी से संपर्क कर ईजदी नाम के एक अमीर ईरानी के दो प्रतिनिधियों से मिलने के लिए तुर्की के शहर समंदाग में बुलाया। ये बैठक मई के महीने में हुई थी। वह इस पर सहमत हो गया कि तुर्की से कार के द्वारा ईरान में जाएगा, जहां उसकी मुलाकात ईदी और हज नाम के ईरानी सुरक्षा प्रतिष्ठान के सदस्य से हुई। रिपोर्ट के मुताबिक, इजराइयली कारोबारी ने किसी भी गतिविधि को शुरू करने से पहले शुरू में दस लाख डॉलर मांगे थे।

इजरायली व्यवसायी ने इसके बाद अगस्त में दूसरी बार ईरान का दौरा कर साजिश को पूरा करने के लिए अपने वित्तीय, रसद और हथियार-संबंधी कार्यों की शुरुआत के हिस्से के रूप में 5,000 यूरो प्राप्त किए। अगस्त में ईरान की दूसरी यात्रा के दौरान इजराइली कारोबारी को फिर से तुर्की से ईरान में लाया गया। इजरायली व्यवसायी से निगरानी और खुफिया जानकारी जुटाने के उद्देश्य से कुछ इजरायली साइटों के वीडियो लेने के लिए कहा गया था। ईरान की दूसरी यात्रा के दौरान इजरायली व्यवसायी से पूछा गया कि क्या वह रूसियों और अमेरिकियों को इस प्लान में शामिल कर सकेगा। इनका इस्तेमाल यूरोप और अमेरिका में रहने वाले ईरान विरोधी लोगों के खिलाफ किया जा सकेगा। शिन बेट ने कहा कि ऐसा लगाता है कि ईरान इस तरह की आतंकी गतिविधियों के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है, ये खतरा एक साजिश को उजागर करने से खत्म नहीं होगा। शिन बेट की ओर से यह स्पष्ट नहीं किया गया कि क्या इन साजिशों के संबंध में ईरान और हिजबुल्लाह के बीच कोई समन्वय था या नहीं और कैसे इसकी रूपरेखा तैयार की गई थी। इस प्लान के समय के बारे में शिन बेट ने कोई जवाब नहीं दिया।

अमेरिकी कोर्ट का भारत सरकार को समन

नई दिल्ली(ईएमएस)। अमेरिका के एक कोर्ट ने खालिस्तानी आतंकी गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या की साजिश के मामले में भारत सरकार को समन भेजा। इस समन में भारत के एनएसए अजीत डोभाल, पूर्व रॉ चीफ सामंत गोयल, रॉ एजेंट विक्रम यादव और बिजनेसमैन निखिल गुप्ता का नाम भी शामिल है। अमेरिकी कोर्ट ने 21 दिन में इस समन का जवाब देने के लिए कहा है। पन्नू ने अमेरिका की एक जिला अदालत अपनी हत्या की साजिश को लेकर मुकदमा दर्ज कराया था। पिछले साल अमेरिका ने आरोप लगाया था कि न्यूयॉर्क में पन्नू पर जानलेवा हमले की साजिश रची गई थी। इसमें भारत का हाथ था। इस साजिश को नाकाम कर दिया गया। समन के जवाब में गुरुवार को विदेश मंत्रालय ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा कि ये समन पूरी तरह से गलत है। विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री ने कहा कि जब ये मामला हमारे सामने आया तो हमने एक्शन लिया। इस मामले में उच्च स्तरीय कमेटी भी बनाई गई है।

क्वाड ग्रुप पहले से कहीं ज्यादा एकजुट और प्रासंगिक हो गयाः अमेरिका

वाशिंगटन,(ईएमएस)। डेलावेयर में होने वाला आगामी क्वाड शिखर सम्मेलन यह बताएगा कि चार देशों का यह ग्रुप पहले से कहीं ज्यादा रणनीतिक रूप से एकजुट और प्रासंगिक हो गया है। यह बात अमेरिका के व्हाइट हाउस के राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के रणनीतिक संचार निदेशक जॉन किर्बी ने कही। किर्बी ने कहा कि हमारा मानना है कि यह शिखर सम्मेलन क्वाड पहले से कहीं ज्यादा रणनीतिक रूप से एकजुट और प्रासंगिक हो गया है। उन्होंने यह टिप्पणी ऐसे समय में की है जब राष्ट्रपति जो बाइडन शनिवार को डेलावेयर के विलमिंगटन में क्वाड के अन्य सदस्य देशों ऑस्ट्रेलिया, भारत और जापान के नेताओं के साथ बातचीत करने वाले हैं। किर्बी ने बताया कि ऐसा पहली बार होगा जब अमेरिका के राष्ट्रपति अपने गृहनगर विलमिंगटन में क्वाड शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेंगे। उन्होंने कहा कि जो बाइडन भारत के पीएम नरेन्द्र मोदी, जापानी पीएम फूमियो किशिदा और आस्ट्रेलिया के पीएम एंथनी अल्बानीस से अलग-अलग मुलाकात करेंगे और बाद में एक पूर्ण अधिवेशन में चर्चा की जाएगी। किर्बी ने कहा कि पिछले तीन सालों से ज्यादा समय से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अमेरिका के गठबंधन सहयोगियों और साझेदारों को और मजबूत करने के उद्देश्य से वहां निवेश करना जो बाइडन की प्राथमिकता है।

हिजबुल्लाह के हमले पर बोला इजराइल...हमारे पास अभी भी कई हथियार

गाजा (ईएमएस)। इजरायल और हमास के बीच युद्ध में लगातार दोनों एक-दूसरे पर हमला कर रहे हैं। लेबनान में हिजबुल्लाह ने ताबड़तोड़ 2 पेजर अटैक हुए। लेकिन इसके बाद हिजबुल्लाह नहीं रुका। हिजबुल्लाह ने इजरायल पर 5 मिनट में दनादन 20 रॉकेट दाग दिए। इस हमले के बाद इजरायली सेना आईडीएफ की ओर से बयान जारी किया गया है। बयान में कहा है कि गलील इलाके में लेबनान की तरफ से दागे गए रॉकेट में से कुछ को एयर डिफेंस ने खत्म किया। बाकी इजरायल के तेल हाई के इलाके में गिरी। राकेट के गिरने से कई जगहों पर आग लग गई। फिलहाल इस अटैक में किसी के भी हताहत होने की खबर नहीं है। हालांकि हिजबुल्लाह ने बदले की धमकी जरूर दी है। हिजबुल्लाह की कार्यकारी परिषद के प्रमुख हाशिम सफीउद्दीन ने अनोखी सजा देने और खूनी बदला लेने की बात कही है। हिजबुल्लाह ने इन हमलों के लिए इजराइल को दोषी ठहराया है। सफीउद्दीन, हिजबुल्लाह प्रमुख हसन नसरूल्लाह का चचेरा भाई और अहम सहयोगी है। इधर इजरायली चीफ ऑफ जनरल स्टाफ ने हिजबुल्लाह को चेतावनी दी है। इजरायली चीफ ऑफ जनरल स्टाफ ने कहा कि मारे पास अभी भी कई क्षमताएं हैं जिन्हें हमने अभी तक सक्रिय नहीं किया है।

रुस में लंच और कॉफी ब्रेक अंतरंग संबंध बनाने की अपील

मॉस्को (ईएमएस)। अपने नागरिकों से रूस के हेल्थ मिनिस्टर डॉ. येवगेनी शेस्टोपालोव ने अपील की है कि वे अपने व्यस्त कामकाज के दौरान मिलने वाले लंच और कॉफी ब्रेक का उपयोग अंतरंग संबंध बनाने के लिए करें, ताकि देश की गिरती प्रजनन दर में सुधार हो सके। डॉ. शेस्टोपालोव ने कहा कि आज की तेज़ रफ्तार जिंदगी में लोग अपने परिवार को बढ़ाने के लिए पर्याप्त समय नहीं निकाल पाते। उन्होंने सुझाव दिया कि व्यस्त दिनचर्या के बावजूद नागरिक अपने ब्रेक के समय का उपयोग इस दिशा में कर सकते हैं। उनका मानना है कि जीवन तेजी से बीत रहा है और इसलिए लोगों को परिवार बढ़ाने के लिए ज्यादा जागरूक होना चाहिए। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने भी हाल ही में जनसंख्या वृद्धि को राष्ट्रीय प्राथमिकता बताया था। सरकार ने इस दिशा में कई नीतिगत कदम उठाए हैं, जैसे 18 से 40 साल की महिलाओं को मुफ्त प्रजनन जांच की सुविधा प्रदान करना और गर्भपात की सेवाओं पर प्रतिबंध लगाना। इसके अलावा, तलाक शुल्क बढ़ाकर दंपतियों में अलगाव को हतोत्साहित करने की कोशिश की जा रही है। युवा महिलाओं को 19-20 साल की उम्र में बच्चे पैदा करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, ताकि देश की जनसंख्या को स्थिर किया जा सके। रूस में जनसंख्या वृद्धि के इस संकट से निपटने के लिए सरकार ने विभिन्न योजनाओं की शुरुआत की है, जिनमें कामकाजी महिलाओं को प्रजनन में सहायता देने के लिए नियोक्ताओं पर दबाव डालने जैसी नीतियां भी शामिल हैं। इन कदमों का मुख्य उद्देश्य परिवार बढ़ाने की संस्कृति को प्रोत्साहित करना और देश की घटती आबादी को स्थिर करना है। इस पहल को लेकर देश में मिश्रित प्रतिक्रियाएं आ रही हैं, लेकिन सरकार का मानना है कि ये कदम रूस के जनसंख्या संकट से निपटने में मददगार साबित हो सकते हैं। बता दें कि रूस की प्रजनन दर हाल ही में 2.1 से गिरकर 1.5 बच्चे प्रति महिला तक पहुंच गई है। यह गिरावट सरकार के लिए चिंता का विषय बन गई है, खासकर यूक्रेन युद्ध के चलते, जिससे देश में मृत्यु दर में 18 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है और बड़ी संख्या में युवा रूस छोड़कर विदेश जा रहे हैं।

स्ट्रोक पुनर्वास में एचआईआईटी की भूमिका पर डाली नई रोशनी

वॉशिंगटन (ईएमएस)। विशेषज्ञों ने हाल ही में पुष्टि की है कि उच्च तीव्रता अंतराल प्रशिक्षण (एचआईआईटी), यानी एक मिनट की तीव्र व्यायाम और छोटे विश्राम के साथ किया गया प्रशिक्षण, स्ट्रोक के रोगियों के लिए पारंपरिक मध्यम व्यायाम की तुलना में अधिक प्रभावी हो सकता है। इस अध्ययन ने स्ट्रोक पुनर्वास में एचआईआईटी की भूमिका पर नई रोशनी डाली। जब स्ट्रोक होता है, तो मस्तिष्क में रक्त प्रवाह बाधित हो जाता है, जिससे मस्तिष्क के कुछ हिस्सों में क्षति होती है। इससे शारीरिक और संज्ञानात्मक कार्यों पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है, जैसे कि शरीर के कुछ हिस्सों में लकवा, याददाश्त में कमी, और बोलने में कठिनाई। पुनर्वास के दौरान, व्यायाम मस्तिष्क की न्यूरोप्लास्टिसिटी को बढ़ावा देकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे मस्तिष्क क्षतिग्रस्त कोशिकाओं के कार्यों को नए सिरे से संगठित कर सकता है। एचआईआईटी एक प्रकार का व्यायाम है जिसमें एक मिनट तक लगातार तीव्र शारीरिक गतिविधि की जाती है, उसके बाद थोड़े समय का आराम दिया जाता है। इसका उद्देश्य कम समय में अधिक शारीरिक क्षमता और सहनशक्ति का विकास करना है। स्थिर बाइक, ट्रेडमिल, बॉडीवेट एक्सरसाइज, केटलबेल और रस्सी कूदना इस प्रशिक्षण के सामान्य उदाहरण हैं। एक हालिया अध्ययन के अनुसार, एचआईआईटी स्ट्रोक के बाद शरीर की एरोबिक फिटनेस में सुधार करने में पारंपरिक मध्यम व्यायाम की तुलना में अधिक प्रभावी पाया गया है। हालांकि एचआईआईटी के फायदे स्पष्ट हैं, लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि यह हर किसी के लिए उपयुक्त नहीं हो सकता है। गंभीर हृदय रोग से पीड़ित या शारीरिक रूप से कमजोर रोगियों के लिए यह व्यायाम सुरक्षित नहीं हो सकता। इसलिए, उन्हें तब तक इस प्रकार के व्यायाम से बचने की सलाह दी जाती है, जब तक कि वे एक निश्चित फिटनेस स्तर तक नहीं पहुंच जाते।

हरी खाद का करें प्रयोग
मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ाएं

वर्तमान समय में मिट्टी में रसायनिक उर्वरकों के असंतुलित प्रयोग एवं सीमित उपलब्धता को देखते हुये अन्य पर्याय भी उपयोग में लाना आवश्यक हो गया है। तभी हम खेती की लागत को कम कर फसलों की प्रति एकड उपज को भी बढ़ा सकते हैं, साथ ही मिट्टी की उर्वरा शक्ति को भी अगली पीढी के लिये बरकरार रख सकेंगे। हरी खाद मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिये एवं फसल उत्पादन हेतु जैविक माध्यम से तत्वों की पूर्ति का वह साधन है, जिसमें हरी वानस्पतिक सामग्री को उसी खेत में उगाकर या कहीं से लाकर खेत में मिला दिया जाता है।

इस प्रक्रिया को ही हरी खाद देना कहते हैं। सीमित संसाधनो के समुचित उपयोग हेतु कृषक एक फसली द्वीफसली कार्यक्रम व विभिन्न फसल चक्र अपना रहे है, जिससे मृदा का लगातार दोहन हो रहा है। जिससे उसमें उपस्थित पौधों के बढ़वार के लिए आवश्यक पोषक तत्व नष्ट होते जा रहें है। इस क्षतिपूर्ति हेतु विभिन्न तरह के उर्वरक व खाद का उपयोग किया जाता है। उर्वरक द्वारा मृदा में सिर्फ आवश्यक पोषक तत्व जैसे- नत्रजन, स्फुर पोटाश जिंक इत्यादि की पूर्ति होती है। मगर मृदा की संरचना उसकी जल धारणा क्षमता एवं उसमें उपस्थित सूक्ष्मजीवों को क्रियाशीलता बढ़ाने में इनका कोई योगदान नहीं होता। अतः इन सबकी परिपूर्ति हेतु हरी खाद का प्रयोग एक अहम भूमिका निभाता है। भारत वर्ष में हरी खाद देने की प्रक्रिया पर लम्बे समय से चल रहे प्रयोगों व शोध कार्यों से सिद्ध हो चुका है, कि हरी खाद का प्रयोग अच्छे फसल उत्पादन के लिये बहुत लाभकारी है।

क्यों है हरी खाद की जरुरत

संपूर्ण विश्व में बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ दबाव और सभी को भोजन की आपूर्ति की होड़ में अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए तरह-तरह की रासायनिक खादों जहरीले कीटनाशकों का उपयोग से प्रकृति के जैविक और अजैविक पदार्थों के बीच आदान-प्रदान के चक्र को (इकोलॉजी सिस्टम प्रभावित किया जा रहा है। जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट हो रही है वातावरण प्रदुषण हो रहा है तथा मनुष्य के स्वास्थ्य में गिरावट आती जा रही है। इसके महत्त्व को देखते हुए किसानों ने भी इसमें रूचि लेना शुरू कर दिया है जिससे जैविक खेती का क्षेत्र रकबा पिछले एक दशक में तकरीबन 17 गुना बढ़ गया है।

हरी खाद वाली फसलों की विशेषताएं

हरी खाद के लिए फसलों में निम्न गुणों का होना आवश्यक है, जैसे-
1. दलहनी फसलों की जड़ों में उपस्थित सहजीवी जीवाणु ग्रंथियाँ (गाठे) वातावरण में मुक्त नाइट्रोजन को यौगिकीकरण द्वारा पौधों को उपलब्ध कराती हो।
2. फसल शीघ्र वृद्धि करने वाली हो, हरी खाद के लिए ऐसी फसल होनी चाहिए जिसमें तना, शाखाएँ और पत्तियाँ कोमल एवं अधिक हों ताकि मिट्टी में शीघ्र अपघटन होकर अधिक से अधिक जीवांश तथा नाइट्रोजन मिल सके।
3. चयनित फसलें मूसला जड़ वाली होनी चाहिए ताकि गहराई से पोषक तत्वों का अवशोषण हो सके।
4. क्षारीय एवं लवणीय मृदाओं में गहरी जड़ों वाली फसलें अंतःजल निकास बढ़ाने में आवश्यक होती हैं, फसल सूखा अवरोधी के साथ जल मग्नता को भी सहन करने वाली होनी चाहिए।
5. चयनित फसल पर रोग एवं कीट कम लगते हों तथा बीज उत्पादन की क्षमता अधिक हो।
6. हरी खाद के साथ-साथ फसलों को अन्य उपयोग में भी लाया जा सके।

हरी खाद के लिए प्रमुख फसलें

दलहनी फसलों में ढेंचा, सनई, उर्द, मूंग, अरहर, चना, मसूर, मटर, लोबिया, मोठ, खेसारी तथा कुल्थी मुख्य हैं। लेकिन जायद में हरी खाद के रूप में अधिकतर सनई, ढैंचा, उर्द एवं मूंग का प्रयोग ही प्रायः अधिक होता है।

ढैंचा-

यह एक दलहनी फसल है। यह सभी प्रकार की जलवायु तथा मिट्टी में सफलतापूर्वक उगाई जाती है। जलमग्न दशा में भी यह 1.5 से 1.8 मीटर की ऊँचाई कम समय में ही प्राप्त कर लेती हैं। यह फसल एक सप्ताह तक उसे तेज हवा चलने पर भी 60 सेंटीमीटर तक का जल भराव भी सहन कर लेती हैं। इन दशाओं में ढैंचा के तने से पार्श्व जड़े निकल आती हैं, जो पौधों को गिरने नहीं देती।
अंकुरण होने के बाद यह सूखे को सहन करने की भी क्षमता रखती हैं। इसे क्षारीय तथा लवणीय मृदा में भी उगाया जा सकता हैं। हरी खाद के लिए प्रति हेक्टेयर 60 किलोग्राम ढैंचे के बीज की आवश्यकता होती है। ऊसर में ढैंचे से 45 दिन में 20 से 25 टन हरा पदार्थ तथा 85 से 105 किलोग्राम नाइट्रोजन मृदा को प्राप्त होती हैं। धान की रोपाई के पूर्व ढैंचा की पलटाई से खरपतवार नष्ट हो जाते हैं।

सनई-

बलुई अथवा दोमट मृदाओं (अच्छे जल निकास वाली) के लिए यह उत्तम दलहनी हरी खाद की फसल है। इसकी बुवाई मई से जुलाई तक वर्षा प्रारम्भ होने पर अथवा सिंचाई करके की जा सकती है। एक हेक्टेयर खेत में 80 से 90 किलोग्राम बीज की बुआयी की जाती है। मिश्रित फसल में 30 से 40 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता हैं। यह तेज वृद्धि तथा मूसला जड़ वाली फसल है। जो खरपतवार को दबाने में समर्थ हैं। बीज बुवाई के 40 से 50 दिन बाद इसको खेत में पलट दिया जाता हैं। सनई की फसल से 20 से 30 टन हरा पदार्थ एवं 85 से 125 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर मृदा को प्राप्त हो जाती हैं।

उर्द एवं मूंग-

इन फसलों को अच्छी जल निकास वाली हल्की बलुई या दोमट भूमि में जायद ऋतु में बुआयी की जा सकती हैं। इनकी फलियाँ तोड़ने के बाद पौधों को खेत में हरी खाद के रूप में पलट देना चाहिए। प्रदेश में हरी खाद के लिए इनका आंशिक रूप में प्रयोग किया जा सकता है। बुवाई के लिए प्रति हेक्टेयर 15 से 20 किलोग्राम मूंग या उर्द बीज की आवश्यकता होती है। मूंग एवं उर्द से 10 से 12 टन प्रति हेक्टेयर हरा पदार्थ प्राप्त होता है।

उर्वरक प्रबन्धन

हरी खाद के लिए प्रयोग की जाने वाली दलहनी फसलों में भूमि में सूक्ष्म जीवों की क्रियाशीलता बढ़ाने के लिए विशिष्ट राइजोबियम कल्चर का टीका लगाना उपयोगी होता हैं। कम एवं सामान्य उर्वरता वाली मिट्टी में 10 से 15 किलोग्राम नाइट्रोजन तथा 40 से 50 किलोग्राम फास्फोरस प्रति हेक्टेयर उर्वरक के रूप में देने से ये फसलें पारिस्थितिकीय संतुलन बनाये रखने में अत्यन्त सहायक होती हैं।

हरी खाद की विधियाँ

हरी खाद की स्थानीय विधि- इस विधि में हरी खाद की फसल को उसी खेत में उगाया जाता है, जिसमें हरी खाद का प्रयोग करना होता हैं। यह विधि समुचित वर्षा अथवा सुनिश्चित सिंचाई वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त हैं। इस विधि में फसल को फूल आने के पूर्व वानस्पतिक वृद्धि काल (45 से 50 दिन) में मिट्टी में पलट दिया जाता है। मिश्रित रूप से बोई गयी हरी खाद की फसल को उपयुक्त समय पर जुताई द्वारा खेत में दबा दिया जाता है।
हरी पत्तियों की खाद- इस विधि में हरी पत्तियों एवं कोमल शाखाओं को दूसरी जगह से तोड़कर खेत में फैलाकर जुताई द्वारा मिट्टी में दबाया जाता हैं। जो मिट्टी में थोड़ी नमी होने पर भी सड़ जाती हैं। यह विधि कम वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए उपयोगी होती है।

सरसों समूह की फसलों से अच्छे उत्पादन हेतु खेत की तैयारी कैसे करें

हमारे देश में सरसों समूह की उगाई जाने वाली फसलें राया-सरसों, पीली सरसों, भूरी सरसों, गोभी सरसों और तारामीरा आदि प्रमुख है। भारत मे सरसों समूह फसलों की उत्पादकता को प्रभावित करने वाले कुछ प्रमुख कारक है, जैसे- अच्छे से खेत की तैयारी न करना, क्षेत्र विशेष की उपयुक्त किस्मों का चयन नहीं करना, असंतुलित उर्वरकों का प्रयोग, पादप रोगों, कीटों व खरपतवारों की पर्याप्त रोकथाम न करना, कोहरा एवं पाला का प्रकोप होने पर फसलों का बचाव न करना, उचित समय पर फसल की कटाई न करना इत्यादि प्रमुख है।

इनमें से किसी एक भी कमी से फसल की पैदावार में भारी नुकसान हो जाता है। कुछ क्षत्रों में नमी की सीमित मात्रा एवं खरपतवारों का अधिक प्रकोप भी उपज पर प्रतिकूल प्रभाव डालते है। भिन्न भिन्न क्षेत्रों में बोआई का उपयुक्त समय भी अलग है। यदि सिर्फ पुरानी किस्मों को ही बदल दिया जाए तो उत्पादकता में 15 से 20 प्रतिशत की बढोतरी की जा सकती है। वैज्ञानिक अनुसंधानो से पता चला है, कि उन्नतशील शस्य विधियों का समन्वित प्रबंधन करके सरसों समूह फसलों की पैदावार में डेढ़ से दो गुना वृद्धि की जा सकती है। इस लेख मे अच्छे उत्पादन के लिए सरसों समूह की फसलों के लिए खेत की तैयारी कैसे करें का उल्लेख किया गया है।

मृदा का चयन और सुधार

यह फसल समतल और अच्छे जल निकास वाली बलुई दोमट से दोमट मिट्टी में अच्छी उपज देती है। अच्छी पैदावार के लिए जमीन का पी एच मान 6 से 7 होना चाहिए। अत्यधिक अम्लीय एवं क्षारीय मिट्टी इसकी खेती हेतु अच्छी नहीं है। यधपि क्षारीय भूमि में उसके अनुकूल किस्म लेकर इसकी खेती की जा सकती है। जहाँ की भूमि लवणीय हो वहाँ पर खेत में पानी भरकर बाहर निकाल देना चाहिए, जिससे लवण पानी के साथ घुल कर बाहर चले जायें।
अगर पानी के निकास का समुचित प्रबंध न हो तो प्रत्येक वर्ष सरसों लेने से पूर्व देंचा को हरी खाद के रूप में उगाना चाहिए। जहाँ की जमीन क्षारीय है वहाँ प्रति तीसरे वर्ष जिप्सम 250 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करनी चाहिए। जिप्सम की आवश्यकता मिटटी के पी एच मान के अनुसार भिन्न हो सकती है। जिप्सम को मई से जून में जमीन में मिला देना चाहिए।

गर्मी की जुताई

▪ गर्मी की जुताई से कीटों, रोगों, खरपतवारों व भूमि में वायु संचार को नियंत्रित किया जा सकता है। भूमि में छिपे कीडे व अंडे, खरपतवारों के बीज, फफूंद एवं सूक्ष्म जीव जो बीमारियों को फैलाने में सहायक होते हैं, सूर्य की तेज किरणों से नष्ट हो जाते हैं। भूमि के छिद्र खुल जाते हैं, जिससे भूमि की जल सोखने की क्षमता बढ जाती है।
▪ भूमि की निचली सतह पर पाए जाने वाले लाभदायक सूक्ष्म जीवों की क्रियाएं तेज होने के परिणामस्वरूप भूमि में जीवांश पदार्थों की मात्रा एवं भूमि की उर्वरा शक्ति बढ जाती है। इसी के साथ पौधों को पोषक तत्वों एवं खनिज पदार्थों की उपलब्धता बढ़ती है। मिट्टी पलटने वाले हल से 15 से 25 सेंटीमीटर गहराई तक गर्मी की जुताई करनी चाहिए। देशी हल द्वारा जुताई नहीं करें, क्योकि इसके द्वारा मिट्टी पलटना संभव नहीं है।
▪ यदि खेत में ढलान हो तो जुताई ढलान के विपरीत दिशा में करनी चाहिए, जिससे वर्षा ऋतु में खेत से पानी व मिट्टी न बह पाएं। गर्मी की जुताई रबी फसल की कटाई के बाद प्रायः मई के प्रथम सप्ताह से जून के दूसरे सप्ताह के बीच करनी चाहिए। सरसों समूह की फसलों से अच्छी पैदावार के लिए ठीक से खेत तैयार करना जरूरी है, ताकि मिट्टी भुरभुरी हो जाए।

बारानी स्थिति में

▪ बारानी क्षेत्रों में भूमि तैयारी के वक्त नमी संरक्षण का विशेष ध्यान रखना चाहिए। भूमि की तैयारी वर्षा ऋतु से ही शुरू हो जाती है। खरपतवार नष्ट करने व नमी संरक्षण के लिए मिट्टी पलटने वाले हल से एक गहरी जुताई करें। इसके बाद हर प्रभावी बारिस के बाद खेत की जुताई करें तथा जुताई के तुरन्त बाद पाटा लगायें। यह नमी संरक्षण के लिए अत्यंत आवश्यक है।
▪ अन्तिम बारिस के बाद गहरी जुताई कर पाटा लगाकर नमी संरक्षण करें। इससे ज्यादा से ज्यादा वर्षा का पानी मिट्टी में जायेगा और मिट्टी के लवण की कुछ मात्रा भी फसल के जड़ क्षेत्र से नीचे चली जाएगी। बुवाई से पहले कल्टीवेटर से दो आड़ी जुताई कर मिट्टी को भुरभुरा बना दें। खेत में ढेले ना हों, क्योंकि इससे नमी में तेजी से कमी हो जाती हैं।
▪ आखरी जुताई के समय 5 से 10 टन गोबर की खाद या कम्पोस्ट का प्रयोग लाभकारी रहता है, साथ मे 25 से 30 किलोग्राम नाइट्रोजन, 25 से 35 किलोग्राम फास्फोरस, 25 किलोग्राम पोटाश ओर यदि कमी हो तो 20 किलोग्राम सल्फर का प्रति हेक्टेयर उपयोग किया जाता है। यदपि उर्वरकों का उपयोग मिट्टी परीक्षण के आधार पर करना लाभकारी पाया गया है।

सिंचित स्थिति में

▪ सिंचित क्षेत्रों में पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से और उसके बाद तीन से चार जुताईयां तबेदार (हेरो) हल से करनी चाहिए। सिचिंत क्षेत्र में जुताई करने के बाद खेत में पाटा लगाना चाहिए जिससे खेत में ढैले न बने। अगर बोने से पूर्व भूमि में नमी की कमी है, तो खेत में पलेवा करना चाहिए। बोने से पूर्व खेत खरपतवार रहित होना चाहिए।
▪ सिंचित क्षेत्रों में दो फसलीय पद्धति के अंतर्गत सरसों बुवाई के लिए भूमि की तैयारी, खरीफ फसलों की कटाई के बाद पलेवा देकर प्रारम्भ करें। पलेवा के बाद 2 या 3 जुताई करें व पाटा लगायें। हर दशा में खेत की मिट्टी को भुरभुरा व समतल बनायें।
▪ आखरी जुताई के समय 15 से 20 टन गोबर की खाद या कम्पोस्ट का प्रयोग लाभकारी रहता है, साथ मे 55 से 60 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस, 60 किलोग्राम पोटाश ओर यदि कमी हो तो 20 किलोग्राम सल्फर का प्रति हेक्टेयर उपयोग किया जाता है।

उत्पादन बढ़ाने के प्रमुख बिंदु

1. अच्छे उत्पादन के लिए सरसों समूह की फसल के अनुकूल भूमि का चयन करें।
2. क्षेत्र और मिटटी के अनुकूल किस्म का चयन करें।
3. यदि पूर्व की फसल के अवशेष खेत में है तो पहली जुताई कटर या मिटटी पलटने वाली मशीन से अवश्य करें।
4. सरसों की फसल के लिए गहरी जुताई के बाद दो से तीन जुताई देसी हल अथवा कल्टीवेटर से करने के बाद खेत की भूरबुरा और समतल बना लें।
5. यदि संभव हो तो अच्छे उत्पादन के लिए दूसरी जुताई के समय अच्छी गली-सड़ी गोबर अथवा कम्पोस्ट खाद मिटटी में मिला दें।
6. यदि खेत में दीमक का प्रकोप है, तो अंतिम जुताई से पहले 1.5 प्रतिशत चूर्ण क्लोरापाइरीफास 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर खेत में मिलाएं।
7. उर्वरकों का संतुलित उपयोग करें।
8. सरसों समूह की फसलों की बुआई स्मी पर करें।

अश्विन के शतक और जडेजा के अर्धशतक से भारतीय टीम ने पहली पारी में बनाये छह विकेट पर 339 रन

चेन्नई (ईएमएस)। आर अश्विन के शानदार शतक से भारतीय टीम ने बांग्लादेश के खिलाफ आज यहां शुरु हुए पहले क्रिकेट टेस्ट मैच की पहली पारी में छह विकेट पर 339 बना लिए। पहले दिन का खेल समाप्त होने के समय रविंद्र जडेजा 86 और अश्विन 102 रन बनाकर खेल रहे थे। इस प्रकार पहले दिन के खेल का आकर्षण जडेजा ओर अश्विन की अच्छी बल्लेबाजी रही। भारतीय टीम ने आज सुबह लंच तक 88 रनों पर ही तीन विकेट खेल दिये थे। पहले बल्लेबाजी करते हुए भारतीय टीम की शुरुआत खराब रही। सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा 6 रनों पर ही आउट हो गये। वहीं शुभमन गिल अपना खाता भी नहीं खोल पाये। अनुभवी विराट कोहली भी 6 रन ही बना पाये। इसके बाद यशस्वी जायसवाल 56 और कार हादसे के बाद लंबे प्रारुप में वापसी करते हुए ऋषभ पंत 39 ने स्कोर आगे बढ़ाया। ऋषभ के आउट होने के बाद केएल राहुल भी 16 रन ही बना पाये। इसके बाद जडेजा और अश्विन ने शानदार साझेदारी कर भारतीय टीम को संकट से उबारा। सुबह भारतीय टीम के शीर्ष बल्लेबाज असफल रहे। यशस्वी और ऋषभ ने चौथे विकेट के लिए 99 गेंद में 62 रन बनाये। ऋषभ हसन महमूद की गेंद पर आउट हुए। वहीं यशस्वी अर्धशतक लगाने के बाद मेहदी हसन मिराज का शिकार बने। राहुल भी काफी समय बाद वापसी करते हुए नाकाम रहे और नाहिद राणा की गेंद पर पहली स्लिप में शादमैन इस्लाम के हाथों कैच हो गये।

वह केवल 16 रन ही बना पाये। भारत के छह विकेट 150 रनों के अंदर गिर गये थे। दूसरे सत्र में भी बांग्लादेशी गेंदबाज हावी रहे। बांग्लादेश ने टॉस जीतकर भारतीय टीम को बल्लेबाजी के लिए बुंलाया। भारतीय टीम के शीर्ष बल्लेबाज महमूद का सामना नहीं कर पाये। इस मैच में शानदार साझेदारी कर अश्विन और जडेजा ने सचिन व जहीर का रिकॉर्ड तोड़ दिया। 144 रनों पर छठा विकेट गिरने के बाद जडेजा और अश्विन ने पारी संभाली इन दोनों ने आक्रामक अंदाज में खेलते हुए बांग्लादेशी गेंदबाजों पर दबाव बना दिया। इन दोनों ने 7वें विकेट के लिए स्टंप्स तक 227 गेंदों में 195 रनों की साझेदारी करते हुए भारत की पारी संभाल ली है। यह टेस्ट मैचों में बांग्लादेश के खिलाफ भारत की ओर से सातवें विकेट या इससे नीचे की सबसे बड़ी साझेदारी है। इससे पहले सचिन तेंदुलकर और जहीर खान ने साल 2004 में 10वें विकेट के लिए 133 रन बनाये थे। आज के मैच में बांग्लादेश की ओर से हसन महमूद ने सबसे ज्यादा 4 विकेट लिए। भारतीय टीम ने इस मैच में तीन तेज गेंदबाज और दो स्पिनर उतारे हैं। तेज गेंदबाजो में आकाश दीप, जसप्रीत बुमराह और मो सिराज हैं जबकि स्पिनर के तौर पर आर अश्विन और रविन्द्र जडेजा शामिल हैं।

100वें टेस्ट में शतक लगाने वाले 12वें खिलाड़ी बने अश्विन 102

भारतीय टीम के ऑलराऊंडर रविचंद्रन अश्विन ने आज यहां बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट के पहले ही दिन नाबाद शतक 102 रन बनाने के साथ ही एक अहम उपलब्धि अपने नाम कर ली है। अश्चिन 100वें टेस्ट में शतक लगाने वाले विश्व के 12वें खिलाड़ी बन गए हैं। अश्विन जब मैदान में उतरे तब भारतीय टीम कठिन हालातों में थी पर उन्होंने अपने शतक से टीम को उबार दिया। अश्विन ने जडेजा के साथ करीब 200 रन की साझेदारी कर नया रिकार्ड भी बनाया। अश्विन का यह टेस्ट क्रिकेट में छठा शतक रहा। 100वें टेस्ट में शतक लगाने वाले अन्य क्रिकेटर हैं। 104 रन : एमसी काउड्रे (इंग्लैंड बनाम ऑस्ट्रेलिया) 1968। 145 रन : जावेद मियांदाद (पाकिस्तान बनाम भारत) 1989। 149 रन : जी ग्रीनीज (विंडीज बनाम इंग्लैंड) 1990। 105 रन : एलेक स्टीवर्ट (इंग्लैंड बनाम विंडीज) 2000। 184 रन : इंजमाम उल हक (पाकिस्तान बनाम इंडिया) 2005। 120 रन : रिकी पोंटिंग (ऑस्टेलिया बनाम साऊथ अफ्रीका) 2006। 143 रन : रिकी पोंटिंग (ऑस्टेलिया बनाम साऊथ अफ्रीका) 2006 131 रन : ग्रीम स्मिथ साऊथ अफ्रीका.

बांग्लादेश के तेज गेंदबाज महमूद के सामने फ्लाप हुए शीर्ष भारतीय बल्लेबाज

बांग्लादेश के तेज गेंदबाज हसन महमूद ने शुरुआत भारतीय बल्लेबाजी को ढ़हा दिया। हसन ने सबसे पहले कप्तान रोहित शर्मा को को 6 रन पर पेवेलिन भेजा। इसके बाद हसन ने शुभमन को खाता खोले बिना ही पवेलियन भेज दिया। वहीं तीसरे नंबर पर उतरे अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली भी 6 रन बनाकर विकेटकीपर लिटन दास के हाथों कैच हो गये। इस प्रकार हसन ने पहले 10 ओवरों में ही तीन विकेट ले लिए। मार्च 2020 में बांग्लादेश के लिए अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करने वाले हसन अब एक तेज गेंदबाज के रूप में स्थापित हो गये हैं। हसन की गेंदबाजी की बदौलत बांग्लादेश को अच्छी शुरुआत मिली है और भारतीय बल्लेबाजों के लिए चुनौती बढ़ गई है। हसन ने 2017 में अंडर-19 क्रिकेट विश्व कप में बांग्लादेश की टीम में शामिल होने के बाद से ही जोरदार प्रदर्शन किया है। साल 2019 में सीसी इमर्जिंग टीम एशिया कप में भी उन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया था। पाकिस्तानी दौरे में भी इस गेंदबाज ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 4 पारियों में 8 विकेट लिए थे।

शुभमन साल में तीन बार शून्य पर आउट होने वाले छठे भारतीय बल्लेबाज बने

भारतीय क्रिकेट टीम के युवा बल्लेबाज शुभमन गिल बांग्लादेश के खिलाफ पहले क्रिकेट टेस्ट मैच में खाता खोले बिना ही पेवेलियन लौट गये। इसी के साथ ही शुभमन के नाम एक अनचाहा रिकार्ड दर्ज हो गया है। वह घरेलू मैदान पर एक साल में तीन या उससे अधिक शून्य पर आउट होने वाले छठे भारतीय बल्लेबाज भी बन गए हैं। शुभमन 2024 के घरेलू टेस्ट सीजन की शुरुआत में भी शून्य पर आउट हुए थे। वहीं साल 2024 में पाकिस्तान के अब्दुल्ला शफीक टेस्ट में तीन या उससे अधिक बार शून्य पर आउट होने वाले शीर्ष 7 बल्लेबाजों में एकमात्र अन्य बल्लेबाज हैं। शुभमन टेस्ट क्रिकेट में घरेलू मैदान पर एक कैलेंडर वर्ष में तीन या उससे अधिक शून्य पर आउट होने वाले छठे भारतीय बल्लेबाज हैं। उनसे पहले केवल चेतेश्वर पुजारा और दिलीप वेंगसरकर ही घरेलू टेस्ट में नंबर 3 पर बल्लेबाजी करते हुए तीन से अधिक बार शून्य पर आउट हुए हैं। भारत के लिए घरेलू टेस्ट में नंबर 3 पर सबसे अधिक बार शून्य पर आउट होने वाले प्लेयर्स

ऋषभ 4000 रन बनाने वाले दूसरे भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज बने

भारतीय क्रिकेट टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत ने बांग्लादेश के खिलाफ पहले क्रिकेट टेस्ट मैच के पहले दिन 39 रनों की अपनी पारी के दौरान अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपने 4000 रन पूरे किये। ऋषभ ने जैसे ही 19 रन बनाया उनके 4000 रन पूरे हो गये। इसी के साथ ही ऋषभ के नाम एक अहम रिकार्ड दर्ज हो गया है। वह महेन्द्र सिंह धोनी के बाद भारत के दूसरे विकेटकीपर बल्लेबाज हैं जिसने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 4000 से ज्यादा रन बनाये हैं। धोनी के नाम बतौर विकेटकीपर-बल्लेबाज के तौर पर 17092 रन हैं। वहीं अन्य सभी विकेटकीपर बल्लेबाजों के नाम 4000 से कम रन हैं। ऋषभ ने इस मैच के साथ ही करीब दो साल बाद टेस्ट क्रिकेट में वापसी की है। वह साल 2022 दिसंबर में कार हादसे के बाद से ही खेल से दूर थे। उन्होंने इसी साल आईपीएल से वापसी करने के बाद टी20 विश्वप भी खेला था पर ये उनका पहला टेस्ट था। इससे पहले इस क्रिकेटर ने दिलीप ट्रॉफी भी खेली थी।

25 से मप्र राज्य रैंकिंग स्नूकर चैंपियनशिप, प्रविष्टि हेतु अंतिम दिन आज

इन्दौर (ईएमएस) स्थानीय नेहरू स्टेडियम स्थित बिलियड्स एकेडमी में आगामी 25 से 29 सितंबर तक नौवीं सिक्स रेड एमपी स्टेट रैंकिंग स्नूकर चैंपियनशिप का आयोजन किया जा रहा है जिसमें देशभर के खिलाड़ी हिस्सा लेंगे स्पर्धा की तैयारियां अंतिम दौर में हैं। मध्य प्रदेश बिलियड्स और स्नूकर एसोसिएशन के चेयरमेन भोलू मेहता के अनुसार इस स्पर्धा में प्रदेशभर से खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। प्रदेशभर के खिलाड़ियों के बीच खेलने से स्थानीय खिलाड़ियों को भी अपने खेल को बेहतर करने और वरिष्ठ खिलाड़ियों से सीखने का अवसर मिलेगा। स्पर्धा में प्रवेश के लिए अंतिम तिथि 20 सितंबर निर्धारित की है। इच्छुक खिलाड़ी अपनी प्रविष्टियां सुजीत गेहलोत, मितेंद्र गौड़ व संजय गौड़ को दे सकते हैं।

ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट बोर्ड ने श्रीलंकाई क्रिकेटर पर 20 साल का प्रतिबंध लगाया

मेलबर्न (ईएमएस)। ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट बोर्ड ने ने श्रीलंकाई पूर्व खिलाड़ी और विक्टोरिया महिला टीम के कोच रहे दुलीप समरवीरा पर 20 साल का प्रतिबंध लगा दिया है। अब समरवीरा ऑस्ट्रेलिया में कोचिंग नहीं कर पायेंगे। समरवीर पर विक्टोरिया की महिला टीम ने दुर्व्यवहार का आरोप लगाया था। ऑस्ट्रेलियाई बोर्ड ने इसी को आचार मानने हुए उन्हें आचार संहिता के उल्लंघन का दोषी माना है। वह साल 2008 में पहली बार विक्टोरिया के बल्लेबाजी कोच बने थे। समरवीरा पर क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया के 'इंटीग्रिटी विभाग की जांच के बाद प्रतिबंध लगाया गया। अब समरवीरा आने वाले 20 साल तक ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट में किसी भी प्रकार से काम नहीं कर पायेंगे। क्रिकेट विक्टोरिया के सीईओ निक कमिंस ने भी उनपर लगाये गये प्रतिबंध को सही माना है। कमिंस ने कहा, हमारा मानना है कि कोच के तौर पर उनका आचरण पूरी तरह से निंदनीय है और हम इस मामले में क्रिकेट विक्टोरिया के साथ हैं। समरवीरा इससे पहले महिला बिग बैश लीग में मेलबर्न स्टार्स टीम के सहायक कोच भी रहे थे। इस किकेटर ने श्रीलंका की ओर से अपने करियर में सात टेस्ट एवं पांच एकदिवसी खेले हैं। एक बार बाहर होने के बाद उन्हें वापसी का अवसर नहीं मिला

आईपीएल 2025 नीलामी नवंबर अंत या दिसंबर की शुरुआत में होगी : बीसीसीआई

मुम्बई (ईएमएस)। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने कहा है कि आईपीएल 2025 के लिए मेगा नीलामी नवंबर के अंत या दिसंबर की शुरुआत में होगी। बीसीसीआई ने पिछले एक दशक में दो बड़ी नीलामियों का आयोजन किया है, जिनके बीच चार साल का अंतराल था। पहली मेगा नीलामी 2014 में आयोजित की गई थी जबकि दूसरी 2018 में, उस समय राजस्थान रॉयल्स और चेन्नई सुपर किंग्स ने अपने दो साल के निलंबन के बाद वापसी की थी। एक रिपोर्ट के अनुसार , आईपीएल 2025 की मेगा नीलामी की तिथि की पुष्टि हो गई है। हालांकि, नीलामी के नियम और विनियम अभी तक घोषित नहीं किए गए हैं। पूर्व में कोविड-19 महामारी के चलते 2021 की मेगा नीलामी को एक साल के लिए स्थगित कर दिया गया था। तब टीमों ने इस दौरान अपने खिलाड़ियों के अनुबंध में एक साल के लिए बढ़ा दिया था। 2022 में हुई पिछली मेगा नीलामी की तरह, आगामी नीलामी भी दो दिन की रहेगी। साल 2022 में टीमों को अधिकतम चार खिलाड़ियों को रिटेन करने की अनुमति दी गई थी। हालांकि अभी तीन साल के चक्र की समाप्ति के साथ ही विभिन्न फ्रेंचाइजी के बीच रिटेन (बरकरार रखे) गए खिलाड़ियों की संख्या को लेकर भी संशय है। कुछ टीमें अधिकतम आठ खिलाड़ियों को रिटेन करने की मांग कर रही हैं, जबकि अन्य चार या पांच खिलाड़ियों की है, को बनाए रखने के पक्ष में हैं।

सीपीएल में अनजान से खिलाड़ी ने लगाया 124 मीटर लंबा छक्का

जमैका (ईएमएस)। कैरेबियन प्रीमियर लीग (सीपीएल) में एक क्रिकेटर ने ऐसा छक्का लगाया कि गेंद 124 मीटर ऊपर चली गयी। ये छक्का एक अनजान से खिलाड़ी ने लगाया। ये छक्का 21 साल के शकीर पेरिस ने मिडविकेट के ऊपर से लगाया और गेंद स्टेडियम की छत के ऊपर से हवा में निकल गयी। ये इस सत्र का अब तक का सबसे लंबा छक्का है। आईपीएल में सबसे लंबे छक्के का रिकॉर्ड भी 124 मीटर का ही है। ये आईपीएल 2008 में चेन्नई सुपर किंग्स के की ओर से प्रज्ञान ओझा ने लगाया था। सीपीएल का सबसे लंबा छक्का ट्रिनबागो नाइटराइडर्स और गुयाना अमेजॉन वॉरियर्स के बीच मुकाबले में लगा। इसमें ट्रिनबागो नाइटराइडर्स के कप्तान कीरोन पोलार्ड ने टॉस जीतने के बाद गुयाना अमेजॉन वॉरियर्स को पहले बल्लेबाजी के लिए बुलाया। इस मैच में वॉरियर्स की शुरुआत अच्छी नहीं रही। उसने 12 ओवर में 100 रनों के अंदर 7 विकेट खो दिये। इसके बाद रोमारियो शेफर्ड और ड्वेन प्रिटोरियस ने पारी संभाली। वहीं ट्रिनबागो नाइटराइडर्स की ओर से सलामी बल्लेबाज सुनील नरेन और शकीर पेरिस ने पारी शुरु की। पहले ओवर नरेन पेवेलियन लौट गये। उसके बाद युवा पेरिस ने तेजी से रन बनाने शुरु कर दिये। पेरिस ने गुडाकेश मोती की गेंद पर घुटने के बल बैठकर छक्का लगा दिया। ये गेंद स्टेडियम की छतों के ऊपर चली गई। बाद में पता चला कि इसकी दूरी 124 मीटर थी। पेरिस ने 29 गेंद में 29 रन बनाये।

टी20 महिला विश्व कप क्रिकेट के लिए बांग्लादेश टीम घोषित, निगार करेंगी कप्तानी

ढाका (ईएमएस)। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) ने अगले माह संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में खेले जाने वाले आईसीसी महिला टी20 विश्व कप 2024 के लिए अपनी टीम घोषित कर दी है। इस टूर्नामेंट में बांग्लादेश की कप्तानी निगार सुल्ताना जोटी करेंगी। 15 सदस्यीय टीम में नाहिदा अख्तर, शोरना अख्तर, राबेया, सुल्ताना खातून और फहीमा खातून जैसी स्पिनर है। वहीं तेज गेंदबाज के तौर पर युवा मारुफा अख्तर, जहांआरा आलम, सुश्री रितु मोनी और सोभना मोस्टरी शामिल हैं। आईसीसी की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि बांग्लादेश इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, वेस्टइंडीज और स्कॉटलैंड के साथ ग्रुप बी में रखी गयी है। बांग्लादेश का पहला मैच 3 अक्टूबर को शारजाह में स्कॉटलैंड से होगा। टीम इस प्रकार है : निगार सुल्ताना जोटी (कप्तान), नाहिदा अख्तर, मुर्शिदा खातून, शोर्ना अख्तर, मारुफा अख्तर, राबेया, रितु मोनी, शोभना मोस्टोरी, दिलारा अख्तर (विकेटकीपर), सुल्ताना खातून, जहांआरा आलम, फाहिमा खातून, ताज नेहर, दिशा बिस्वास, शाति रानी।

श्रीलंकाई बल्लेबाज कामिंदु मेंडिस का शानदार प्रदर्शन जारी , न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट में शतक लगाया

गाले (ईएमएस)। श्रीलंका क्रिकेट टीम के युवा बल्लेबाज कामिंदु मेंडिस का शानदार प्रदर्शन जारी है। कामिंदु ने डेब्यू के बाद ही अपने सातवे टेस्ट में चार शतक लगा दिये हैं। ने एक और शतक ठोक दिया। कमिंदु ने गाले में न्यूजीलैंड के खिलाफ हो रहे पहले टेस्ट के पहले ही दिन शतक लगा दिया। ये बल्लेबाज जब उतरा था तब टीम ने 88 रन पर तीन विकेट खो दिये थे। इसके बाद कमिंदु ने एक छोर संभाले रखा। अनुभवी एंजेलो मैथ्यूज के साथ उन्होंने 5वें विकेट के लिए 72 रन बनाये। इसके बाद छठे विकेट के लिए कुसल मेंडिस के साथ मिलकर 103 रन बनाये। कमिंदु ने साल 2022 में श्रीलंका की ओर से पहला मैच खेला था। पहले मैच में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 61 रनों की पारी खेलने के बाद भी उन्हें दो साल तक टीम में जगह नहीं मिली थी। वहीं इसी साल बांग्लादेश के खिलाफ वापसी करते हुए इस बल्लेबाज ने दोनों पारियों में शतक लगाया था। इसके बाद इंग्लैंड दौरे पर तीन टेस्ट में एक शतक के अलावा दो अर्धशतक लगाये। अब घरेलू मैदान पर न्यूजीलैंड के खिलाफ शतक लगा दिया है।

ज़ी एंटरटेनमेंट के खिलाफ मध्यस्थता अदालत पहुंची स्टार इंडिया

आईसीसी मैचों के प्रसारण अधिकारों में समझौते का पालन नहीं करने का आरोप लगाया

लंदन (ईएमएस)। आईसीसी क्रिकेट मैचों के टेलीविजन प्रसारण अधिकारों के उप-लाइसेंस संबंधी समझौते का पालन नहीं करने का आरोप लगाते हुए स्टार इंडिया ने ज़ी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज लिमिटेड से 94 करोड़ डॉलर का हर्जाना मांगा है। इसी को लेकर स्टार इंडिया ने लंदन स्थित मध्यस्थता अदालत में अपना दावा ठोका है। यह मामला आईसीसी क्रिकेट मैचों के टेलीविजन प्रसारण अधिकारों के उप-लाइसेंस संबंधी समझौते का पालन न होने से जुड़ा है। वहीं ज़ी एंटरटेनमेंट ने स्टार के लगाये इन आरोपों को सिरे से खारिज कर दिया है।

वहीं स्टार इंडिया ने लंदन अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता अदालत के समक्ष कहा कि उसने ज़ी एंटरटेनमेंट के साथ हुए करार को समाप्त कर दिया है और उसे इसके लिए 94 करोड़ डॉलर का हर्जाना दिया जाना चाहिये। यह राशि 31 अगस्त, 2024 के अनुसार तय की गई है, और स्टार ने मध्यस्थता अधिकरण के फैसले के आधार पर हर्जाना तय किए जाने की मांग की है। वहीं ज़ी एंटरटेनमेंट ने अपने बयान में स्टार इंडिया के सभी दावों को गलत बताते हुए कहा कि वह इनका विरोध करती है। इसी साल मार्च में स्टार इंडिया ने ज़ी के खिलाफ मध्यस्थता कार्यवाही शुरू की थी, जिसमें ज़ी पर आईसीसी मैचों के प्रसारण अधिकारों के उप-लाइसेंस समझौते का पालन न करने का आरोप लगाया गया था। दोनों कंपनियों के बीच अगस्त 2022 में हुए समझौते के अनुसार, 2024 से 2027 तक आईसीसी अंतरराष्ट्रीय मैचों के टीवी प्रसारण अधिकारों का उप-लाइसेंस ज़ी को दिया जाना था पर ज़ी एंटरटेनमेंट 20.35 करोड़ डॉलर की पहली किस्त का भुगतान नहीं कर सकी थी। उसी को देखते हुए स्टार ने करार तोड़कर हर्जाना मांगा है।

चीन ओपन बैडमिंटन में भारत की मालविका ने जीत से की शुरुआत, ओलंपिक पदक विजेता इंडोनेशिया की तुनजुंग को आसानी से हराया

चांग्झू (ईएमएस)। भारत की युवा खिलाड़ी मालविका बंसोड़ ने चीन ओपन सुपर 100 महिला बैडमिंटन टूर्नामेंट में जीत के साथ शुरुआत की है। मालविका ने महिला एकल के पहले ही दौर में इंडोनेशिया की ग्रेगोरिया मारिस्का तुनजुंग को सीधे गेम में हरा दिया। मालविका ने 46 मिनट के भीतर दुनिया की सातवें नंबर की खिलाड़ी और ओलंपिक कांस्य पदक विजेता तुनजुंग को 26-24, 21-19 से हराया। भारतीय खिलाड़ी ने पहले गेम में तीन अंक बचाए और एक मुश्किल मुकाबला जीतने में सफल रहीं। यह जीत उनके प्रदर्शन के बेहतर होने का सबूत है। अब अगले दौर में, मालविका का सामना राष्ट्रमंडल खेलों की दो बार की पदक विजेता क्रिस्टी गिल्मोर से होगा। वहीं महिला एकल में भारत की ही आकर्षी कश्यप को चीनी ताइपे की चियू पिन चियान के खिलाफ 15-21, 19-21 से हार झेलनी पड़ी। इसके अलावा सामिया इमाद फारूकी को यहां क्रिस्टी गिल्मोर के खिलाफ एकतरफा मुकाबले में 9-21, 7-21 से हार का सामना करना पड़ा। दूसरी ओर महिला युगल में त्रिशा जॉली और गायत्री गोपीचंद की जोड़ी को सीह पेई शेन और हुंग एन जू की चीनी ताइपे की जोड़ी के खिलाफ तीन गेम तक चले मुकाबले में 21-16, 15-21, 17-21 से हार मिली। मिश्रित युगल में बी सुमित रेड्डी और एन सिक्की रेड्डी की भारतीय जोड़ी भी पहले दौर में ही मलेशिया की टेन कियान मेंग और लाई पेई जिंग की जोड़ी से 10-21, 16-21 से हार गई।

अफगानिस्तान ने पहली बार दक्षिण अफ्रीका को एकदिवसीय मैच में हराया

शारजाह (ईएमएस)। अफगानिस्तान क्रिकेट टीम ने पहली बार एकदिवसीय क्रिकेट मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका को हराकर एक अहम उपलब्धि हासिल की है। अफगानिस्तान ने दक्षिण अफ्रीकी टीम को यहां तीन मैचों की सीरीज के पहले मुकाबले में 106 रन पर आउट कर दिया। इसे बाद जीत के लिए मिले लक्ष्य को 26 ओवर में ही 4 विकेट पर 107 रन बनाकर हासिल कर दिया। इस प्रकार उसे मैच में 6 विकेट से जीत मिली है। इस प्रकार अफगानिस्तान ने सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल कर ली है। अफगान टीम की जीत में फजलहक फारूकी और मोहम्मद गजनफर की अहम भूमिका रही। फारूकी ने 35 रन देकर 4 जबकि गजनफर ने 20 रन देकर 3 विकेट लिए। इसके अलावा अनुभवी राशिद खान ने 30 रन देकर दो विकेट लिए। इस मैच में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाज टिक नहीं पाये और बड़ी मुश्किल से 100 रन बना पाये। केवल वियान मुल्डर ही 52 रन बना पाये। वहीं अन्य बल्लेबाज एक के बाद एक पेवेलियन लौटते गये। यह अफगानिस्तान के खिलाफ दक्षिण अफ्रीका का सबसे कम स्कोर भी है। दोनों टीमों के बीच अब तक कुल 3 एकदिवसीय मैच खेले गए हैं। इसमें पहले दो मैच दक्षिण अफ्रीकी टीम ने जीते थे जबकि अब अफगान टीम को पहली जीत मिली है। इस मैच में लक्ष्य का पीछा करने हुए अफगानिस्तान की शुरुआत खराब रही। उसने 38 रन के भीतर 3 विकेट गंवा दिए। इसके बाद अजमतुल्लाह ओमरजई 25 नाबाद ने कप्तान हशमतुल्लाह शाहिदी के साथ मिलकर टीम को संभाला। हशमतुल्लाह शाहिदी 16 के आउट होने के बाद गुलबदीन नईब मैदान पर उतरे और उन्होंने नाबाद 34 रन बनाकर टीम को लक्ष्य तक पहुंचाया।

यूएस मास्टर्स टी10 लीग का दूसरा सत्र नवंबर में खेला जाएगा

टेक्सास (ईएमएस)। यूएस मास्टर्स टी10 लीग क्रिकेट इस साल के अंत में 8 नवंबर से 17 नवंबर 2024 तक टेक्सास में खेला जाएगा। इसमें बार फिर दिग्गज क्रिकेटर खेलते दिखेंगे। इस दूसरे सत्र में छह टीमें भाग लेंगी। इसकी एक फ्रैंचाइजी शिकागो प्लेयर्स टीम ने एक नया लोगो पेश किया है। इस नए लोगो में एक गतिशील ढाल है, जो ताकत और लचीलेपन का प्रतीक है जिसमें तीन सितारे टीम की उत्कृष्टता की खोज का प्रतिनिधित्व करते हैं। फ्रैंचाइजी का नाम द शिकागो प्लेयर्स, ढाल पर प्रमुखता से प्रदर्शित है, जो टूर्नामेंट में अपनी छाप छोड़ने के लिए उनकी तत्परता को दिखाता है। शिकागो प्लेयर्स के प्रमोटर विशाल पटेल ने कहा कि टीम अमेरिका में शीर्ष स्तरीय क्रिकेट को लाने और एक बड़ा प्रभाव डालने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा, हम यूएस मास्टर्स टी10 में इस रोमांचक यात्रा के लिए शिकागो प्लेयर्स के नए लोगो का अनावरण कर बेहद उत्सारहित हैं। हमारा लोगो जीत की भावना और उत्कृष्टता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक है। एक टीम के रूप में हम यूएसए में शीर्ष स्तरीय क्रिकेट लाने और अपने पहले सीजन में एक महत्वपूर्ण प्रभाव डालने के लिए समर्पित हैं।

बाबर ने शाहनवाज दहानी के ओवर में लगाये पांच चौके

लाहौर (ईएमएस)। पिछले काफी समय से खराब बल्लेबाज को लेकर आलोचना झेल रहे पाकिस्तान क्रिकेट टीम के अनुभवी बल्लेबाज बाबर आजम ने घरेलू टूर्नामेंट वन डे कप में आक्रामक बल्लेबाजी की है। आजम ने मोहम्मद रिजवान की कप्तानी वाली यूएमटी मार्खोर्स की ओर से खेलते हुए मोहम्मद हारिस की अगुआई वाली एलाइड बैंक स्टैलियंस के खिलाफ अपनी टीम को जीत दिलाने का पूरा प्रयास किया पर वह सफल नहीं हुए। बाबर ने इस मुकाबले में विरोधी टीम के गेंदबाज के खिलाफ लगातार 5 चौके लगाये। इस मैच में रिजवान ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी शुरु की। बाबर ने इस मुकाबले में 45 रन की तेज पारी खेली। उसने शाहनवाज दहानी के ओवर में लगातार 5 चौके मारे। इस पारी से ऐसा लग रहा है कि उन्होंने वापसी कर ली है। गौरतलब है कि बाबर ने टेस्ट क्रिकेट में दिसंबर 2022 में अंतिम बार बड़ी पारी खेली थी। इसके बाद से ही वह एक बार भी बड़ी पारी नहीं खेल पाये हैं।

चीन में विंगशूट फ्लाइंग विश्व चैम्पयनशिप में ऑस्ट्रेलिया के ताही पॉल मुनरो टेक ऑफ करते हुए।

टी-20 प्रारुप में वापसी का इरादा नहीं : रोहित

कुछ लोगों ने संन्यास को भी मजाक बना दिया

चेन्नई (ईएमएस)। भारतीय टेस्ट और एकदिवसीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने कहा है कि वह टी-20 प्रारुप में वापसी नहीं करेंगे। रोहित ने टी-20 विश्वकप के बाद इस प्रारुप से संन्यास ले लिया था पर हाल में कहा जा रहा था कि वह अपना फैसला बदल सकते हैं। इसी को लेकर रोहित ने कहा कि उनका ऐसा कोई इरादा नहीं है। साथ ही कहा कि संन्यास के बाद वापसी करने वाले खिलाड़ी पर तंज कसते हुए रोहित ने कहा कि कुछ लोगों ने इसे मजाक बना दिया है। पर मैं ऐसा नहीं करुंगा। मैंने बिल्कुल सही समय पर टी-20 को छोड़ा है। रोहित ने कप्तान के तौर पर भारतीय टीम के टी20 विश्व कप 2024 जीतने के बाद संन्यास लिया था। रोहित ने कहा कि कुछ लोग संन्यास की घोषणा करते हैं लेकिन फिर खेलने के लिए लौट आते हैं, भारत में ऐसा नहीं हुआ है पर मैं अन्य देशों के खिलाड़ियों को देख रहा हूं, वे संन्यास की घोषणा करते हैं पर फिर बदल लेते हैं। इसलिए आप वास्तव में कभी नहीं जानते कि कोई वास्तव में सेवानिवृत्त हुआ है या नहीं। मेरा निर्णय अंतिम है और मैं बहुत स्पष्ट हूं। गौरतलब है कि पाकिस्तान के तेज गेंदबाज मोहम्मद आमिर ने भी संन्यास से वापसी करते हुए विश्व कप में पाकिस्तान की ओर से खेला था। इसी प्रकार बेन स्टोक्स ने भी एकदिवसीय से संन्यास लेने के बाद 2023 एकदिवसीय विश्व कप में खेला था।

रोहित को ड्रेसिंग रूम में काफी सम्मान मिलता है : गंभीर

भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा की प्रशंसा करते हुए कहा है कि रोहित को ड्रेसिंग रूम में काफी सम्मान मिलता है। उन्होंने कहा कि कप्तानी का यह गुण किसी भी सफल नेता के लिए सबसे जरुरी होता है। गंभीर के अनुसार एक टीम की सफलता में कप्तान की भूमिका अहम होती है। उन्होंने कहा कि कोच की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है पर मैदान पर अंतिम निर्णय कप्तान ही लेता है। गंभीर ने कहा, टीम अंततः कप्तान की होती है क्योंकि वह मैदान पर आगे आकर नेतृत्व करता है। रोहित का नेतृत्व और ड्रेसिंग रूम में सम्मान अहम है। वह एक महान व्यक्ति हैं और उन्हें ड्रेसिंग रूम में बहुत सम्मान मिला है। यही एक नेता का असली गुण और उपलब्धि है। गंभीर ने यह भी माना कि कभी-कभी रणनीति या निर्णय लेने में मतभेद हो पर उनका मानना है कि अंतिम फैसला कप्तान का होना चाहिये। उन्होंने कहा, कप्तान के लिए सम्मान और समर्थन पर समझौता नहीं किया जा सकता है। अंतिम निर्णय कप्तान पर आधारित रहता है। उन्होंने रोहित शर्मा के अलावा विराट कोहली, रविचंद्रन अश्विन और जसप्रीत बुमराह की भी जमकर प्रशंसा की है। उन्होंने कहा, रोहित को शुरुआती दौर में मुश्किलों का सामना करना पड़ा पर समर्थन मिलने के बाद वह एक प्रमुख खिलाड़ी बनकर उभरे हैं। वहीं विराट ने अपनी फिटनेस के साथ-साथ भारतीय क्रिकेट को भी नई दिशा दी है। अश्विन दुनिया के सर्वश्रेष्ठ स्पिनर बने हैं, जबकि बुमराह ने विश्व क्रिकेट में अपनी अलग ही पहचान बनाई है। उनके अनुभव युवा खिलाड़ियों के लिए काफी अहम साबित होंगे। गंभीर ने यह भी जोर दिया कि टीम की जरूरतों को पूरा करने के लिए सही संयोजन चुनना अहम है।

10 सेकेंड का ऐड बनाने में लगते हैं महीनों:अक्षय-अमिताभ सरकारी विज्ञापन के पैसे नहीं लेते; पान मसाला के ऐडवर्टाइजमेंट पर 50 करोड़ का खर्च

मुंबईः टीवी पर आप पान मसाला का ऐड देखते हैं, इसे बनाने में 50 करोड़ से भी ज्यादा का खर्च आता है। इतने बजट में एक फिल्म भी बन सकती है। एक ऐड फिल्म अमूमन 10 से 30 सेकेंड के बीच होती है, लेकिन इसे बनाने में महीनों लग जाते हैं। वहीं इस 10 सेकेंड के ऐड को एक बार चैनल पर टेलिकास्ट करने का चार्ज 50 रुपए से 5 लाख रुपए तक होता है। रील टु रियल के नए एपिसोड में ऐड फिल्मों की मेकिंग प्रोसेस पर बात करेंगे। इसके लिए हमने फेमस ऐड फिल्म मेकर प्रभाकर शुक्ला से बात की।

एक ऐड फिल्म बनाने में 25 लाख से 50 करोड़ का खर्च

प्रभाकर ने कहा कि आमतौर पर एक अच्छी ऐड फिल्म बनाने में 25-30 लाख रुपए का खर्च आता है। जिन ऐड फिल्मों में बड़े स्टार होते हैं और वीएफएक्स -स्पेशल इफेक्ट्स का इस्तेमाल ज्यादा किया जाता है, उनका बजट करोड़ों में होता है। जैसे कि पान मसाले के ऐड में बड़ी स्टार कास्ट होती है। इसका बजट 50 करोड़ या इससे ज्यादा भी हो सकता है, क्योंकि इसमें स्टार कास्ट की फीस भी शामिल होती है। प्रभाकर ने कहा कि शाहरुख खान, अजय देवगन और अक्षय कुमार फीचर्ड पान मसाले के ऐड को बनाने में 50 करोड़ से ज्यादा का खर्च आया था। इतने में एक अच्छी-खासी फिल्म बन जाएगी।

सरकार की तरफ से पान मसाला या शराब के ऐड की इजाजत नहीं

क्या सरकार पान मसाला या शराब पर ऐड फिल्म बनाने की परमिशन देती है? प्रभाकर ने कहा, 'नहीं, सरकार की तरफ से परमिशन नहीं होती। ऐसे में ये कंपनियां पान मसाले को इलायची और शराब को सोडा वॉटर बताकर प्रचार कराती हैं। इसे सरोगेट ऐडवर्टाइजमेंट कहते हैं।'

इमेज का हवाला देकर ऐसे

विज्ञापन करने से बचते हैं स्टार्स

पहले एक्टर्स आसानी से शराब और पान मसाले का प्रचार करते थे। बाद में काफी आलोचना झेलनी पड़ी, जिसकी वजह से अब ज्यादातर स्टार्स इसे अवॉयड ही करते हैं। अच्छी फीस मिलने के बाद भी एक्टर्स अपनी इमेज का हवाला देकर इसमें काम करने से मना कर देते हैं। अक्षय कुमार को तो बाकायदा स्टेटमेंट जारी कर माफी मांगनी पड़ी थी। अक्षय ने कहा था कि वे आगे से इन ब्रांड्स के ऐड करने से बचेंगे।

तीनों खान की फीस सबसे ज्यादा, अक्षय-अमिताभ फ्री में करते हैं सरकारी विज्ञापन

प्रभाकर ने बताया कि इस वक्त फिल्म इंडस्ट्री से तीनों खान यानी शाहरुख, सलमान और आमिर ऐड फिल्म करने के सबसे ज्यादा पैसे चार्ज करते हैं। कभी-कभी ये जिस ब्रांड का ऐड करते हैं, उसमें इक्विटी या शेयर भी ले लेते हैं। दूसरी तरफ अमिताभ बच्चन और अक्षय कुमार ऐसे दो सेलिब्रिटीज हैं, जो सरकारी विज्ञापन के लिए पैसे नहीं लेते। वे फ्री में इनके लिए ऐड फिल्म करते हैं। अमिताभ बच्चन का पोलियो और अक्षय कुमार का धूम्रपान निषेध वाला ऐड इसके उदाहरण हैं।

10 सेकेंड के ऐड को एक बार टेलिकास्ट करने का चार्ज 5 लाख रुपए तक

प्रभाकर ने बताया कि ऐड फिल्म को टेलिकास्ट करने के लिए चैनल वाले पैसे लेते हैं। हर चैनल अलग-अलग फीस चार्ज करते हैं। कुछ चैनल 10 सेकेंड के ऐड को एक बार टेलिकास्ट करने के लिए 100 रुपए तो कुछ 50 रुपए फीस चार्ज करते हैं। कुछ चैनल 10 सेकेंड के ऐड को एक बार दिखाने के लिए 5 हजार रुपए तक भी चार्ज करते हैं। इस तरह चैनल वाले दिन भर में कई बार ऐड दिखाते हैं। जितनी बार दिखाएंगे, उतना ज्यादा पैसा उन्हें ब्रांड की तरफ से मिलता है। जिन चैनल्स पर क्रिकेट मैच की लाइव स्ट्रीमिंग होती है, वहां 10 सेकेंड का ऐड दिखाने के लिए 3-5 लाख रुपए चार्ज किए जाते हैं। जिन शोज की TRP बहुत ज्यादा होती है, उनकी स्ट्रीमिंग के दौरान 10 सेकेंड की ऐड फिल्म को दिखाने का चार्ज 3-4 लाख रुपए तक होता है। कुल मिलाकर जिस प्रोग्राम की ज्यादा व्यूअरशिप होती है, ऐड के टेलिकास्ट का खर्च उतना ही ज्यादा होता है। ब्रांडिंग और प्रोडक्ट के सेल के लिए ऐड फिल्म्स बनाई जाती हैं प्रभाकर ने बताया कि इन 3 फैक्टर्स की वजह से ऐड फिल्म की मेकिंग की जाती है।

लॉफिंग ज़ोन

संता का बेटा पप्पू की अनाज से भरी गाड़ी उलट गई। पास के खेत में काम कर रहे किसान ने उससे कहा, पप्पू बेटा परेशान मत हो। आ पहले हमारे साथ खाना खा फिर मैं तेरी गाड़ी सीधी कर दूंगा।

आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। पर मेरे पापा गुस्सा होंगे।

अरे पहले तू आ तो, किसान ने जोर देकर कहा। ठीक है, आप कहते हैं तो आता हूं। पर मुझे डर है कि पापा नाराज होंगे।

खूब जम कर खाना खाने के बाद पप्पू ने किसान का धन्यवाद अदा किया, अब मैं पहले से काफी अच्छा महसूस कर रहा हूं। पर पापा परेशान हो रहे होंगे।

किसान ने मुस्कराते हुए कहा, पर यह तो बताता जा कि तेरे पापा अभी होंगे कहां?

गाड़ी के नीचे, पप्पू ने जवाब दिया।

☺ ☺ ☺

नानू- बच्चे घर का उजाला होता हैं।

कानू- सच है। हमारे बच्चों को भी घर की बत्तियाँ 'ऑफ' करते बुखार आता है।

☺ ☺ ☺

फेडरल रिजर्व ने ब्याज-दर में 50 बेसिस-पॉइंट की कटौती की: 4.75% से 5% के बीच रहेगी दर

वाशिंगटन : अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने ब्याज दरों में 50 बेसिस पॉइंट की कटौती की है। अब ब्याज दर 4.75% से 5% के बीच रहेंगी। इससे पहले मार्च 2020 में फेड ने इंटरेस्ट रेट्स में कटौती की थी। इन्फ्लेशन पर काबू पाने के लिए अमेरिका के सेंट्रल बैंक ने मार्च 2022 से जुलाई 2023 के बीच 11 बार ब्याज दरों में इजाफा किया था। पिछले साल फेडरल रिजर्व ने अपने पॉलिसी डिसीजन में लगातार तीसरी बार ब्याज दरों को अपरिवर्तित रखा था। 26 जुलाई 2023 को फेड ने बाजार की उम्मीदों के मुताबिक पॉलिसी रेट को 5.25%-5.5% की रेंज में जस-का-तस रखा था। हालांकि, फेड ने ये भी संकेत दे दिया था कि 2024 में दरों में कटौतियां देखने को मिलेंगी और ये कम होकर 4.6% तक आ सकती हैं। फेड ने महंगाई से निपटने के लिए मार्च 2022 से दरों को बढ़ाना शुरू किया था। पिछले साल जुलाई तक बढ़कर ये दरें 23 साल के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई थीं।

ब्याज दरों में कटौती का क्या असर हो सकता है...

- शेयर मार्केट एनालिस्ट्स का मानना है कि इंटरेस्ट रेट्स में बड़ी कटौती होने से शेयर बाजार में तेजी आ सकती है।
- ज्यादा कटौती से अमेरिका की आर्थिक सेहत को लेकर भी चिंता पैदा हो सकती है, जिससे निवेशकों का हौसला सुस्त पड़ सकता है।
- कम कटौती (करीब 25bps) से मार्केट में निराशा हो सकती है, क्योंकि बाजार ब्याज दर में ज्यादा कटौती की उम्मीद लगा रहा है।
- इंटरेस्ट रेट्स में कटौती में देरी से जॉब मार्केट की रफ्तार धीमी हो सकती है। इसलिए सेंट्रल बैंक को सावधानी से काम करने की जरूरत होगी।

रिपोर्ट्स के मुताबिक फेड ऑफिसर्स ने संकेत दिया है कि अब इन्फ्लेशन के बजाय लेबर मार्केट के आंकड़े उनके डिसीजन में ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

महंगाई से लड़ने का शक्तिशाली टूल है पॉलिसी रेट

किसी भी सेंट्रल बैंक के पास पॉलिसी रेट के रूप में महंगाई से लड़ने का एक शक्तिशाली टूल है। जब महंगाई बहुत ज्यादा होती है, तो सेंट्रल बैंक पॉलिसी रेट बढ़ाकर इकोनॉमी में मनी फ्लो को कम करने की कोशिश करता है। पॉलिसी रेट ज्यादा होगी तो बैंकों को सेंट्रल बैंक से मिलने वाला कर्ज महंगा होगा। बदले में बैंक अपने ग्राहकों के लिए लोन महंगा कर देते हैं। इससे इकोनॉमी में मनी फ्लो कम होता है। मनी फ्लो कम होता है तो डिमांड में कमी आती है और महंगाई घट जाती है। इसी तरह जब इकोनॉमी बुरे दौर से गुजरती है तो रिकवरी के लिए मनी फ्लो बढ़ाने की जरूरत पड़ती है। ऐसे में सेंट्रल बैंक पॉलिसी रेट कम कर देता है। इससे बैंकों को सेंट्रल बैंक से मिलने वाला कर्ज सस्ता हो जाता है और ग्राहकों को भी सस्ती दर पर लोन मिलता है।

सेंसेक्स ने 83,773 और निफ्टी ने 25,611 का हाई बनाया: बाजार में 200 अंक से ज्यादा की तेजी

मुंबईः फेडरल रिजर्व के ब्याज दरों में कटौती के बाद शेयर बाजार ने आज यानी 19 सितंबर को लगातार दूसरे दिन ऑल टाइम हाई बनाया है। कारोबार के दौरान सेंसेक्स ने 83,773 और निफ्टी ने 25,611 का लेवल छुआ। अभी सेंसेक्स 200 अंक से ज्यादा की बढ़त के साथ 83,200 के स्तर पर कारोबार कर रहा है। निफ्टी में भी 50 अंक की तेजी है, ये 25,400 के स्तर पर कारोबार कर रहा है। आज एनर्जी एफएमसीजी और ऑटो शेयर्स में ज्यादा तेजी है।

फेडरल रिजर्व उम्मीद से ज्यादा ब्याज दरों में कटौती की

फेडरल रिजर्व ने चार साल में पहली बार ब्याज दरों को घटाया है। उम्मीद की जा रही थी फेडरल रिजर्व ब्याज दरों में 25 बेसिस पॉइंट की कटौती करेगा, लेकिन उसने उम्मीद से ज्यादा ब्याज दरों में 50 बेसिस पॉइंट की कटौती का ऐलान किया है। इससे बाजार को सपोर्ट मिला है।

- एशियाई बाजार में आज तेजी देखने

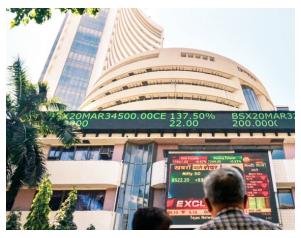

को मिल रही है। जापान के निक्केई में 2.49% और चीन के शंघाई कंपोजिट में 0.49% की तेजी है। वहीं हॉन्गकॉन्ग हैंगसेंग भी 1.27% ऊपर है।

- 18 सितंबर को अमेरिकी बाजार का डाओ जोंस 0.25% गिरकर 41,503 के स्तर पर बंद हुआ। वहीं नैस्डैक 0.31% गिरकर 17,573 पर बंद हुआ। वहीं एसएंडपी 500 0.29% गिरा है।
- एनएसई के डेटा के अनुसार, विदेशी निवेशकों ने 18 सितंबर को 10,500 करोड़ रुपए के शेयर बेचे। इस दौरान घरेलू निवेशकों ने भी 11,794 करोड़ रुपए के शेयर खरीदे।

सोने में गिरावट, चांदी महंगी हुई:सोना 73,202 रुपए पर आया, चांदी 869 रुपए बढ़कर 88,275 रुपए प्रति किलो पर पहुंची

सोने की कीमतों में आज यानी 19 सितंबर को मामूली गिरावट है। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन के अनुसार, गुरुवार को 10 ग्राम 24 कैरेट सोने का भाव 55 रुपए गिरकर 73,202 रुपए पर आ गया। इससे पहले इसके दाम 73,257 रुपए प्रति दस ग्राम थे। वहीं चांदी में आज बढ़त है। ये 869 रुपए बढ़कर 88,275 रुपए प्रति किलो पर पहुंच गई है। इससे पहले चांदी 87,406 रुपए पर थी। इस साल सोना मई में 74,222 प्रति 10 ग्राम के ऑल टाइम हाई पर पहुंच चुका है। वहीं, चांदी 29 मई को 94,280 रुपए प्रति किलो पर पहुंच गई थी। इस साल सोने में अब तक साढ़े 9 हजार रुपए से ज्यादा की तेजी आईबीजेए के अनुसार, इस साल अब तक सोने के दाम 9,850 रुपए बढ़ चुके हैं। 1 जनवरी को सोना 63,352 रुपए पर था, जो अब 73,202 रुपए प्रति 10 ग्राम पहुंच गया है। वहीं एक किलो चांदी के दाम 73,395 रुपए से बढ़कर 88,275 रुपए पर पहुंच गए हैं।

आज का इतिहास

1963 अमरीकी राष्ट्रपति जान एफ केनेडी ने सोवियत संघ के साथ चांद के लिए संयुक्त अभियान का प्रस्ताव किया.

1974 होंडरास में समुद्री तूफान से हजारों लोगों की मौत हो गयी.

1977 वियतनाम राष्ट्रसंघ का सदस्य बना.

1988 हैती में सेना में विद्रोह बड़े पैमाने पर भड़क उठा.

1989 भारतीय शांति सेना ने श्रीलंका में संघर्ष विराम की घोषणा की.

1993 जापान के सेंट्रल बैंक ने बैंक दर में भारी कटौती की.

1993 भारतीय उपग्रह आई आर एस पी 1 का श्री हरिकोटा में असफल परीक्षण.

1998 मलेशिया में पुलिस ने पूर्व वित्त मंत्री इब्राहिम को गिरफ्तार किया.

1999 बहुराष्ट्रीय सैनिक पूर्वी तिमोर पहुंचे और इंडोनेशिया के सैनिक वापस चले गए.

2004 एफ-81 एजुसैट ग्रह अंतरिक्ष में सफलता पूर्वक प्रक्षेपित.

दैनिक पंचांग

20 सितम्बर 2024 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

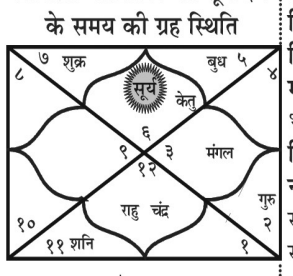

ग्रह	स्थिति
सूर्य	कन्या में
चंद्र	मीन में
मंगल	मिथुन में
बुध	सिंह में
गुरु	वृष में
शुक्र	तुला में
शनि	कुंभ में
राहु	मीन में
केतु	कन्या में

राहुकाल 10.30 से 12.00 बजे तक

लग्नारंभ समय	
कन्या	05.33 बजे से
तुला	07.48 बजे से
वृश्चिक	10.03 ब.से
धनु	12.19 बजे से
मकर	14.24 बजे से
कुंभ	16.10 बजे से
मीन	17.43 बजे से
मेष	19.14 बजे से
वृष	20.54 बजे से
मिथुन	22.52 बजे से
कर्क	01.05 बजे से
सिंह	03.21 बजे से

शुक्रवार 2024 वर्ष का 264 वां दिन **दिशाशूल** पश्चिम **ऋतु** शरद। **विक्रम संवत्** 2081 **शक संवत्** 1946 **मास** आश्विन (दक्षिण भारत में भाद्रपद) **पक्ष** कृष्ण **तिथि** तृतीया 21.16 बजे को समाप्त। **नक्षत्र** अश्विनी 02.43 बजे रात्र को समाप्त। **योग** ध्रुव 15.19 बजे को समाप्त। **करण** वणिज 10.56 बजे तदनन्तर विष्टि 21.16 बजे को समाप्त। **चन्द्रायु** 16.9 घण्टे **रवि क्रान्ति** उत्तर 00° 59' **सूर्य** दक्षिणायन **कलि अहर्गण** 1872108 **जूलियन दिन** 2460573.5 **कलियुग संवत्** 5125 **कल्पारंभ संवत्** 1972949123 **सृष्टि ग्रहारंभ संवत्** 1955885123 **वीरनिर्वाण संवत्** 2550 **हिजरी सन्** 1446 **महीना** रवि उलावल **तारीख** 16 **विशेष** तृतीया श्राद्ध।

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
चर	05.55 से	07.23 बजे तक	रोग	05.38 से	07.1 बजे तक
लाभ	07.23 से	08.51 बजे तक	काल	07.11 से	08.43 बजे तक
अमृत	08.51 से	10.19 बजे तक	लाभ	08.43 से	10.15 बजे तक
काल	10.19 से	11.47 बजे तक	उद्वेग	10.15 से	11.47 बजे तक
शुभ	11.47 से	01.15 बजे तक	शुभ	11.47 से	01.19 बजे तक
रोग	01.15 से	02.43 बजे तक	अमृत	01.19 से	02.51 बजे तक
उद्वेग	02.43 से	04.10 बजे तक	चर	02.51 से	04.23 बजे तक
चर	04.10 से	05.38 बजे तक	रोग	04.23 से	05.55 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अत: आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। Jagrutidaur.com, Bangalore

शब्द पहेली -6693

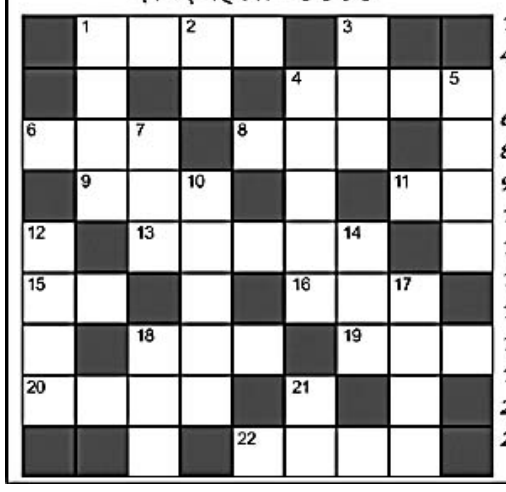

बाएँ से दाएँ

1. ईश्वरीय कृपा-4
4. कुंए पर पानी भरने का चबूतरा-4
6. दुर्बल का विलोम-3
8. सुनसान, नीरव-3
9. प्रेम प्रतिद्वंदी (उर्दू-3)
11. धोषवाक्य-2
13. चित्रपट, मायानगरी -3,2
15. सूर्य, भास्कर-2
16. उपनदी, कैनाल-3
18. व्यंग, परिहास-3
19. कौर, ग्रास-3
20. दफन करना-4
22. भूल, असावधानी-4

ऊपर से नीचे

1. अगुवा, रास्ता दिखाने वाला-4
2. सरुर, नशा, गरुर-2
3. चिंतन, विचारना-3
4. परजन भावना, गैरपन-5
5. भिड़ना, मुठभेड़-4
7. रेखा, लाईन-3
10. झाग बनना-5
12. सीमा, हद, बॉर्डर-4
14. शाखा, डाली-3
17. रिवाज, परंपरा-4
18. पाबंदी, रोक-3
21. स्वच्छ-2

शब्द पहेली -6692 का हल

ह	ज	र	त	■	क	र	त	ब
र	न	■	र	म	ल	■	था	ह
द	■	■	ल	■	म	त	■	ला
म	ह	न	■	म	ना	क	र	ना
■	■	र	■	ना	■	ग	■	■
ह	ब	मा	र	ना	■	र	स	द
स	■	ई	छ	■	र	■	■	ल
नि	त	■	बा	द	क	■	क	द
क	र	ब	ला	■	म	ल	म	ल

Jagrutidaur.com, Bangalore

अंकजाल - 6234

■	20	17	24	■	33	15	19	12	■
20		5				4		2	20
15	7		3		8		7		20
12		2		■		9		7	26
21	2		7		5	■	■	■	■
■	■	■	■	7		9		3	29
26	8		6		■		6		13
18		2		6		3		7	14
24	8		4		■		7		18
■	21	13	15	28	■	23	19	17	■

खाली स्थानों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर दाएँ से बाएँ एवं ऊपर से नीचे जोड़ना है जिसका सही उत्तर मटमैले रंग के खानों में दिया गया है.

अंकजाल 6233 का हल

■	31	16	23	■	21	17	14	15	■
16	7	3	6	■	4	5	5	4	18
18	9	2	7	■	5	8	7	5	25
17	8	2	7	■	3	4	2	6	15
28	7	9	3	7	2	■	■	■	■
■	■	■	■	5	7	2	5	7	26
22	8	9	2	3	■	6	2	5	13
20	6	3	4	7	■	8	8	5	21
24	8	6	4	6	■	8	7	3	18
■	22	18	10	28	■	24	22	20	■

Jagrutidaur.com, Bangalore

अष्टयोग-5178

		7		4		
4	28	2	38		31	7
1	5		6		2	3
	28	3	36		38	6
5		1	4			2
7	34		29	3	35	
2		6			7	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5177 का हल

3	2	4	6	7	5	1
4	28	2	38	2	31	7
1	5	7	6	4	2	3
6	38	5	36	3	28	6
5	3	6	4	1	7	2
7	32	3	29	5	37	5
2	5	1	3	6	7	4

Jagrutidaur.com, Bangalore

गणित पहेली -4538

60		40		45		32	=	23
	■		■		■		■	
30		6		45		1	=	50
	■		■		■		■	
30		3		70		2	=	40
	■		■		■		■	
15		10		5		5	=	30
=	■	=	■	=	■	=	■	=
15		39		15		35	=	3/4

Jagrutidaur.com, Bangalore

संकेत

खाली जगहों में आपको केवल (+), (-), (x) व (÷) के निशान लगाने हैं जिनका उत्तर (=) पूर्णतः मेल खाता हो.

गणित पहेली -4537

79	+	15	-	74	x	2	=	40
-	■	+	■	-	■	x	■	+
40	-	25	+	50	-	25	=	40
+	■	-	■	÷	■	-	■	+
5	x	10	÷	2	+	25	=	50
-	■	+	■	+	■	-	■	-
40	÷	4	+	40	+	20	=	70
=	■	=	■	=	■	=	■	=
4	+	34	+	52	-	5	=	60/85

शब्दजाल - 6225

म	अ	मु	न	सी	ब	आ	ज	ग	ल	य
रा	वि	ली	प्रे	व	जी	स	द	ज	कां	इ
चु	म	ल	बा	दी	छ	स	आ	ब	ख	क
इं	नौ	ब	न	बा	वा	स	ध	ल	श	क
डि	आ	ति	ल	ल	चा	न	क्रो	धी	झ	च
या	ल	द	र	रा	झ	ली	ती	ण	घ	र
द	ब	र्नि	ग	ट्रे	न	बै	स	बा	व	स
क	एं	ऊ	ई	द	ब	क	फ	चो	श	क
रा	म	ब	ल	रा	म	स	या	औ	र	आ
क	गॉ	ल	प	लि	जी	त	ऐ	म	प	द
क	ड	ल	प	या	क	र्त	व्य	ब	त	म

शब्द जाल में धर्मेंद्र की 10 फिल्मों शब्द ढूंढिए. शब्द ऊपर से नीचे एवं तिरछे हो सकते हैं.

चुनौती, नसीब, द बर्निंग ट्रेन, क्रोधी, चरस, राम बलराम, अली बाबा चालीस चोर, गजब, कर्तव्य, कयामत

शब्दजाल - 6224 का हल

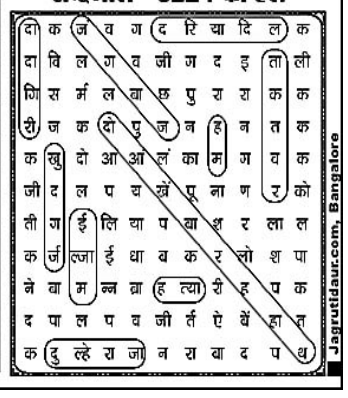

Jagrutidaur.com, Bangalore

वीना तिग्गा ने सीपीआई के विचार धारा से प्रभावित होकर सीपीआई की प्राथमिक सदस्यता ग्रहण किया

रांची : सीपीआई का लगातार कुनबा बढ़ता हुआ, राज्य कार्यालय के सभागार में रांची की जानी मानी समाजसेविका वीना तिग्गा ने सीपीआई के विचार धारा से प्रभावित होकर आज सीपीआई की प्राथमिक सदस्यता ग्रहण किया,राज्य कार्यकारणी सदस्य सह जिला सचिव अजय सिंह ने श्रीमती वीणा तिग्गा को लाल पट्टा ओढ़ाकर पार्टी की सदस्यता प्रदान किया,और कहा की वीना तिग्गा की के आने से पार्टी मजबूत होगी और रांची में वे महिलाएं शोषित वंचित मजदूरों ,बेबस और लाचार लोगो की आवाज बनेगी। कॉम वीना तिग्गा ने सदस्यता लेने के बाद कहा की हम जल जंगल जमीन के साथ वीर बिरसा मुंडा और जयपाल सिंह मुंडा के सपने को साकार करेंगे।इस अवसर पर पार्टी के पवन कुमार किरण कुमारी आरती देवी सहित पार्टी के कई साथी उपस्थित थे।

14 सितंबर से 30 सितंबर 2024 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया जा रहा है

कोयलांचल संवाद संवाददाता, रांची : राजभाषा पखवाड़ा 14 सितंबर से 30 सितंबर 2024 तक आर०डी०सी०आई०एस, रांची में मनाया जा रहा है। कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन श्री संदीप कुमार कर कार्यपालक निदेशक, आर०डी०सी०आई०एस, रांची के द्वारा किया गया, कार्यक्रम मे आर०डी०सी०आई०एस, रांची के सभी मुख्य महाप्रबंधक उपस्थित हुये एवं हिन्दी राजभाषा के महत्व को दैनिक कार्यो मे शामिल करने के लिए रुचि दिखाई | कार्यक्रम के औपचारिक उद्घाटन मे आर०डी०सी०आई०एस के रांची स्थित एवं प्लांट सेंटर के अधिकारी एवं कार्मिक ऑनलाइन माध्यम से शामिल हुये| आर०डी०सी०आई०एस,रांची मे राजभाषा पखवाड़े के दौरान विभिन कार्यक्रमों का संचालन किया जाएगा जिसके लिए कार्यपालक निदेशक, आर०डी०सी०आई०एस ने कार्मिको को बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने के लिए प्रेरित किया |

आंगनबाड़ी सेविका और सहायिकाओं का जोरदार प्रदर्शन , मानदेय बढ़ाने की मांग को लेकर सरकार को अल्टीमेटम

जमशेदपुर । आंगनबाडी सेविका और सहायिकाओं ने साकची आम बगान से जुलुस निकाल कर जिला उपायुक्त कार्यालय पर जोरदार प्रदर्शन किया । सभी अपनी सात सूत्री मांग को लेकर जिला के उपायुक्त के माध्यम से राज्य के मुख्यमंत्री को अपनी मांग पत्र दिया है । पुरे जिला से लगभग सैकड़ो आंगनबाडी सेविका और सहायिकाओं ने जिला उपायुक्त कार्यालय पर एक दिवसीय प्रदर्शन सह धरना दिया है । उनका साफ तौर पर कहना है कि सरकार उन्हें जो मानदेय प्रदान करती है वो काफ़ी कम है ,इनके अनुसार इन्हे सरकार द्वारा तय न्यूनतम मानदेय प्रदान किया जाना चाहिए ।उन्होंने कहा कि सरकार अगर उनकी मांगों को नहीं मानेगी तो आने वाले एक अक्टूबर से सभी आंगनबाडी सेविका और सहायिकाओं का अनिश्चित कालीन हड़ताल पर चली जाएंगी । सभी ने राज्य सरकार के पास कड़े शब्दों मे अपनी मांगो को रखा है, साथ ही हड़ताल की चेतावनी भी दी है।

कांग्रेसी कार्यकर्त्ता के निधन पर विधायक उमाशंकर अकेला पहुचे भगहर, संवेदना किए व्यक्त

अखिलेश पांडेय

चौपारण(हजारीबाग) : प्रखंड मुख्यालय से 26 किलोमीटर दूर भगहर निवासी सह भगहर कांग्रेस पंचायत के अध्यक्ष रामबली यादव उर्फ बली यादव का बीते रात लगभग 12:15 बजे निधन हो गया।सुबह सूचना मिलते ही मृतक के घर भगहर पहुंचे बरही विधायक उमाशंकर अकेला और गहरा दुख प्रकट किया और शोकाकुल परिवार से मिलकर सांत्वना दिया और हर संभव मदद का भरोसा दिया। कहा की रामबली यादव का जाना भगहर कांग्रेस के लिए अपूर्ण छति है।जिसकी भरपाई कोई नही कर सकता भगवान उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान दें।दुख प्रकट करने मे जीप सदस्य भाग-2 रविशंकर अकेला, कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष मंटु यादव,विधायक प्रतिनिधि रामफल सिंह,मनोज सिंह,यदुनंदन यादव,अभिमन्यु भगत,सुखदेव दांगी, मनोज यादव, अजय रॉय, प्रहलाद सिंह, नीरज सिंह, उमेश सिंह, नकुल यादव, बीरबल साव,दिनेश यादव,विकास यादव,बिनोद यादव सहित कई लोगों ने गहरा दुख प्रकट किया।

चतरा जिला अंतर्गत निरंजना (फल्गु) नदी के पुनर्युवन से सबंधित बैठक

अखिलेश पांडेय

चतराः जिला मुख्यालय स्थित समाहरणालय सभा कक्ष में उपायुक्त रमेश घोलप की अध्यक्षता में निरंजना (फल्गु) नदी के पुनर्युवन के संबंध में नदी के बेसिन क्षेत्र में अवस्थित विभिन्न तालाबों एवं जल स्त्रोंतो का जीर्णोद्धार एवं वृहत पैमाने पर वृक्षारोपन हेतु डी०पी०आर० का अंतिम रूप देने हेतु एक आवश्यक बैठक की गई। इस बैठक में उपस्थितआलोक कुमार श्रीवास्तव, जी डब्लू एम एक्सपर्ट दिल्ली द्वारा निरंजना (फल्गु) नदी के पुनर्युवन से संबंधित तैयार विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन (डीपीआर) की जानकारी पॉवर ऑफ प्रजेंटेशन के माध्यम से दी गई। इस क्रम में निरंजना (फल्गु) नदी से जुड़े हुए प्रभावित क्षेत्रों में वनरोपण एवं इसके तटवर्ती क्षेत्रों में अवस्थित सभी स्तर के जल स्त्रोंतो यथा पुराने तालाब, आहर, कच्चा नहर एवं अन्य का जीर्णोद्धार से संबंधित विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत कर जानकारी दी गई। इस क्रम में योजना कार्य का पूर्ण परिचय, महत्व, क्रियान्वयन एवं इसके कारण होने वाले लाभ की जानकारी विस्तृत रूप से दी गई। निरंजना (फल्गु) नदी के उद्गम स्थल से लेकर बिहार सीमाना तक निरंजना (फल्गु) नदी का पुनर्युवन एवं संरक्षण का विस्तृत डी०पी०आर० की भी चर्चा की गई। उपर्युक्त बिंदुओं पर समीक्षोपरांत तत्काल प्राक्कलन को स्थानीय सुझाव एवं वास्तविक कार्यों एवं प्राक्कलन को भविष्य में शामिल किये जाने की शर्त पर सर्वसम्मति से इसे पारित करने का निर्णय लिया गया। इस बैठक में उप विकास आयुक्त पवन कुमार मंडल, वन प्रमंडल पदाधिकारी उत्तरी राहुल मीना, कृषि पदाधिकारी, लघु सिंचाई के कार्यपालक अभियंता मोहन चंद्र गुप्ता, समेत अन्य संबंधित उपस्थित थे।

रांची प्रेस क्लब के प्रतिनिधिमंडल ने की राजभवन में राज्यपाल से मुलाक़ात

पत्रकारहित में राज्यपाल को सौंपा छः सूत्री मांगपत्र, प्रेस क्लब आने का दिया न्योता

कोयलांचल संवाद संवाददाता, रांची : रांची प्रेस क्लब के प्रतिनिधिमंडल ने प्रेस क्लब के अध्यक्ष सुरेन्द्र लाल सोरेन के नेतृत्व में राजभवन में राज्यपाल से मुलाक़ात कर उन्हें छः सूत्री मांगपत्र सौंपा है। राज्यपाल को परेज़ क्लब द्वारा अंगवस्त्र और पौधा दे कर अभिनन्दन किया गया। राज्यपाल को दिए गए ज्ञापन में कहा गया है कि झारखण्ड के पत्रकार कई चुनौतियों के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहे हैं। राज्य बनने के लगभग 24 वर्षों बाद भी अबतक राज्य के पत्रकारों के हितों की सुरक्षा के लिए राज्य सरकार द्वारा आवश्यक कदम नहीं उठाए गए हैं, जबकि दूसरे राज्यों ने इस दिशा में पर्याप्त उदारता दिखाई है। राजधानी रांची समेत पूर राज्य के पत्रकारों को कई चुनौतियों के साथ काम करना पड़ रहा है। राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर पत्रकार पेंशन योजना, पत्रकार स्वास्थ्य बीमा योजना की घोषणा तो की गयी, लेकिन उसे अब तक अमली जामा नहीं पहनाया जा सका है। प्रतिनिधिमंडल ने राज्यपाल का जिन समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट कराया है उनमें पत्रकारों के लिए झारखण्ड में स्वास्थ्य और जीवन बीमा की योजना यथाशीघ्र लागू करवाने। पत्रकारों को आवास सुविधा हेतु जमीन चयन कर कॉलोनी डेवलप करवाने।

पत्रकार पेंशन योजना को सरलीकृत करवाने, ताकि अधिक से अधिक पत्रकार साथी लाभान्वित हो सकें। यह भी कहा गया है कि झारखंड सरकार द्वारा पत्रकारों को मेडिक्लेम हेतु आवेदन भरवाए गए थे और उनसे आंशिक पैसे भी ऑनलाइन ले लिए गए थे, लेकिन दो सालों के बाद भी मेडिक्लेम सुविधा का लाभ पत्रकारों को नहीं मिला, इसे लागू करवाये जाने। पत्रकारों को संकट में आर्थिक मदद पहुंचाने हेतु रांची प्रेस क्लब के कॉर्पस फंड में राजभवन की ओर से आर्थिक सहयोग प्रदान करने और अन्य राज्यों की तरह झारखंड राज्य में भी पत्रकार सुरक्षा क़ानून लागू करने हेतु सरकार को निर्देशित करने की मांगें प्रमुख रूप से शामिल थी। साथ ही प्रतिनिधिमंडल ने राज्यपाल को प्रेस क्लब आने का न्योता भी दिया जिसे राज्यपाल ने सहर्ष स्वीकार किया है। साथ ही

राज्यपाल ने प्रतिनिधिमंडल की बातें विस्तार से सुनने के बाद समस्याओं के निराकरण हेतु हर सम्भव मदद का उन्हें भरोसा दिया। प्रतिनिधिमंडल में द राँची प्रेस क्लब के अध्यक्ष सुरेन्द्र लाल सोरेन, सचिव अमरकान्त, कार्यकारिणी सदस्य संजय सुमन, आरजे अरविंद और चन्दन भट्टाचार्य प्रमुख रूप से शामिल थे।

माई भारत पोर्टल के नॉलेज इंस्टीट्यूशन्स में शीघ्र ऑनबोर्ड होगा राँची विश्वविद्यालय- डॉ अजीत कुमार सिन्हा

कोयलांचल संवाद संवाददाता, रांची : राँची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अजीत कुमार सिन्हा की अध्यक्षता में माई भारत पोर्टल के पंजीकरण को लेकर ऑनलाइन मीटिंग कुलपति सभागार में आयोजित की गई जिसमें पोर्टल के तकनीकी विशेषज्ञ क्रमशः देवेंद्र व्यास (सहायक निदेशक, नेहरू युवा केन्द्र संगठन) एवं नीरज कुमार यादव ने अपना प्रस्तुति के माध्यम से विस्तृत जानकारी दी।

तकनीकी विशेषज्ञों ने बताया कि कैसे प्रत्येक नॉलेज इंस्टिट्यूशन को माई भारत पोर्टल में ऑनबोर्ड करना है इसके लिए विश्वविद्यालय स्तर पर एक नोडल पदाधिकारी बनाना अनिवार्य है एवं विश्वविद्यालय के नोडल पदाधिकारी के माध्यम से प्रत्येक महाविद्यालय के नोडल पदाधिकारी के बीच समन्वय स्थापित करना होगा एवं प्रत्येक संस्थान को माई भारत पोर्टल से जोड़ना होगा। ज्ञात है कि भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा माई भारत पोर्टल के माध्यम से देश के प्रत्येक युवा जिसका उम्र 15 से29 वर्ष को पंजीकृत करना है।

ऑनलाइन मीटिंग में तकनीकी विशेषज्ञों ने बताया कि माई भारत पोर्टल युवाओं के लिए काफी फायदेमंद है एवं इस पोर्टल के माध्यम से जो युवा ऑनबोर्ड होगा उसे ईएलपी (अनुभवजन्य शिक्षण कार्यक्रम), सी वी बिल्डर, वालंटियर फ़ॉर भारत, मेगा इवेंट्स एवं पब्लिक प्रोफाइल का लाभ मिलेगा।

राँची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अजीत कुमार सिन्हा ने मीटिंग में बताया कि राँची विश्वविद्यालय शीघ्र माई भारत पोर्टल में ऑनबोर्ड कर दिया जाएगा एवं राँची विश्वविद्यालय के लिए डॉ ज्ञानेन्द्र कुमार सिंह को नोडल पदाधिकारी बनाया गया है। उन्होंने कहा कि राँची विश्वविद्यालय के सभी संस्थान को भी जल्दी ही ऑनबोर्ड किया जाएगा। आज के ऑनलाइन मीटिंग में नेहरू युवा केन्द्र संगठन के राज्य निदेशक श्रीमती हनी सिन्हा, उप निदेशक सर्वेन्द्र प्रताप सिंह, आर यू के कुलसचिव डॉ बिनोद नारायण, डीन विज्ञान डॉ अरुण कुमार, डीआर डॉ प्रीतम कुमार, डॉ बी के सिन्हा, डॉ सुनील कुमार सिंह, डॉ ज्ञानेंद्र कुमार सिंह, एन एस एस कार्यक्रम समन्वयक डॉ ब्रजेश कुमार आदि उपस्थित रहें।

रामगढ़ के सिटी हॉस्पिटल में ब्लड बैंक का हुआ उद्घाटन,दर्जनों लोगों ने की रक्तदान

रामगढ़(मोहसीन आलम):रामगढ़ के गोला रोड़ में स्थित सिटी हॉस्पिटल के दूसरे तल्ला पर बृहस्पतिवार को ब्लड बैंक खोला गया,जिसका विधिवत उद्घाटन बतौर मुख्य अतिथि खिजरी विधायक राजेश कच्छप व रामगढ़ की पूर्व विधायक ममता देवी,सिटी हॉस्पिटल के डायरेक्ट डॉक्टर जीतेन्द्र कुमार गुप्ता व ब्लड बैंक के प्रोपराइटर रिजवान अंसारी वअन्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। इस दौरान मुख्य अतिथि विधायक राजेश कच्छप ने ब्लड बैंक के संचालकों को बधाई व शुभकामनाएं देते हुए कहा कि ब्लड बैंक वक्त की जरूरत बन गई है, यह ब्लड बैंक क्षेत्र के लिए वरदान साबित होगी,जो आपातकालीन स्थिति में लोगों की जान बचाने का काम करेगा,वहीं पूर्व विधायक ममता देवी ने बताया कि जिले में पहले से दो ब्लड बैंक स्थापित है तीसरा इस तरह का बड़ा ब्लड बैंक खुल जाने से क्षेत्र के लोगों क़ो हो रहे ब्लड की कमी क़ो दूर किया जा सकता हैं,डायलिसिस मरीजो थैलेसिमीया से पीड़ित मरीज क़ो अब जिले से बाहर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी,जरुरतमंद मरीज के रिश्तेदार रिम्स का चक्कर काटते काटते थक जाते थे,अब यह समस्या दूर होगी,वहीं उन्होंने प्रशंसा जताई,वहीं ब्लड बैंक के प्रोपराइटर रिजवान अंसारी ने बताया कि समय की मांग और जरूरत के साथ मरीजों क़ो राहत पहुंचाने के उद्देश्य लगातार कई वर्षों से प्रयासरत के बाद क्षेत्र के लोगों की जरूरतों क़ो देखते हुए सेवा भाव से ब्लड बैंक का खोला गया है,जहां आधुनिक सुविधाओं से युक्त इस ब्लड बैंक में उन्नत तकनीक और ब्लड कंपोनेंटर्स जैसे की प्लेट लेट्स,प्लाज्मा,लिकोडीपलेटेड पैकड़ सेल की सुविधा जरूरतमंद लोगों को आसानी से मिलेगी,वही डॉक्टर जितेंद्र ने अस्पताल की सुविधाओं को बताया, ब्लड बैंक उद्घाटन के अवसर पर दर्जनों लोगों ने उत्साह व उमंग के साथ रक्तदान किया,इस अवसर पर मुख्य रूप से डॉक्टर विक्की,ब्लड बैंक के डायरेक्टर तसव्वर कशिश,फ्लोरेंस कॉलेज इरबा के डायरेक्टर डॉक्टर शाहीन कौशर,सचिव जन्नत कौसर,डॉक्टर नाज़नीन कौशर,विधायक प्रतिनिधि सफिउल्लाह अंसारी,अमीर हमजाअंसारी,हांजी जसीमुद्दीनअंसारी,ग्राम प्रधान बालक पाहन,हाजी सलाउद्दीन अंसारी,हाजी रफीउद्दीन अंसारी,अब्दुल कयूम अंसारी, हुमायूं अंसारी,पूजा कच्छप,जाबिर अंसारी,मजीबूल अंसारी सहित अनेकों गणमान्य लोग उपस्थित थे।

तीन दिवसीय झारखंड माइनिंग और इन्फ्रास्ट्रक्चर शो का शुभारंभ आज से, माइनिंग और इन्फ्रास्ट्रक्चर उद्योग को मिलेगी नई दिशा

प्रभात तारा मैदान धुर्वा में आयोजित होगा शो में शामिल होंगी कई कंपनियां

कोयलांचल संवाद संवाददाता, रांची : धुर्वा स्थित प्रभात तारा मैदान में तीन दिवसीय झारखंड माइनिंग और इन्फ्रास्ट्रक्चर शो 2024 का शुभारंभ 20 सितंबर शुक्रवार को होगा। शो का उद्घाटन दोपहर तीन बजे मुख्य अतिथि केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ करेंगे। वहीं, विशिष्ठ अतिथि के रूप में झारखंड सरकार के उद्योग विभाग के मंत्री सत्यानंद भोक्ता, ग्रामीण विकास विभाग के मंत्री इरफान अंसारी, राज्यसभा सांसद डॉ महुआ मांझी मौजूद रहेंगी। इसके अलावा माइनिंग और इन्फ्रास्ट्रक्चर शो में विशेष अतिथि के रूप में सीसीएल के सीएमडी निलेंदु कुमार सिंह, मेकॉन के सीएमडी संजय कुमार वर्मा और राज्य युवा आयोग के अध्यक्ष कुमार गौरव भी उपस्थित रहेंगे। इस शो को आयोजन ओलपिंया एक्जीबिशन प्राइवेट लिमिटेड के तत्वावधान में किया जा रहा है। ओलपिंया एक्जीबिशन के सीओ एसके त्रिपाठी, प्रोजेक्ट डायरेक्टर लोकेश चौधरी और संयोजक सत्य प्रकाश पांडेय ने संयुक्त रूप से बताया कि इस शो में माइनिंग और इन्फ्रास्ट्रक्चर से जुड़ी 100 से अधिक सरकारी और निजी कंपनियां शामिल हो रही है।। इस शो में प्रवेश निःशुल्क है। शो प्रतिदिन सुबह 10 बजे से शाम छह बजे तक चलेगा। आम जनता भी शो में शामिल हो सकते हैं।

तीन दिवसीय माइनिंग और इन्फ्रास्ट्रक्चर शो में अत्याधुनिक उपकरण, आधुनिक खनन तकनीकें, इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास के समाधान और उद्योग को आगे बढ़ाने वाले नवाचार प्रदर्शित किए जाएंगे। आगंतुक भारी वाहन जैसे जेसीबी , निर्माण उपकरण और अत्याधुनिक खनन उपकरणों के लाइव डेमोंस्ट्रेशन देख सकेंगे। इसके अलावा कई ज्ञान-विनिमय सत्र, पैनल चर्चा, और व्यापार नेटवर्किंग के अवसर भी उपलब्ध होंगे

ये कंपनियां हो रही शामिल

इस शो में जेसीबी इंडिया, टीवीएस टायर्स, हीरालाल इंडस्ट्रीज टेक्नोलॉजी प्राइवेट लिमिटेड, हुंडई कंस्ट्रक्शन इक्यूवमेंट, एजेक्स इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड, वीनस टेक्नो इक्यूवमेंट प्राइवेट लिमिटेड, टेकफैब (इंडिया) इंडस्ट्रीज लिमिटेड, पीआरडी रिंग्स प्राइवेट लिमिटेड, मैक्समैच इक्यूवमेंट प्राइवेट लिमिटेड, प्रेमसंस मोटर उद्योग, शैल ल्यूब्रिकेंट समेत अन्य कंपनियां शामिल हो रही है। इसके अलावा सरकारी कंपनियों में मेकॉन लिमिटेड, कोल इंडिया, सीपीएमपीडीआई, भारत पेट्रोलियम समेत निर्माण कंपनियां, भारी वाहन निर्माता, खनन कंपनियां, उपकरण निर्माता, लुब्रिकेंट सप्लायर, और स्पेयर पार्ट्स निर्माता भी इस आयोजन का हिस्सा होंगे।

सीसीएल में प्रशिक्षुओं के लिए इंटरैक्टिव सत्र आयोजित

कोयलांचल संवाद संवाददाता, रांची : सीसीएल में मानव संसाधन विकास विभाग सीसीएल में प्रशिक्षण ले रहे प्रशिक्षुओं के लिए एक इंटरैक्टिव सत्र का आयोजन किया। संयुक्त सचिव, एमएसडीई श्री शैल माल्गे इस अवसर पर उपस्थित थे। उनके साथ श्री योगेन्द्र कुमार, सहायक निदेशक, एमएसडीई, नई दिल्ली भी थे। श्री पी.के.मडावी, उप निदेशक निदेशक, एसडीई, भी इंटरैक्टिव सत्र के दौरान उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन उप निदेशक श्री मनीष रंजन, प्रबंधक (ईएंडएम), एचआरडी ने किया। जिन्होंने सीसीएल में प्रशिक्षुता योजना के कार्यान्वयन पर प्रस्तुति दी। श्री आर.के.पांडेय, महाप्रबंधक (एचआरडी) ने सभी गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागी प्रशिक्षुओं का स्वागत किया। सभी गणमान्य व्यक्तियों ने गतिविधियों की विस्तार से समीक्षा की, प्रशिक्षुओं के साथ बातचीत की और उन्हें अपने संबोधन से उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रेरित किया। गणमान्य व्यक्तियों ने तीस निवर्तमान प्रशिक्षुओं को पूरा होने का प्रमाण पत्र वितरित किया। श्री विकास सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक, मानव संसाधन विकास ने धन्यवाद ज्ञापक किया। सत्र में सीसीएल के साठ प्रशिक्षुओं ने भाग लिया।

प्रखंड मैदान चौपारण में निशुल्क एकदिवसीय स्वास्थ्य मेला का हुआ आयोजन

अखिलेश पांडेय

चौपारण(हजारीबाग):महालक्खी चैरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक सह भाजपा नेता अविनाश आर्या चंद्रवंशी द्वारा 19 सितंबर गुरुवार को प्रखंड मैदान चौपारण में बरही अनुमंडल स्तरीय स्वास्थ्य मेला का शुभारम्भ किया गया । इस संदर्भ में अविनाश आर्या ने जानकारी देते हुए बताया कि इस स्वास्थ्य मेला में झारखंड के नामचीन अस्पतालों के प्रमुख चिकित्सक उपस्थित रहे। इसमें मेडिका हॉस्पिटल राँची, मेदांता हॉस्पिटल, राज हॉस्पिटल, कुरेसटा हॉस्पिटल, पारस हॉस्पिटल, एच ई सी हॉस्पिटल, गंतव्य फ़ाउंडेशन आई हॉस्पिटल, दृष्टि आई हॉस्पिटल, किरन आई हॉस्पिटल, हेल्थ प्वाइंट हॉस्पिटल सहित कई नामचीन अस्पताल के चिकित्सक उपस्थित थे। साथ ही बरही अनुमंडल अस्पताल एवं चौपारण सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सक भी शामिल रहे। अविनाश आर्या ने कहा कि आज चौपारण प्रखंड में स्वास्थ्य मेला का आयोजन किया गया है। संभव है कि कल आपके गांव या शहर में एक से दो महीने में स्वास्थ्य मेला का आयोजन हो। साथ ही जो लोग इस मेले का लाभ नहीं ले पाए हैं, उनके घर तक विशेष चिकित्सकों की टीम जाएगी और उनका इलाज करेगी। चौपारण स्वास्थ्य मेला में जितने भी अस्पतालों के स्टॉल लगाए गए थे, उन सभी में महालक्खी चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा इलाज कराने जाने पर आपको छूट दी जाएगी। मेले में मानसिक स्वास्थ्य, शिशु स्वास्थ्य, टीकाकरण, दंत चिकित्सा, किशोर स्वास्थ्य, अंधापन एवं नाक, कान, गला, मलेरिया, फाइलेरिया, आयुष उपचार आदि के स्टॉल लगाए गए थे। जांच कराने के लिए सैकड़ों लोग मेले में पहुंचे और विभिन्न बीमारियों की जांच कराई। कार्यक्रम को सफल बनाने में उपस्थित सभी चिकित्सकों की सराहनीय भूमिका रही। इस एक दिवसीय स्वास्थ्य मेला में अनुमंडल स्तर पर सभी प्रकार के मरीजों का निशुल्क इलाज, जांच एवं दवा वितरण हुआ, जिसमें चौपारण, बरही, पदमा, चंदवारा, चतरा एवं आसपास के क्षेत्रों के मरीज स्वास्थ्य लाभ उठा रहे थे। मौके पर बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

वर्ष 2024 का श्रेष्ठ हिन्दी शिक्षक सम्मान डॉ अरुण सज्जन को 22सितंबर को दिया जायेगा

जमशेदपुर। सिंहभूम जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन/तुलसी भवन की कार्यकारिणी ने वर्ष 2024 के 'श्रेष्ठ हिन्दी शिक्षक सम्मान' हेतु लोयोला हाई स्कूल के हिन्दी के पूर्व अध्यापक डॉ अरुण सज्जन का नाम प्रस्तावित किया है। यह सम्मान 22 सितम्बर को 'हिन्दी शिक्षक कार्यशाला में प्रदान किया जाएगा। सम्मान में अंगवस्त्र, श्रीफल, सम्मान पत्र, स्मृति चिन्ह सहित 11,000 का चेक भी प्रदान किया जाएगा। यह जानकारी तुलसी भवन के मानद महासचिव डॉ प्रसेंनजीत तिवारी ने एक प्रेस वयान जारी कर दी। उन्होंने बताया कि सम्प्रति अरुण सज्जन सेवानिवृत्त सहायक प्राध्यापक सह वरिष्ठ साहित्यकार हैं। वो अपनी सेवा विजिटिंग हिन्दी प्रोफेसर के रुप में एक्स.आइ .टी.इ. गम्हरिया, झारखण्ड में प्रदान कर रहे हैं। उनकी अब तक 24 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें दो पुस्तकें क्रमशः भगवती चरण वर्मा की काव्य चेतना तथा रामचरितमानस-उत्तरकाण्ड एक समीक्षा, राँची विश्वविद्यालय राँची के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग में सूचीबद्ध हैं। रामवृक्ष बेनीपुरी साहित्य अलंकरण सम्मान, बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन पटना, सेवक साहित्य सम्मान वाराणसी, तुलसी साहित्य अलंकरण सम्मान, सिंहभूम जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, जमशेदपुर और विश्व हिन्दी परिषद विशिष्ठ सम्मान सहित दर्जनों सम्मान से आपको सम्मानित किया जा चुका है। उन्होंने "मानस में स्त्री पात्र "आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री का साहित्य सौंदर्य" तथा "भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के भूले-बिसरे सेनानी" जैसे महत्वपूर्ण पुस्तकें संपादित की है तथा "मगध का पाषाण पुरुष दशरथ मांझी " कथा काव्य की रचना की है। उनकी शोध, आलेख और कविताएं देश के महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। वर्तमान मे उनका निवास जमशेदपुर में ही है।

चोरों ने शातिराना अंदाज में फ्लिपकार्ट स्टोर में चोरी की घटना को दिया अंजाम

अखिलेश पांडेय

इटखोरी (चतरा) बीती रात चोरों ने हजारीबाग इटखोरी मार्ग में साईं होटल के समीप फ्लिपकार्ट के स्टोर रूम में बीते बुधवार को बड़े ही शातिराना अंदाज में चोरी की वारदात को अंजाम दिया। घटनास्थल पर चोरों ने स्टोर रूम का शटर काटकर लगभग चार लाख रुपए नगद और स्टोर रूम में रखें पार्सलों से कीमती सामानों पर अपना हाथ साफ कर दिया। भुक्तभोगी स्टोर रूम प्रबंधक ने स्थानीय थाने में प्राथमिकी दर्ज कराकर इटखोरी थाना पुलिस से गुहार लगाया है। इटखोरी थाना पुलिस ने मामले को दर्ज कर अनुसंधान का कार्य प्रारंभ कर दिया है। यह घटना सूत्रों की माने तो बीते बुधवार रात करीब 2 से 2.30 बजे के बीच की बताई जा रही है। सीसीटीवी फुटेज के आधार पर एक चौंकाने वाला मामला प्रकाश में आया है फुटेज में दो हथियारबंद चोरों को स्पष्ट देखा जा सकता है। फ्लिपकार्ट स्टोर के प्रबंधक की माने तो चोरों ने तालों को काटकर स्टोर के अंदर प्रवेश किया है। फ्लिपकार्ट स्टोर रूम के इंचार्ज ने बताया कि हम सब बगल वाले कमरे में सोए हुए थे 2:30 के बीच दो लुटेरे हाथ में पिस्टल लेकर ऑफिस में घुसकर गोदरेज का ताला तोड़ वहां से पैसा निकल फरार हो गये और कई मोबाइल फोन भी अपने लेकर फरार हुए। थाने में दिए गए आवेदन के आधार पर मामला दर्ज कर अनुसंधान कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। इस मामले का अनुसंधान प्रभार एस आई पंकज कुमार सिंह को दिया गया है।

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक किशोर कुमार पाण्डेय द्वारा डी. बी. कॉर्प लिमिटेड, प्लॉट नं. 535 एवं 1272, लालगुटुआ, रांची से मुद्रित एवं फर्स्ट फ्लोर, 105, नायल कॉम्प्लेक्स, कांटाटोली, रांची-834001 (झारखण्ड) से प्रकाशित, आर.एन.आई. नं. JHAHIN/50549 फोन नं. 8084372014, Email : koylanchalsamvad@gmai.com & koylanchal.hindi@gmail.com *समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट तहत जिम्मदार।